ॐ

श्रीवीतरागाय नमः।

कविश्री कमलनयनजी विरचित—

# श्री ढाईद्वीप पूजनविधान

## [ भाषा ]

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय,

कापड़ियाभवन—सूरत।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, गांधीचौक—सूरतमे
मूलचन्द किसनदास कापडियाने मुद्रित किया।

प्रथमावृत्ति ] वीर सं० २४७० [ प्रति ५००

मूल्य रु० २—०—०


मुद्रक
किसनदास
जैन विजय प्रेस

# प्रस्तावना।

बड़े२ पूजन विधानोंमें कोई संस्कृत विधान तो अभीतक नहीं छपे हैं लेकिन श्री लालजी कृत समोसरण विधान व तेरहद्वीप पूजन भाषा तथा सिद्धचक्रविधान भाषा छपकर प्रकट होगये है जिससे इन तीनों पूजायें करनेमें बड़ा सुभीता होगया है किन्तु ढाईद्वीप पूजन विधान, तीनलोक पूजन विधान, इन्द्रध्वज विधान आदि अभीतक नहीं छपे थे जिनकी मांग वारवार आया करती थी। अतः हमने इनमेंसे सबसे प्रथम श्री ढाईद्वीप पूजन विधान छपानेका संकल्प कर प्रयास किया तो मालूम हुआ कि यह पूजा संस्कृत व भाषा दोनोंमें है, इनमेंसे हमने भाषा पूजा प्रकट करनेका निश्चय किया, क्योंकि भाषा पूजाका भाव समझनेमें सर्वसाधारणके लिये भाषा पूजा बहुत उपयोगी होती है। यह हस्तलिखित ढाईद्वीप पूजनविधान ( भाषा ) इन्दौरके दि० जैन मंदिरके शास्त्रभंडारसे श्रीमान् साहित्यरत्न पं० नाथूलालजी जैन शास्त्री, न्यायतीर्थने परिश्रम करके लिखवाकर हमें भेजी तथा मिलान करनेको हस्तलिखित शास्त्र भी भिजवाया जिसके लिये हम आपके अतीव आभारी हैं।

## कवि परिचय।

इस पूजन विधानके रचयिता कविश्री कमलनयनजी हैं ऐसा इसकी अंतः प्रशस्तिसे मालूम होता है। इन कविश्रीने पंचकल्याणक विधान ( भाषा ) भी बनाया है जो प्रकट होचुका है। लेकिन उसमें आपका कोई परिचय नहीं है तथा आपने और कौन २ से विधान बनाये थे यह भी हमारे जाननेमें नहीं आया तथा आपका विशेष

परिचय भी मालूम नहीं हो सका। तौभी इस पूजन विधानकी प्रशस्तिमें आपका संक्षिप्त परिचय मिल जाता है। उसमें लिखा है—

विक्रम सं० १७६१ कार्तिक सुदी ५ को इस पूजनविधानकी रचनाका प्रारम्भ कर उसे चैत्र वदी १३ को कविश्रीने पूर्ण किया था। इसमें कुल श्लोक संख्या २७७० हैं।

इटावा परगनेमें मैनपुरी नामक नगरी है जिसमें चौहानवंशमें महान विख्यात श्री दलेलसिंह नृप राज्य करते थे जिनके राज्यमें सब प्रजा सुखी थी, उसमें बुंदेला वणिक जातिके श्री नंदलाल आदि साधर्मी भाइयोंका निवास था. जिनमें एक हरिचंदराय वैद्यक कलामें प्रवीण थे. उनके ज्येष्ठ, छत्रपति और मैं (कमलनयन) इन तीन पुत्रोंमेंसे लघुपुत्र मैं, देश विहारकी इच्छासे एक समय प्रयाग (इलाहाबाद) गया तो इलाहाबादमें बहुतसे अग्रवाल दि० जैन भाई मिले, उनमें एक साधर्मी भाई गोविंदचंद्रजीके सुत हीरामलजीके पुत्र श्री लालजी हमको मिले, जिनके साथ हमें पूर्व योगसे बहुत प्रीति थी (इन्होंने समवसरण विधान व तेरह पूजन विधान रचना की थी।)

अनेक प्रकारके वार्तालापमें श्री लालजीने मुझे कहा कि ढाई-द्वीप पूजन विधान भाषामें अभी तक नहीं बना है अत. इसे आप सुगम भाषामें अवश्य बनाइये। तब मैंने कहा कि भाई, यह कार्य तो बहुत दुर्द्धर (कठिन) है, कैसे होगा? तब आपने कहाकि जिन श्रुत-आज्ञा लेकर आप यह कार्य करें। फिर मंदिरमें जाकर जिन भगवानके आगे हां और नाकी चिट्ठी लिखकर रखी और जिन चरणमें नमस्कार कर पंच णमोकार मंत्र पढ़कर एक चिट्ठी उठाई तो उसमें हां आई

इसलिये मैंने जिनभक्तिके प्रसादसे अल्पमतिसे यह विधान बनाया है। इसमें जो कुछ भी भूलचूक अक्षर मात्रा वरणमें होगई हो तो उसके लिये विद्वज्जन मेरी हांसी न करें, लेकिन उसे शोधन करें आदि।

## निवेदन।

इन कविश्रीका इससे अधिक परिचय कोई भाई हमें लिख भेजेंगे तो उसे द्वितीयावृत्तिमें प्रकट कर सकेंगे। इस पूजन विधानमें भाषा, भाव, राग आदि अतीव सुंदर व भावपूर्ण हैं, लेकिन रचनामें कई जगह अशुद्धियां मालूम होती है, इसका कारण यह है कि प्रतिलिपि करनेवाले प्रायः भाषा और विषयके विशेषज्ञ नहीं होते, और वे प्रमादवश यद्वा तद्वा प्रतिलिपि करते रहते है। हमारे पास जो प्रति आई थी वह भी बहुत अशुद्ध थी, जिसका शुद्ध कर पाना सहज नहीं था। इस पूजनकी रचनाशैली इतनी सुगम सुंदर और मनमोहक है कि इसे विना पूजन किये भी स्वाध्यायके रूपमें भी पढनेमें बड़ा आनंद आवेगा। विद्वान बंधु इस विधानमे जो कुछ अशुद्धियां रह गई हों वे नोट करके हमें लिख भेजेंगे तो उनके हम आभारी होंगे। महायुद्धके कारण कागजके दुष्काल व सरकारी पेपर कंट्रोल (नियंत्रण) होनेपर भी हमने इसे चार पांच माहसे कागजका प्रबंध करके छापना प्रारम्भ किया था जिससे इसे प्रकट कर सके हैं। आशा है जैन समाजमें, इसका यथेष्ट प्रचार होजायगा।

सूरत
विक्रम सं० २००१
आश्विन वदी २
ता० ४-९-४४.

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
—प्रकाशक।

# पूजन-सूची ।

पश्चिम

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

पं० कमलनयनजी कृत-

# श्री अढाई-द्वीप पूजन विधान।

## [ भाषा ]

दोहा।

पंच परमपदकौं नमौं, नमौं शारदा माय।
गुरु गौतमके चरन युग, वंदौं मन वच काय॥ १॥
सार्ध दीप द्वय पाठकी, भाषा सुगम सुढार।
करौं यथारथ संस्कृत, मति माफिक सुखकार॥ २॥
वृषभनाथ जिन आदि दे, महावीर पर्य्यंत।
चौवीसौं जिनकौं नमौं, मंगल करत महंत॥ ३॥
अष्टोतर सत नाम करि, थुति करिहौं जिन तोहि।
दीन जांनि भव-समुदतैं, पार करौ प्रभु मोहि॥ ४॥
नाम कहे जे संस्कृत, पाठ मांहि बिच जोय।
तेई राखे हिय सही, भक्ति भाव युत होइ॥ ५॥

अथ अष्टोत्तर शत नाम लिख्यते।

छद अडिल्ल।

श्री सर्वज्ञ सर्व भाषामय जानिये,
सर्व देव देवाधि स्वयंभू प्रमानिये।
है जु सर्व उपदेशक सर्व प्रभुस्तथा,
सर्व कृपाकर सर्व धर्ममय प्रभु यथा॥ १॥

सर्व मुख्य फुनि सर्व विलोकन जग सुखी,
जगत कीर्त्त जगन्नाथ जगनुत जगमुखी ।
जगच्चक्षु जगव्यापि जिनेस्वर है सही,
निर्विषाद आतंक रहित मुनिवर कही ॥ २ ॥
निःप्रमाद निकलंक निरंजन थान है,
निरारम्भ निर्मोह विगत भय प्रान है ।
अव्यय नाम अनंत पराक्रमवंतये,
पञ्चेन्द्री वश करन सदा जयवंतिये ॥ ३ ॥
है अलक्ष वीरज अनंत अचलो तथा,
अनव्र अनंत मरूप नाम सुमरो यथा ।
सिद्धानंत सुखात्मक आतम मय सदा,
परब्रह्म पर तेज सुखाकर सर्वदा ॥ ४ ॥
मुक्ति श्री भरतार कर्म करि मुक्त हैं,
मुक्ति मार्ग उपदेशक ज्ञान त्रिमुक्त है ।
विश्वंभर जग जीवन हितू,
दयानिधान सुजान, आतमादम जितू ॥ ५ ॥
दाता धीश दमेंद्रिय परमेष्ठी कहैं,
पुन्यातम सुपवित्र कृपाधारी लहैं ।
हैं पवित्र करतार पवित्राग्ध सदा,
पुनि पवित्र वच सार महा ज्ञानी मुदा ॥ ६ ॥
ब्रह्मा ब्रह्मपती पुनि ब्रह्म सुदेमकौं,
ब्रह्मन प्रिय, पद्मासन जानि महेसको ।

श्री पद्मेश महेश्वर ज्ञान महाव्रती,
महा शांत सुमहांत महा ध्यानी यती ॥ ७ ॥
सदानंद सत्योदय नाम सुजानिये,
नित्य नित्य प्रजल्पक फुनि परमानिये ।
धर्मराज धर्माधिप धर्मानंत कृत,
सुधर्म दातार धर्मवत तीर्थंकृत ॥ ८ ॥
धर्मशील धर्मोपदेश कारक महा,
काम रूप क्रिया व्यतीत सुख जिन लहा ।
कलकांगो सुकलाढ्य कलानिधि सार है,
कलमपहा केवली जगत आधार है ॥ ९ ॥
स्याद्वाद वेदी पुनि जिन वेदज्ञ हैं,
निर्ग्रन्थो निर्ग्रन्थ नाथ धर्मज्ञ हैं ।
एक अनेक सनातन यो निरहार है,
सदा योग कृतकृत्य सुलक्षण धार है ॥ १० ॥
प्रशांतादि निर्मेष क्षेम कृत है सही,
पंचकल्याणक पूजा जोग सुगुरु कही ।
शील समुद्र जग चूडामणिय नाम है,
भव्य बन्ध मोक्षज्ञ बन्ध शिव ठाम है ॥ ११ ॥
निधन अनादि सुवाई सु शंकर है सही,
चतुरानन इत्यादि नाम माला कही ।
जो धारै भवि कंठ मांहि शिवपद लहैं,
जपै प्रात उठि सदा नैन कवि यो कहैं ॥१२॥

चौपाई ।

इस विध नाम नन्त संयुक्त, स्तुति करवेको समरथ्य ।
रागदोप च्युत हो तुम ईश, भक्तिसहित स्तुति करो जगीश ॥६॥
नमो प्रभु तुमको नमो, लोक शिखरस्थित भव विप वमो ।
धर्मोदधि चंद्रायन जानि, भव्य कमल परकाशन भान ॥ ७ ॥
जगत जीव सस्योघ अपार, नमो मेघ मम पोपन हार ।
मुनिगन चंद्र सरोवर हंस, नमो प्रकाशि बोध रवि अंश ॥ ८ ॥
कर्म काठ जारन चित्र थान, नमो त्रिविध करि श्रीभगवान ।
पंच ज्ञान सागर सुखदाय, नमों शुक्लध्यानग्र सुभाय ॥ ९ ॥
मिथ्यामोह ध्वांत कृत क्षीन, नमो नमो शुद्धातम लीन ।
सकल दोप घन शमन समीर, गुण अनंत करि शोभित वीर ॥ १० ॥
तुमको नमो विनय धरि धीर, पाप पंच क्षालन जिमि नीर ।
भव्य जीव मन भृंग सरोज, चरन तुम्ही नित करन सुभोज ॥ ११ ॥
विन कारन जगबंधु विख्यात, नमो नमो तुम गुन अवदात ।
अष्टोत्तर सत नाम विशाल, पावन पुन्य करन दर हाल ॥ १२ ॥
सर्व क्लेश आमय आतंक, शोक विघन नासन निःशंक ॥

इति पठित्वा पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।

अथ आचार्य लक्षणं ।

अडिल्ल ।

पंच महाव्रत धरण धुरंधर जानियै,
महा धैर्यधर- धरनि समान वखानियै ।
शुद्ध ध्यान जल क्षालित निज आतम सदा,

पायो सब सिद्धांत पार जनि करि मुदा ॥
विभ्रम रहित विध्वस्त मिथ्यात महा तमो,
देत धर्म उपदेश क्लेश विन तिन नमों ।
कलावान कुल भूत कला ज्ञानी तथा,
दयावान निरवांछक शांतमना यथा ॥
क्षमावान क्षितिपार्चित प्राज्ञ सुबुद्ध है,
प्रश्न सहन भिक्षाशन योग निरुद्ध है ।
अति प्रचंड विवंदित चरन सरोज हैं,
दीपक शुभ उपदेश सूरसम ओज हैं ॥
ऐसे आचारज गुन गुरु ये जानिये,
तिनहीको उपदेश परम उर मानिये ॥१३॥

इति आचार्य लक्षणं ।

अथ पंडित लक्षणं ।

विना शूद्र नर सर्व क्षुद्रता हीन ये ॥ १ ॥
गुण संपति कर मंडित परम प्रवीन ये ॥ २ ॥
भाग्यवंत नर त्यागी, सुभगनि चीत हैं ॥ ३ ॥
अति वैरागी मत्सर भाव विनीत हैं ॥ ४ ॥
शीलवंत तन निर्मल राजत हैं महा ॥ ५ ॥
काय दोष वर्जित गुण अद्भुत जिन लहा ॥ ६ ॥
मान रहित मद वर्जित दरमन धार जे ॥ ७ ॥
संपूरन विद्या गुण मंडित सार जे ॥ ८ ॥

दुर्धरवादि घनाघन घटा विदारते ।
पवन समान विद्वान कला गुण धारते ॥ ९ ॥
सुस्वरज्ञानी राजसभाजित जानिये ।
ऐसे पंडित पाठ पठन परमानिये ॥ १० ॥

इति पंडित लक्षणं संपूर्णम् ।

अथ यजमान लक्षणं ।

कवित्त सवैया—श्रद्धावान शीलगुण सात, चितवाक् वर बहुश्रुत सुधासी, पुनि धर्म उपकारी है ॥ निरलोभ हिंसा करि रहित विचारवान जिनभक्त गुरुभक्त प्रतिष्ठा धारिकारी है । शास्त्र उपदेश करि प्रापित श्रावकाचार राजकाज करिवेकों अग्र पदधारी है ॥ इत्यादि गुण करि संपूरण बिराजमान तेई नर पूजा जोग जनम मरण हारी है ॥ १५ ॥

अथ सामग्री लक्षणं—अति मनोज्ञ सुख करन दृगन मन हारिनी, तन पोपन अति शुद्ध विमल गुन धारिनी । वसुविधि मंगल द्रव्य अग्र जाकै चलै, अष्ट प्रातिहारज विभूति युत करि भलै ॥ उपमा रहित प्रशस्त सुजन कल्पित घनी, ऐसी सामग्री लै जिनवर पूजनी ॥ १६ ॥

अथ परिचारक लक्षणं—जिनवर भक्त परायन हस्त क्रिया विषैं, अति पवित्र तन विबुध संग कृत श्रुत सिषैं। पंचेन्द्री वश-करन धरन गुन मौनजैं, अल्पाहारी आलस सहित सु गौनजे ॥ पंडित मन अनुगामी ये सही, ऐसे सजननुकों परिचारकता कही ॥ १७ ॥

अथ श्रोता लक्षणं—षड़सादिक रहित निरालस ये सदा, दयावान अन्योन्य बात न करै कदा। पूजा लोकन तत्पर मान रहित भले, मायाचार विचार मार जिनवर गले ॥ क्रोध लोभ मोह द्रोह करि रहित हैं, पूजा देखनजोग ते नर पंडित कहैं ॥१८॥

अथ मंडप लक्षणं—दीरघ मंडप रचना बहुविधि कीजिये, नाना शोभा सहित लपत हरषीजिये। घंटा तोरन पुष्पमाल शोभै तहां, बीच मोतिनके गुच्छा लटकि रहै तहां ॥ ताल कंसाल मृदंग भेरि पटहा घने, बाजत अधिक बजाय गायगुन निजतने ॥१९

अथ मंडन लक्षणं—पंच वरन रतननुको चूरन ल्यायकै, सार्द्धद्वीप द्वै मण्डन रचहु बनायके। प्रथम सुदरसन मेरु मध्य जाकै बसै, ऐसे जंबूद्वीप अधिक सोभा लसै।

जंबूद्रुम शाल्मली वृक्षराज ही,
मेरु सुदर्शन भुजा दोय छवि छाज ही।

ताके पार्श्व कुलाचल सरविधि शोभतं,
तिन ऊपर पट् द्रह जल मृत मल धोवतं ॥

तिन ही मैंसे निकसी चलि सरिता सही,
नाम चतुरदस संख्या परमिति इम कही।

और विभंगा द्वादसन विचारिये,
इह विधिकी बहु रचना नैन निहारिये ॥

वक्षारगिर षोडस हेम मई जहां,
रूपाचल चौतीस विराजित हैं तहां।

रजधानी चौंतीस वृषभ गिर जानिये,
इतने ही संख्या इनकूं ही मानिये ॥
अरसठि गुफा मनोहर सब विधि वरनई,
विजयारध गिरि नीचै राजति हैं सही ।
चारुतीन पुनि सहस प्रमान सु भाषयै,
सात शतक चालीस नगर इम राखिये ॥
३७४० विद्याधर तिनमें बहु वास करै भलै,
चक्रवर्तिकी आज्ञा सिरपर ले चलै ।
मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत है सही,
षंडश हो करि मण्डित भूमि विराज ही ॥
उत्तरमें ऐरावत क्षेत्र बखानिये,
दोऊकी रचना इक सार प्रमानिये ।
हेमवंत हरिक्षेत्र विदेह सु लीजिये,
रम्यक हैरण्यावत और गनीजिये ॥
पाद मात्र ऐरावत उत्तरमें कह्यो,
पुनि विदेह पर्यंति चतुर गुन वरनयो ।
इस विधि रचना प्रथम दीपकी जानियो,
पाठ संस्कृत मांहि सोइ परमानियो ॥
द्वितीय धातकी खण्ड द्वीप वर्णन ठयों,
सुनो चतुर दे कान यथाविधि वरनयौ ।
मेरु दोय तहं विजय अचल शुभ राजही,
पूरब अपर मंझार भूमिगत छाजही ॥

तिन अवगाह अन्तर्गनि सिद्ध समान हैं,
जोजन सहस प्रमान मूल जिस थान हैं ।
सप्त क्षेत्र भरतादिक पट् कुलगिरि तथा,
दुगुन दुगुन विस्तार जासु थाप्यो यथा ॥
भोगभूमि अरु कर्मभूमिके थानये,
हानि वृद्धि करि जंवूद्वीप समानते ।
पुष्कराद्धेमें मेरु जुगमन मोहये,
मंदर विद्युतमा लीना मज सोहये ॥
सप्त क्षेत्र कुल पर्वतादि जिम दूसरे,
द्विगुन द्विगुन विस्तार तथा गन तीसरे ।
हानि वृद्धि करि कर्मभूमि सम जानिये,
दो द्वीप अठाईकी दश विध परमानिये ॥
लवनोदधि कालोदधि द्वै सागर परै,
द्वीप अढाईके विच खाई सम ढरैं ।
मानुषोत्तर पर्वत जिम कोठ सुहावनो,
पर्यो वेढि करि अर्धद्वीप मन भावनो ॥
तासु प्रमान ऊंचाईकौं वरनन कर्यो,
सप्त सहस्र ऋषि शत इक विंशतिकौं पर्यौ ।
तहां लग भूमि प्रमान वखानों सार है,
जोजन लाख पैंतालिसको विस्तार है ॥
इम विधि रचना भाषी सार सुहावनी,
मूल संस्कृत पाठ देखि मन भावनी ।

अब पूजाकी विधि संक्षेप बताइये,
सुनो भव्य दे कान सुमनमें ल्याइये ॥
द्वादश विधि आभूषण पहिर सुहावने,
धौत वस्त्र वर धारि अंग मन भावने ।
देव शास्त्र गुरु प्रथम समर्चन कीजिये,
पुनि जिन सिद्ध महर्षिनु अर्घ सु दीजिये ॥
पीछै तैं पूजाको बहु विस्तार है,
मेरु सुदर्शन ते लै करि सुखकार है ।

---

# अथ सुदर्शन मेरु पूजा ।

गीता छद ।

शुभ लक्ष योजनको समुन्नत, स्वर्ण शैल सुहावनो ।
सुर नाथ सेवित अमर वंदित, खचर नर मन भावनो ॥
तीर्थकरोंके न्हवन नीर पवित्र, तीरथ जासुकौ ।
हों करौं आह्वानन त्रिविध कर मन वचन युत तासकौं ॥२१॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु लक्ष जोजन उतसेध पांडुकादि शिला वन चतुष्टय जिनालयस्थ जिनबिंब शोभित अनेक शोभा विराजमान जन्माभिषेक क्षेत्र सुदर्शनमेरु अत्रावतरावतर संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट्, सन्निधीकरणं ।

# अथाष्टकं ।

गीता छन्द ।

हिमवंत पर्वततैं सु निर्गत, सुर सरित जल भर ल्याइये।
भरि हेम थारी धार त्रय, जिन चरन अग्र चढ़ाइये ॥
शुभ श्री सुदरशन मेरुगिरि, घन बन चतुष्क विराजही।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजही ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो जलं।

घनसार लाय मिलाय कुंकुम, अगर चंदन गारिये।
जिन चरन पूजन करहु भविजन, दाह दुरित निवारिये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजही ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो गंधं।

लै सुरभि सालि अखंड तंदुल, स्वच्छ जल प्रक्षालिये।
जिन चरन पूजन करहु भविजन, निज सुपन प्रतिपालिये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालय जिनेभ्यो अक्षतान्।

केवरो कंज गुलाब मरुवौ, मालती चुन लीजिये।
जाई जुही मच कुंद ले करि, प्रभु समर्चन कीजिये॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालय जिनेभ्यो पुष्पं।

भरि हेम थाल सुहाल फेनी, शर्करा सम ल्याइये ।
करि क्षीर मिश्रित हेम थाली, भरि सु जिनहि चढ़ाइये ॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजही ।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजही ॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालय जिनेभ्यो नैवेद्यं ।

दीपक रतनमय वाति चौमुख, थाल ले भरि करि सही ।
जिन चरन आरत करत अघतम, नसे गुरु गौतम कही ॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं ।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं ॥२७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालय जिनेभ्यो दीपं ।

शुभ अगर चंदन अरु कपूर, मिलाय धूप बनाइये ।
अति गूँज करत सु मंजु धुआं मिश्रित मनोग सुहाइये ॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं ।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजहीं ॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो धूपम् ।

बादाम श्रीफल अरु सदा, फल चोच मोच सु आनिये ।
खर्जूर दाड़िम दाख पिस्ता, सुधर फल ये जानिये ॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं ।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजहीं ॥२९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो फलम् ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, वर दीप धूप फलावली ।
लै अर्घको जिनपद तनो, मति करौ नेक उतावली ॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं ।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजहीं ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

---

## अथ मेरु सम्बन्धी चार दिशा चार चार शिला जिन पूजा ।

मुन्दरी छन्द ।

प्रथम पांडुक शिला बखानियौ, द्वितिय पांडुकंवला जानियौ ।
तृतिय रक्ता नाम सु जिन कहौ, रक्त कंवल चौथी नै लहौ ॥
स्नान जिनका जन्म सम जहां, करत सुरपति मन हरषित महा ।
करौ आह्वानन तिन सारजू, जजौ चरन महा सुखकारजू ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबन्धी चतुष्कदिशी चारोंशिलास्थित जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अडिल्ल ।

भरतक्षेत्र जिन जन्म न्हवन सुरपति कियौ,
दक्षिण दिस पांडुक सिल परसन हरषियौ ।

तिनके चरन जजों वसुद्रव्य सु ल्यायकै,
　　जल फलादि करि अर्घ सुमन वच कायकै ॥३२॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिस पांडुकशिला सिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घ ।

पूर्व विदेह क्षेत्र जो तीर्थंकर भये,
　　पांडुकंबला सिला न्हवन तिनके ठये ।
सुरपति कीनौ जन्मोत्सव हरषायके,
　　चरन जजें हम अर्घ वनायकै ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं पांडुकंबला सिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घं ।

उत्तरदिस पांडुकवन सिला सु जानिये,
　　रक्ता नाम तीसरीको परमानिये ।
तहां जिन ऐरावतको न्हवन भयौ भलै,
　　पूजों अर्घ बनाय करम वसु दलमलैं ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिश पांडुकवन रक्ताशिलोपरिस्थित जिनेभ्यो अर्घ।

पश्चिम दिस वन शिलासम है कंबला,
　　तहं जिनवरको न्हौन कियौ सुरपति थला ।
पर विदेह वर क्षेत्रविषैं जिन औतरै,
　　तिनके जन्म समैंकी हम पूजा करैं ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशवन रक्तकंबलापरिसिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घ ।

# अथ वनचतुष्टय स्थितचैत्यालय पूजा।

अडिल्ल छन्द।

पांडुक वन सौमनस तथा नंदन भनौ,
परौ भूमि पर भद्रशाल चौथो गिनौ।
षोडश जिन चैत्याले तिनमें शुभ राज ही,
तिन आह्वानन करत दुरित दुख भाजही ॥३६॥

ॐ ह्रीं पांडुकवनस्थित षोड़श चैत्यालयस्थित जिनसमूह अत्रावतरावतर अत्र संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

श्रीपांडुकवन पूजन चैत्यालय विषै,
अष्टोतर शत प्रतिमा जिन श्रुतमें लिखै।
पंच शतक धनुषोत्तर तन जिनकौ कह्यो,
तिनपद पूजन वसुविधि मन हरषित भयौ॥ ३७॥

ॐ ह्रीं पांडुकवन पूर्वादिक चैत्यालयस्थित जिनेभ्यो अर्घ।

श्रीपांडुकवन दक्षिण जिनमंदिर सही,
वसु शत प्रतिमा तामें गुरु गौतम कही।
तिनके चरन जजौं तन मन हरषायकै,
जल फलादि लै वसुविधि अर्घ बनायकै॥ ३८॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिश पांडुकवनस्थित जिनमंदिर जिनेभ्यो अर्घ।

श्री पांडुकवन पश्चिम आसा जानियौं,
श्री जिनमंदिर सुंदर परम प्रमानियौं।

रतनमई द्युति धारी तनु जिनराजही,
वसुविधि करि पद पूजत अघ डरि भाजही ॥३९॥
ॐ ह्रीं पांडुकवन पश्चिमदिस जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।
श्री पांडुकवन उत्तर जिनमंदिर पस्यो,
प्रातिहार्य वसु मंगल द्रव्य जहां धरयौ।
जल फलादि करि वसुविधि जुगतसु पूजिये,
कर्म काटिकरि शिव रमनीवर हूजिये ॥ ४० ॥
ॐ ह्रीं पांडुकवन उत्तरदिस जिनचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घं।

इति पाडुकवन जिनालय पूजा।

सोरठा।

वन सौमनस सुसार, पूरव दिसा सुहावनौ।
जिनमंदिर सुखकार, जिन प्रति पूजूं अर्घसौं ॥ ४१ ॥
ॐ ह्रीं सोमनसवन पूरवदिस जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनम सुहाय, दक्षिणदिसमें जानिये।
जिनमंदिर सुखदाय, प्रतिमा वसुविधि पूजिये ॥ ४२ ॥
ॐ ह्रीं दक्षिणदिश सौमनसवनस्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनस मनोग, पश्चिम दिश जाकै सही।
जिनमंदिर शुभ योग, प्रतिमा पूजों हर्ष लै ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिस सौमनसवनस्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनस सु जानि उत्तरदिस जामैं महा।
जिनमंदिर सुखखानि तिनप्रति वसुविधि पूजियै ॥ ४४ ॥
ॐ ह्रीं उत्तरदिस सौमनसवनस्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

इति सौमनस वन पूजन।

नंदन वन विच सार, पूरव दिशा सुहावनो ।
जिनमंदिर सुखकार, प्रतिमा वसुमत पूजिये ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं नंदनवन पूरव दिग्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विच नंदनवन जानि, दक्षिणदिश जिनगृह भलौ ।
पूजों वसुविधि आनि, जिनप्रति अर्घ संजोयके ॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं नंदनवन दक्षिणदिश जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
नंदनवन विच जोय, पश्चिम दिशा सु गाइये ।
जिनमंदिर शुभ होय, प्रतिमा वसुविधि पूजिये ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिश नंदनवनस्थित जिनालयेभ्यो अर्घं ।
नंदनवन हिम सार, उत्तरदिश जिन भवन है ।
वसु शत प्रतिमा सार, पूजौं अर्घ संजोयकै ॥ ४८ ॥
ॐ ह्रीं नंदनवन उत्तरदिश जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

इति नंदनवन पूजा ।

भद्रसाल जौन भूपर सरस सुहावनौ,
पूरवदिश जिन भौन, जिन प्रति पूजौं अर्घसौं ॥४९॥
ॐ ह्रीं भद्रसाल वन पूरवदिशिजिनेभ्यो अर्घं ।
भद्रसाल वन सार, दक्षिण दिश जाकै लसै ।
जिनमंदिर अघ सार, भाव सहित जिन पूजिये ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं दक्षिणदिश भद्रसालवनस्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
भद्रसाल वन बीच, पश्चिमदिश जिन ग्रह भलौ ।
पुण्य सरोवर सींच, जिन प्रतिमा भवि पूजिये ॥ ५१ ॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिश भद्रसालवनस्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

भद्रमाल वन मांहि, उत्तर दिशा बताईयौ ।
जिनमंदिर सक नांहि, प्रतिमा वसु मत पूजियौ ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिश भद्रसालवनस्थित त्रैलोक्यतिलक जिनालय जिनेभ्यो अर्घ ।

इति श्री सुदर्शन मेरु पूजन विधानं ।

---

# अथ गजदंत पूजा ।

सोरठा ।

मेरु सुदरशन केर, नागदंत वट्ठ जानिये ।
विदिशा मांहि सु घेरि, परे आनि सु वखानिये ॥ ५३ ॥

गीता छन्द ।

सौमनस विद्युतप्रभ तथा, पुनि माल्यवान सु नाम हैं ।
शुभ गंधमादन मेरि गिरिके, चारि हू शुभ ठान हैं ॥
गजदंत चारि वखानि इनपर, आनि जिनमंदिर परै ।
तिन करौ आह्वानन विविध, हम जिन चरण हिरदे धरै ॥५४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी च्यारि दिशा च्यार गजदंत ऊपर च्यार जिनालय जिना अत्रावतरवतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणं ।

दोहा ।

मेरु अग्निदिश सौमनस, वानरदंत सु सार ।
जिनमंदिर तापर लसै, पूजो जिन सुखकार ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बंधी सौमनस गजदंत जिना० जि० अ० ।

भद्रसानु वट तडित प्रभ, नागदंत नैऋत्य ।
दिशामांहि जिन ग्रह जजौ, चरण जिनेश्वर सत्य ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बंधी विद्युतप्रभ गजदंत जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

मेरु सुदर्शन तै तथा, वायव दिशिमें जानि ।
माल्यवान गजदंत वर, जिन पूजो सुख खांनि ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बंधी माल्यवन्त गजदंत जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

मेरु सुदर्शन गंधवर, मादन नाम सु जांनि ।
नागदंत जिनग्रह जजौ, परौ दिशा ईसानि ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बंधी गंधमादन गजदंत जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

गीता छद ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, वरु दीप धूप सु ल्याइये ।
फरु धारि अर्घ मम्हारि वसुविधि, मंगलादिक गाईये ॥
श्री मेरु वन गजदंत जिनग्रह, सकल प्रतिमा पूजिये ।
धुन गाय हर्ष बढ़ाय तिस फल, स्वर्ग सुरपति हूजिये ॥५९॥

ॐ ह्रीं सुदरशन मेरु सम्बंधी जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घ ।

## अथ जयमाल ।

गीता छद ।

वीतराग सुरपति महित जिनपतिं, मुक्त रमणी पतक है ।
निस्वेद निर्मल गुण विभूषित, ज्ञान गम्य करम दहै ॥

अघतिमिर नाशन भान दृग, वट जान वीरप सहित ये ।
सुख नंत करि संजुक्त तुष्टय, चरण हम तिनके नये ॥६०॥

पद्धडी छन्द ।

सुर सुरपति फनपति पूज्य पाय, वसु करम रहित भव सिद्धदाय।
सुर मेरु विपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
भवि सरोज प्रफुल्लन सु भानु, ये गणधर मुनिकरि ध्याय मानु।
सुरमेरु विपन गजदंत चारु, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
दुक्रत गज धन मर्दन मृगेश, जगजीव दया कर बांध बेश।
सिर छत्र तीन शोभे महान, क्षीरोपम चामर वीज्यमान॥
शिव शुद्ध रमापति सर्म दाय, जरा मरण विनाशन है सु भाय।
सुरमेरु विपन गजदंत चारु, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
दरशन अनंत पुन ज्ञानवंत, चित सौख्य वीर्य करि हेमहंत।
सुरमेरु बिपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
ये पंच वरन विपगत जिनेश, नर नायक नरपति नुत महेश।
सुरमेरु विपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
सम्यक्त सुदर्शन है विशुद्ध, सूक्ष्म तत्व वीर्य संयुत सु बुद्ध।
सुरमेरु विपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
अगुरुलघु अव्याबाध सार, इत्यादिक गुनके है भण्डार।
सुरमेरु विपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
सुख सिद्ध रूप फुनि सिद्धदाय, जिनके तिहु जगजन नमे पाय।
सुरमेरु विपन गजदंत चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥

घत्ता छन्द ।

ये सकल गुण संयुक्त जिनवर, शुद्ध बुद्ध प्रभाव है ।
ये त्रिदश पति नर इन्द्र बंदित, चरण भवोदधि नाव है ॥
ये पाप परनति भनि स्वातम, जांनि भूति सुखित भये ।
शिवसुख दाता जगत भाता, पद कमल हम तिन नये ॥
ये सर्व अतिशय मोद, परमाल्हाद करि पूजन भरे ।
ये त्रिजगति पति पाद पूजत, शिव महल मग पग धरे ॥
ये द्रव्य गुन नृप अर्थ देश, करमाकीरतिवंत ये ।
ये जय प्रताप सु जनक जिनवर, केवल श्री कंत ये ॥

दोहा ।

ऐसे पुरुपोत्तमनुके, पूजौं पद जुग सार ।
ते जिनवर वरतौ सदा, जयवंते सुखकार ॥ ६१ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिश्री सुदर्शनमेरु गजदंत पूजा सम्पूर्णम् ।

---

# अथ कुरुवृक्ष पूजा ।

गीता छन्द ।

श्री सुदर्शनमेरुते, ईशान दिशमें जानिये ।
शुभ भोगभूमि सुहावनी, उत्कृष्ट नाम बखानिये ॥
तह नील कुलगिरके निकट, सीता नदी तट राजही ।
पूरवदिशा द्रुम नाम जम्बू, अतुल महिमा छाजही ॥
तह और मणिमय वृक्ष लघुवर, चहूं दिशि वेष्टित सही ।
जिनराज पति नुत सभा शोभित, चक्रवर्ति उपमा लही ॥

प्राणी चरन जजौं जिनराजके, या भव आताप निवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥
ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखाविषै श्री जिन मंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरनकमलेभ्यो चंदनं।
प्रानी सालि सुगंध सुहावनैं, तन्दुल जल विमल पखारि हो।
चरण जजौं जिनराजके, अक्षैपुर मग पग धारि हो।
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥६५॥
ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखाविषै श्रीजिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो अक्षतं।
प्राणी कुन्द केतकी मालती, मचकुंद कमल लै सार हो।
प्राणी चरण जजौं जिनराजके, जाते कामवाण निरवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥६६॥
ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखाविषै श्रीजिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो पुष्पं।
प्राणी घेवर बावर मुति लड्डू, घृत पाय सु मधुर मिलाय हो।
प्राणी चरन जजौं जिनराजके, जाते रोग क्षुधा मिट जाय हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥६७॥
ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखाविषैं श्रीजिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो नैवेद्यं।
प्राणी बाती कर करपूरकी, मणिमय दीपक परजारि हो।
चरन जजौं जिनराजके, जाते मोह तिमिर निरवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥६८॥

# अथ शाल्मली वृक्ष पूजा ।

अडिल्ल ।

मेरु सुदर्शनतै नौ रीति दिशि जानिये,
कोन विषैं शाल्मली वृक्ष परमानिये ।
सीतोदा तटनी तट पश्चिम दिश मही,
भोगभूमि उत्कृष्ट जानि जिनवर कही ॥
निषधाचलगिरि निकट आप दिशमें कहा,
जम्बूवत शाखा स्थित जिनमंदिर जहां ।
तहँ जिन प्रतिमा अष्टोत्तर शत शास्वती,
तिनि आह्वानन करौं त्रिविध करी शुभमती ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी शाल्मली वृक्ष पश्चिमदिश सीतोदा नदीतट उत्कृष्ट भोगभूमि स्थित निषधाचल जंबूवृक्ष वत शाखा स्थित जिनालय जिनप्रतिमा अष्टोत्तर शत पांचसे धनुष ऊंचा शरीर विराजमान अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं ।

सोरठा ।

क्षीरोदधिको नीर, मणिमय झारीमैं भरौं ।
पूजौं पद जुगवीर, जिनप्रतिमा शाल्मली विषै ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं शाल्मलीवृक्ष शाखास्थित जिनलयजिनेभ्यो जलं ।

गो सीरष घन सार, गारि सुघर केसर मिलै ।
चरण जजौं सुखकार, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषै ॥ ७७ ॥

ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखास्थित जिनलयजिनेभ्यो चंदनं ।

मुक्ताफल उन हार, तंदुल निर्मल धोयकै।
चरण पुंज अवधारि, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषैं॥ ७८॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखास्थित जिनलयजिनेभ्यो अक्षतं।

प्रफुल्लित सुमन सुगंध, वरण वरणकै लायकै।
पूजौं चरण जिनंद, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषै॥ ७९॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखास्थित जिनलयजिनेभ्यो पुष्पं।

चरु वरु विविध प्रकार, कंचन थाल भरायकै।
पूजौं पद जुग सार, प्रतिमा शाल्मलि विषै॥ ८०॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखास्थित जिनलयजिनेभ्यो नैवेद्यं।

दीप रतनमें सार, कंचन थालीमै धरौ।
पूजो पद जुग सार, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषै॥ ८१॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो दीपं।

चंदन अगर कपूर, धूप सुगंधी खेइयै।
श्री जिन चरण हजूर, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषै॥ ८२॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखा स्थित जिनालयजिनेभ्यो धूपं।

फल प्रासुक उत्कृष्ट, दाख छुहारे ल्याइयै।
पूजो पद जुग इष्ट, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषै॥ ८३॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखा स्थित जिनालय जिनेभ्यो फलं।

जल फल अर्घ संजोय, कंचन थाली धारिकै।
पूजत शिव सुख होय, जिनप्रतिमा शाल्मलि विषैं॥ ८४॥
ॐ ह्रीं शाल्मलिवृक्ष शाखा स्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाल।

दोहा।

गुण अनंत संयुक्त प्रभु, राजत शिवसुखदाय।
भक्ति सहित तिन थुति करौ, कर्म अनंत नसाय ॥ ८५ ॥

पद्धडी छंद।

जिन प्रजरु अमरपद लह्यो सार, तिन अखिल कर्म रिपु दये टार।
द्रुम शाल्मलि शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
ये सगुन विगुन निर्मल विभाव, ये विहज विमय कृत शुद्ध भाव।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
ये विभव सुभव हत दुर्विभूति, विफली कृत दुर्जय कर्म खूती।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
ये विरस सुरस फुनि विगत गात, ये विरत सुरत चित नित विधात।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
मुनिगण चित नित थिनवास कीन, मिथ्यातम मति जिन करी क्षीन
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
ये वितनु सुतनु भव रहित पीर, ये निकार जिन मोह वीर।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
नरदेव महेश्वर पूज्य पाद, परिहारित ध्रुवपद विगत वाद।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥
अमितामित सौख्य सुधा अहार, विरजोम खेद विमुक्त सार।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥

जग तीन सु मस्तक वास धार, वचनादि जोगत्रय हत विकार ।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय ॥

घत्ता-अडिल्ल ।

सम्यकदर्शन ज्ञान चरण गुण सार जे,
　　वीरिय सुह मत्वादि सकल अवधारिये ।
लोकशिखर कृत वास भास गत ये सदा,
　　अर्घ दान करि जजों हेत गुण सम्पदा ॥ ९४ ॥

दोहा ।

शिवसुख सागर मध्यगत, भव आताप निवार ।
ते जिनवर भविजननको, होहु सुख्य दातार ॥९५॥

इत्याशीर्वाद ।

इति कुरुवृक्ष पूजा सम्पूर्णम ।

---

# अथ निषिधाचल संबंधी चैत्यालय पूजा ।

सवैया ।

षोड़श हजार अष्ट शतक अधिक और,
　　त्रियालीस जोजन है विस्तार सुजासको ।
हेम वर्तन कूटक्षेत्रको विभाग जहां,
　　उपवन सहित जिनालय सु भासकों ॥
केसरी तिगंच दह नीर जहां है गंभीर,
　　मध्य कंज मंजु धृति देवीके निवासको ।
जिन गृह अष्टशत प्रतिमा विराजै जहां,
　　आह्वानन त्रिविध करि करै हम तासको ॥९६॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल कुलाचल षोड़श हजार अष्टशतद्विचत्वारिंशति अधिक जोजन विस्तार वन द्वय सहित हेमवरण नव कूटक्षेत्र विभाग श्री जिनालय मण्डित जिनात्रागच्छागच्छ ठः ठः संवौषट् वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

सोरठा ।

क्षीर नीर भरि सार, मणिमय झारी ल्याइये ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥ ९७ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो जलं ।

चंदन केसरि गारि, अरु घन सार मिलायकै ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥ ९८ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो चंदनं ।

शालि सुगंध अदार, तंदुल विमल पखारियै ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥ ९९ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं ।

पुष्प सुगंधित चारु, पंचवरणके ल्याइकै ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै ॥१००॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं ।

व्यंजन विविध प्रकार, अरु पकवान बनाइयें ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचलजिनग्रह भलै ॥१०१॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं ।

मणिमय दीप सम्हार, चौमुख बाती बारियै ।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥१०२॥
ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो दीपं ।
खेवों धूप अपार, अगर कपूर मिलायकें ।
पूजो जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥१०३॥
ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो धूपं ।
फल दृग मन सुखकारि, सरस मधुरवर लाइयै ।
पूजो जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले ॥१०४॥
ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालयजिनेभ्यो फलं ।
जल फल अर्घ सुधार, मणिमय थारीमें सही ।
पूजो जिन सुखकार, निषधाचल पर्वत भले ॥१०५॥
निषिधाचल पर जानि, सिद्धकूट वर नाम है ।
कूटों बीच महान, जिनमंदिर प्रतिमा जजों ॥१०६॥
ॐ ह्रीं निषिद्धोपरिसिद्धयतनकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।
द्वितीय कूटवर सार, निषध नाम निषिधा चलै ।
पूजो जिन अघहार, जिन मंदिर प्रतिमा भलै ॥१०७॥
ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि द्वितीय निषिधकूट जिनालये अर्घं ।
सुधरकूटवर जोय हैं, हर्ष वर्ष सुहावनो ।
निषिधाचलपर सोय, तहं जिन ग्रह प्रतिमा जजों ॥१०८॥
ॐ ह्रीं निषिधोपरि तृतीय हरिवर्षकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
तुरिय कूट शुभ ठाम, वर विदेह जसु नाम है ।
पूजौं जिन गुण धाम, निषिधाचल जिन ग्रह भलौ ॥१०९॥
ॐ ह्रीं चतुर्थविदेहकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

पंचमकूट बताय, चित्रय नाम सुहावनों।
निषिधाचलपर गाय, जिनमंदिर प्रतिमा जजौं ॥११०॥

ॐ ह्रीं पंचमकूट चित्रयनामनिषिधोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

प्रथित कूट धृति नाम, श्रीनिषिधाचलपर सही।
पूजौं जिन अभिराम, जिनमंदिर प्रतिमा सही ॥१११॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि छष्ठमधृतकूटनाम जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सप्तमकूट सु ठाम, हिमद नाम जसु गाइये।
पूजौं पूरण काम, जिन प्रतिमा भक्ति चढ़ाइये ॥११२॥

ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि सप्तम हिमदनामकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

श्रीविदेहवरकूट, निषिधाचल पर गावते।
शिवपुरके सुख लूट, जिनगृह अर्घ चढ़ावते ॥ ११३ ॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि अष्टमविदेहकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट रूचक जसु नाम, सुन्दर नवम विराजहीं।
पूजौं जिन गुण धाम, वसुविधि करि अघ भाजहीं।।११४॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि रुचिककूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

सिद्धायतन आदि दे, कूट सु नव सुखदाय।
जिन मंदिर प्रतिमा जजौं, नैन निरखि बलि जाय। ११५॥

निषिध नील बीच जानिये, परम भोग भू सार।
तहां चारण मुनिपद जजौं, वसुविधि अर्घ सम्हारि॥११६॥

ॐ ह्रीं निषिद्धनीलमध्य उत्कृष्ट भोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं।

शून्य शून्य अर शून्य फुनि, सागर परमित जानि ।
द्वय जोजन विस्तार भनि, कंज मंजु परमान ॥११७॥
तह धृति देवी भवन वर, जिनमंदिर तामांहि ।
अष्टोत्तर प्रतिमा शतक, पूजत कर्म नसाहि ॥ ११८ ॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि तिगंछ द्रह चारहजार जोजन आयाम द्वय सहस जोजन व्यास ताके मध्य कमलोपरि धृतिदेवी मंदिर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

गीतिका छन्द ।

सु तिगंछ द्रहतै निकसि सरिता, चली पश्चिम गामिनी ।
छप्पन हजार विचार जसु, परिवार सार सुहावनी ॥
तसु नाम हरिकांता कह्यौ, सागरि मिली विच जायकै ।
सुर तत्र वासी जानि जिनग्रह, जजों अरघ बनायकै ॥११९

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहसे निकसि हरिकांता नदी पश्चिम समुद्रगामिनी तत्र निवासी देव जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

सु तिगंछ द्रहतै निकसि सीता, नदी पूरवको गई ।
करि भूमि गजदंत भेद विदेह क्षेत्र विषे थई ॥
परिवार जासु हजार चहु, वसुधारि सागरमें मिली ।
तहको निवासी देव जिनग्रह, जजों जिनप्रतिमा पिली ॥१२०

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहतें निकसी कुरु भोगभूमिगत गजदंत भेदिविदेहक्षेत्रगत पूर्वसमुद्रगामिनी सीतानदी चौरासी हजार परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्तितत्पर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

# हिमवन कुलाचल पूजा।

सुन्दरी छन्द।

महा हिमवन कुलगिर दूसरो, कूट व सु तसु जानि मनोहरो।
चैत्यमंदिर जिन प्रतिमा तहीं, करो आह्वानन सु त्रिविध सही॥

ॐ ह्रीं चार हजार दोयसे दस योजन दसकला विस्तार सहित अर्जुनवरन महा हेमवत कुलाचल अष्टकूट संयुक्त जिनालय जिनप्रतिमा अत्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः सन्निधीकरणं।

## अथाष्टकं।

सुन्दरी छन्द।

सुर सरिय जल लै अति सीयरो, कनक मणिमय झारीमें भरौं।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो जलं।

मलयगिर चंदन घनसार लै, अति सुगंधित केसर डारिकैं।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं।

विमल जल तंदुल सु पखारिकै, कनक थारीमें बहु धारिकै।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं।

ले गुलाब चमेली केवरो, मालती मचकुंद रु मोगरो।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं।

तुरत गौ घृत पक्क बनायकै, सुघर घेवर बावर ल्यायकै ।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं ।
ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं ।
कनक थारी दीपक धारिये, जोति जगमग चउमुख बारिये ।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो दीपं ।
अगर चन्दन घन कर्पूर लै, धूप दस विध करि मिश्रित भले ।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो धूपं ।
लौंग दाख बादाम सुपारी नारियर, ले छुहारे सुंदर सेउ वर ।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो फलं ।
जल सु सुंदर चंदन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फलावलि अर्घ करुं ।
महा हिमवन जिन मंदिर जजौं, कूट वसु युत जिन प्रतिमा भजौं ॥२९
ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

---

## अथ प्रत्येक पूजा ।

महा हिमवन पर्वत दुतीय गिनि, प्रथम जानहु कूट सिद्धयतन ।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा जजौं, अर्घ जल फल ले वसुविधि सजौं ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि सिद्धायतन कूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।
महा हिमवत पर्वत दूसरो, नाम धारक कूट सु तसुखरो ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतपर्वतोपरि महाहिमवतकूट जिनालय-जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत ऊपर जानियै, कूट ही वृत नाम वखानियै ॥तहां०॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हीवृतकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत पर्वत सार है, कूट हरिवर नाम सुधार है ॥तहां०॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत कूलभूधर सिखर, नाम है हरिकांत सु जासु वर॥तहां०॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिकांतकूटविषै जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत पर्वत सिर विषैं, नाम हेमकूट सुश्रुत लिखैं ॥तहां०
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हेमकूटजिनालयजिनेन्द्रभ्यो अर्घं।

महाहिमवन पर्वतके सिखर, कूट हरिवर्षादिक नाम धर ॥तहां०॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिवर्षकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

नाम हिमवत कुलगिर सार है, कूट वैडूर्य सिरपरि धारिहै ॥तहां०
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि वैडूर्यकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

दोहा।

सिद्धायत तन आदिके, अष्ट कूट सु वखानि।
यजौं चरन जिन अर्घ लै, सदा भक्ति उर आनि ॥ ३७ ॥
ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि सर्वकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं।

दोहा।

निषिध हेमवत दुहनके, मध्य भोग भू जानि।
चरनद्धि धारी सुमुनि, चरन जजौं सुख खानि ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिध दोनोंके बीच हिमवतक्षेत्र मध्यम भोगभूमितव्रतस्थ चारनमुनिभ्यो अर्घं ।

अडिल्ल ।

महापद्म द्रह सेती सहिता रोहिता,
　　निकसि चली पश्चिमको जन मन मोहिता ।
वसु जुग सहस्र सु संख्या परियन जिस भजौ,
　　वसुविधि तहां थिति देव जिनालय जिन जजौं॥३९॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसेती निकसी रोहिता नदी हेमवत क्षेत्र मध्यम भोगभूमिगत पश्चिम समुद्रगामिनी अष्टाविंशति सहस्र परिवार सहित नदी तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

अडिल्ल ।

महापद्म द्रह सेती हरित नदी वही,
　　दूजी कही वखानि पूर्वगामी सही ।
छप्पन सहस विचार जासु परिवार है,
　　तहांवासी सुरजिन पूजौं जग सार है ॥४०॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसेती दूजी नदी हरित नाम छप्पनहजार परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालय-जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

महापद्म द्रह भीतर कमल सु जानियौ,
　　जुगम सहस जोजनको परम प्रमानियौ ।

तहां ही देवीके ग्रह जिनमंदिर बनौ,
यजौं चरन जिन वसुविधिकरि उत्सव घनौ ॥ ४१

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि महापद्मद्रह द्विसहस्र योजन विस्तार एक सहस्र योजन चौड़ो मध्य पद्म ह्री देवीग्रह जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

---

# अथ हिमवत पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

एक सहस्र अरु बावन जोजन जानिये,
द्वादशकला विचारि मार उर आनिये ।
हेमवर्न हिमवंत कुलाचल है वरो,
तहां जिनमंदिर प्रति मनु आह्वानन करौ ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं हेमवंत कुलाचल एकहजार बावन जोजन कलाके विस्तार सहित हेमवर्ण एकादश कूट सहित तत्र जिनालय जिना अत्रागच्छ२ मंत्रोपद् सन्निधीकरणं वार त्रयं ।

## अथाष्टकं ।

छन्द पाना योगीरामाकी चाल ।

नीर क्षीर सम सुरगंगाकौं, कंचन झारीसे भरिये ।
धार देत जिन चरन जुगमढिग, त्रिषा महा अघ हरिये ॥
एकादश वर कूट सहित गिर, हिमवत नाम वखानौ ।
जिनमंदिर जिनबिंब विराजत, पूजन तिनको ठानौ ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं हिमवन जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो जलं ।

मलयागिर कर्पूर मिले करि, केसरि तामें गारौ ।
जिन जुग चरनन अरचन कीजै, दाह दुरित निर्वारौ ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं ।
सालि अखंड प्रक्षालि सरस रस, शशिसम उज्वल ल्यावो ।
पूंज धरो जिन चरनन आगे, तुरत अखयपद पावो ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं ।
सुर तरुके चुनि और कुसुम फुनि, वरन वरनके ल्यावौ ।
श्रीजिन चरन चढाय भविकजन, कामबाण विनसावो ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं ।
मोदक खाजे लै बहु ताजे कंचन थार भरावो ।
श्री जिन चरन चढ़ाय भविकजन, रोग क्षुधा जु नसावौं ॥एका०
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं ।
दीप रतनमय कंचनके लय, जगमग जोति सुहाति ।
आरति करते जिन चरननकी, मोह तिमिर मिट जाती । एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो दीपं ।
अगर कपूर सुगंध दसौंविधि, धूप दहन बिच घालौं ।
श्री जिन चरन समीप भूमिसे, कर्म काट परजालौं ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो धूपं ।
फल अति सुंदर पक्व मनोहर, मधुर २ बहु ल्यावौं ।
श्री जिनचरन चढाय भविकजन, मोक्ष महाफल पावौं ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो फलं ।

सलिल सुगंध सु तंदुल उज्वल, पुष्प चरुवर धारो।
दीप धूप फल अर्घ सुभगकर, श्री जिनपद परवारो।।एका०।।
ॐ ह्रीं हिमवतजिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

---

## अथ प्रत्येक पूजा।

दोहा।

हिमवत पर्वतके ऊपर, सिद्धापत वर नाम।
कूट सु जिनग्रह जिन पूजौं, अर्घ वनाय सुठाम।। ५२ ।।
ॐ ह्रीं हिमवतोपरि सिद्धायतन कूट जिनालयजिनेंद्रेभ्यो अर्घं।
हिमवत पर्वतके ऊपर, हिमवन कूट सु होय।
जिनमंदिर जिन प्रति जजौं, वसुविधि अर्घ संजोय।। ५३ ।।
ॐ ह्रीं हिमवतोपरि हिमवंत कूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।
हिमवत पर्वतके ऊपर भरतकूट शुभ जानि।
तहां जिनमंदिर जिन जजौं, वसुविधि अर्घ सु जानि।। ५४ ।।
ॐ ह्रीं हिमवतोपरि भरतकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।
हिमवत पर्वतके उपरि, इला कूट निरधारि।
जिनमंदिर जिन प्रति जजौं, वसुविधि अर्घ सम्हारि।।५५।।
ॐ ह्रीं हिमवतपर्वतोपरि इलाकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।
हिमवत पर्वतके उपरि, गंगाकूट है एक।
जिनमंदिर जिनवर जजौं, जिन गुण नाथ अनेक।। ५६ ।।
ॐ ह्रीं हिमवतोपरि गंगकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।
हिमवतपर्वतोपरि श्रीवरकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।।५७।।

हिमवत पर्वतके उपरि, रोहितकूट मनोग ।
अर्चत जिनग्रह जिन चरण, कीजे वसुविधि जोग ॥५८॥
ॐ ह्वी हिमवतपर्वतोपरि रोहितकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवतपर्वतके उपरि, सुरादेवि वरकूट ।
जिन अर्च्या चर्चा करौं, बांधौ शुभकी मौठ ॥ ५९ ॥
ॐ ह्वीं हिमवतोपरि सुरादेवी कूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

गीता छन्द ।

श्री पद्मद्रहसे निकसि, रोहित सरिता पूरवको चली ।
अठवीस सहस सु नदी, परियन सहित जाय उदधि हि मिली ॥
जल जन्तु वर्जित सुर मनोहित, कल्पद्रुम मण्डित सदा ।
तहांको निवासी देव जिनग्रह, जजौं जिनवर सर्वदा ॥ ६० ॥

ॐ ह्वीं पद्मद्रहसे निकासि रोहितनदी जघन्य भोगभूमि मध्यगत पूरव समुद्रागामिनी अष्टाविंशति नदी परिवार सहित तत्र निवासी देवजिनभक्ति तत्पर ह्रदजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाला ।

पहिले सुदरशनमेरुकी, पूजाकी सोई हीया राखी ।

गीता छन्द ।

गीर्वान सुरपति पहित जिनपति, मुक्ति रमणी पति कहै ।
निस्वेद निर्मल गुण विभूषित, ज्ञान गामि करम दहै ॥
अघतिमिरनाशन भान दृगवर ज्ञान वीरज, सुख लहै ।
इस विधि अनंत चतुष्टयुत प्रभु, चरण हम तिनके नये ॥

पद्धडी छन्द।

सुर नरपति फनपति पूज्य पाय, वसु कर्म रहित भव सिद्धदाय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥
ये भवि सरोज प्रफुलन सुभानु, ये गनधर पुनि करि ध्याय मान।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित जिन हमको मुक्ति देह॥६२॥
दुष्कृत गज घन मर्दन मृगेश, जग जीवदया कर बांधवेश।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६३॥
सिर छत्र तीन शोभे महान, क्षीरोपम चामर वीज्यमान।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६४॥
शिव शुद्ध रमापति शर्म दाय, जो मरण विनाशन है सु भाय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६५॥
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवन्त, चित्सौख्य वीर्य करि है महंत।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६६॥
ये पंच वरण निपगत जिनेश, नर नायक नरपति नुत महेश।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६७॥
सम्यक्त शुद्ध दर्शन विशुद्ध, सूक्ष्मत्व वीर्य संयुक्त सुबुद्ध।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६८॥
नो गुरु लघु अव्याबाध सार, इत्यादिक गुणके हैं भण्डार।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥६९॥
ये सिद्धरूप फुनि सिद्धदाय, वारिज द्रग तिन हम नमैं पाय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥७०॥

इतिश्री हिमवन कुलाचल पूजा सम्पूर्णम्।

# अथ नीलकुलाचल पूजा ।

छन्द अडिल्ल ।

मेरु उत्तर दिश नील कुलाचल जानिये ।
षोडश सहस सु जोजन जासु प्रमानिये ॥
आठ सतक ब्यालीस कला जुग ऊपरौ ।
तिस आह्वानन करौ जिनालय जिनवरौ ॥ ७१ ॥

ॐ ह्रीं मेरु उत्तरदिश नीलकुलाचल सोलहहजार आठसै ब्यालीस जोजन दोय कला विस्तार सहित वैडूर्य्य वर्ण नवकूट सहित जिनालय जिनायत्रागच्छागच्छ संवौषट् ठः ठः अत्र मम सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

त्रिभंगी छन्द ।

क्षीरोदधि नीरं निर्मल सीरं प्रासुक क्षीरं समलयकै ।
भृंगारमांहि भरि स्तवननि रत करि हर्ष सुमन धर जै जै कै ॥
नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर दिश मै भूधर राजत है ।
पूजों जिन मंदिर कूटसु नवसिर पापविघन डरि भाजत है ॥७२॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो जलं ।

गोसीरखचंदन दाह निकंदन, कदली नंदन लेकरिकै ।
केसर बहुडारौ सरस सुगारौ, रतन कटोरीमै भरिकै ॥ नीला० ॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं ।

लै सुन्दरसाली नीर प्रछाली कंचन थाली माहि भरो ।
शशि किरन समानं करि बहु गानं उत्सव ठानं हर्ष भरो । नीला० ॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं।
वह कुसुम सुहाये अति विगसाये, जन मन भाये ले सुधरै।
चम्पा जु चमेली बहुवन वेली, चहुंदिश फैली गंध धरै॥नीला०
ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं।
पकवान सुनीके गौ घृत सीकै, सुखकर जीके भरि थारी।
मोदक अरु खाजे पूजा साजे ले बहु ताजे हितकारी॥नीला०
ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं।
दीपक दुति भासिक जोति प्रकाशित, तिमिर विनाशिक ल्याय सही।
आरति करूं जिनवर मोह तिमिरहर, ग्यान प्रगट कर सुगुरु कही॥
ॐ ह्रीं निलाचल कूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो दीपं।
मलियागिर चंदन कदली नंदन, अगर सुगंधन मेलि धरै।
लै धूप दशांगी पावक संगी, गुंजित भृंगी मोद भरै॥नीलाचल०
नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर दिशमें भूधर राजत है।
पूजो जिनमंदिर कूट सु नव सिर पाप सकल डर भागत है। नीला०॥
ॐ ह्रीं नीलाचल कूटस्थ जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो धूपं।
बहु लौंग सुपारी दाख छुहारी भरि थारी ले आवो।
तन मन दृगनासा सुखकर खासा, जिनपद वासा गुन गावो॥निला०
ॐ ह्रीं नीलाचल कूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो फलं।
जल चंदन तंदुल पुष्प सु चरुमल, दीप धूप फल अर्घ धरौ।
करि उत्सव भारी मिलि नरनारी, देदै तारीं पुण्य भरौं॥
नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर दिशमें भूधर राजत है।
पूजों जिन मंदिर कूट सु नव सिर, पाप विघन डर भाजत है॥

ॐ ह्री निलाचल नवकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

प्रथम कूट सिद्धायतन, नीलाचल पर जानि ।
जिनमंदिर जिन प्रति जजो. वसुविधि द्रव्य सु आनि ।।८२।।

ॐ ह्री नीलाचल प्रथमकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

दोहा ।

कूट विदेह सु नाम वरनो, लालचके मांहि ।
जिनमंदिर जिनरांज, पद पूजत पातिक जाहि ।। ८३ ।।

ॐ ह्री नीलाचलविदेहकूटसुनाम जिनालयज्निनेन्द्रेभ्यो अघ।

पूर्व विदेह सुकूटवर, नीलाचल गिर केर,
सीस सु जिन पद पूजते, होत पुण्यको ढेर ।।८४।।

ॐ ह्री नीलाचलपूर्वविदेहकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।

सीता नाम सु कूटवर नीलाचलपर सार ।
जिन मंदिर जिनके चरण, पूज लहो भवपार ।।८५।।

ॐ ह्रीं नीलाचल सीतानाम कूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ ।

कीर्ति कूट है नाम जिस, नीलाचल पर एक ।
श्री जिनमंदिर जिन जजौ, वसु विधि धार विवेक ।।८६।।

ॐ ह्रीं नीलाचलकीर्ति कूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ ।

नाम कूट नरकांत वर, नीलाचलपर गाय ।
जिन मंदिर प्रतिमा जजौ, वसु विधि अर्घ बनाय ।।८७।।

ॐ ह्रीं नीलाचल नरकांतकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ ।

अपर विदेह सु कूटवर, नीलाचलगिरि शीश ।
जिन मंदिर जिन पूजिये, वसु विधि विश्वावीस ॥ ८८ ॥
ॐ ह्रीं नीलाचल ऊपर विदेहकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।
रम्यकूट सु गाइयो, नीलाचलपर जोय ।
तहां जिन मंदिर जिन जजों, तन मन हरसित होय ॥८९
ॐ ह्रीं नीलाचल रम्यकूटजिनालयजिनेन्द्रभ्यो अर्घं ।
अभि दरसन वरनाम जिस, नीलाचल पर कूट ।
श्री जिन मंदिर जिन जजौं, जरा मरनतें छूट ॥ ९० ॥
ॐ ह्रीं नीलाचल रम्यकूटजिनालय जिनेन्द्रभ्यो अर्घं ।
श्री सिद्धायतन आदि दे, अभि दरशन परिजन्त ।
कूट सु नव पूजन् करौ, जिनगुण गाय महंत ॥ ९१ ॥
ॐ ह्रीं नीलाचल नवकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

सोरठा ।

निषिद्ध नीलके बीच, भोगभूमि उत्तम कही ।
पुण्य तरोवर सीच, तहं चरण पद पूजते ॥ ९२ ॥
ॐ ह्रीं निषिद्धनीलबीच उत्तमभोगभूमि चारणमुनिभ्यो अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

नीलाचल द्रह नाम केसरी सार है,
जोजन चारि हजार जासु विस्तार है।
जुग आपामहै तासु जासु जिनवर मनौ,
पूजों जिन प्रति कीरतिदेवी ग्रहतनों ॥ ९३ ॥
ॐ ह्रीं नीलाचल केसरीद्रह आपाम विस्तार निषिद्धवति तत्रपद्ममध्यकीरतिदेवी मंदिरजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

गीता छद ।

श्री नीलगिर केसरी द्रहते निकस सीतोदा नदी ।
सो अपर दिसगत मार्ग लेके जाय समुद्र विषैं फदी ॥
तिस कूलवासी देव जिनग्रह जिनचरन पूजा करौ ।
गुन गाय भक्ति बढ़ाय वसुविध हर्ष तन मनमें धरो ॥९४॥

ॐ ह्रीं केसरिद्रहसे निकसी सीतोदानदी पश्चिमसमुद्रगामिनी चउरासीहजार परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर सुग्रह जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

केसरी द्रहसे निकसी नारी, नदी पूरव गामिनी ।
छप्पन सहस परिवार क्रीड़ा करहि जहं सुरकामिनी ॥
तहं भोगभूमि सु मध्यगत है रन्यवत हि समायके ।
तस तट निवासी देव जिनग्रह जजौ भक्ति बढ़ायके ॥९५॥

ॐ ह्रीं केसरीद्रहसे निकसी नारी नदी पूरव समुद्रगामिनी मध्य भोगभूमिगत हैरण्यवत क्षेत्र छप्पनहजार नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्तितत्पर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

# अथ रुक्मगिर पूजा।

चारि सहस जुग सतदस जोजनको कह्यौ।
रुक्म नाम कुल गिरि दसकला सु वर्नयो॥
पुंडरीक द्रह पुंडरीक गत सोहए।
जिनग्रह जिनप्रतिमा आह्वानन तिन ठए॥ ९६॥

ॐ ह्रीं रुक्म पर्व्वतपर चारहजार दोसौ दस जोजन कला विस्तार सहित तत्र पुंडरीक द्रह गति जिनालय जिनात्रागच्छागच्छ संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टकं।

झुलनियाकी ढाल।

सुरगंगाको नीरसु निर्मल ल्यावो,
नासो भव भव पीर जिन चरन चढ़ावो।
रूकुम शिखर वसु कूट जिनालय माही,
पूज करत जिनदेव सब दुख मिट जाही॥९७॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्व्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो जलं।

मलियागिर घनसार सु केसर गारौ,
एला अगर लंवग लै तामें डारौ॥ ९८॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्व्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं।

तंदुल धवल अनूपम सरस सुहाए,
शशिकी किरन समान लै थार भराए॥ ९९॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्व्वत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं।

वेल चमेली फूल गुलाब मंगावौ,
जाइ जुही मचकुंद सु चुनि चुनि ल्यावौ ॥२००॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं ।

घेवर बावर लाड्डू ल्यावौ बहुविधि ताजै,
फेनी सरस सुहास अरु खुरमा खाजे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं ।

दीपरतनमय ज्योति न दोति दसौ दिशि,
थार कनकमें धारि, तम जात महा नसि ॥रुक्म०॥ २॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

धूप सुगंधी खेय अगनीमें सारी ।
पाप धूम उड़ि जाय, दशों दिश भारी ॥ रुक्म० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो धूपं ।

एला और लवंग लै दाख छुहारे ।
किसमिस सेउ बदाम जिन चरणन धारै ॥ रुक्म० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो दीपं ।

जल चन्दन वर कुसुम, चरु दीप सम्हारौ ।
धूप फलादिक अर्घ, जिन चरन उतारौ ॥ रुक्म० ॥
रुक्म शिखरवर कूट जिनालय माहीं ।
पूज करत जिनदेव, सब दुख मिटि जाहीं ॥रुक्म० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

---

# अथ वसु कूट पूजा ।

सोरठा ।

रुक्माचल पर जानि, प्रथम कूट सिद्धायतन ।
पूजौं श्री भगवान, अकृत्रिम जिनमंदिर सदा ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतपर सिद्धायतन कूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
रुक्माचल पर सार, कूट रुक्मवर नाम है ।
कीजे जै जैकार, जिनमंदिर जिनवर जजौं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं रुक्मकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घ ।
रम्यकूट पिछानि, रुक्माचल कुलगिर विषै ।
पूजों वसुविध आनि, द्रव्य मनोरथ थार ले ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं रम्यककूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
नारीकूट विशाल, रुक्माचल गिर ऊपरै ।
द्रव्य लाय भरि थाल, जिनमंदिर जिनप्रति जजौं ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि नारीकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
रुक्माचलके मांहि, बुद्धिकूट जिन नाम है ।
पूजत कर्म नसाहि, जिन मंदिर प्रतिमा सदा ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि बुद्धिकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
रौप्यकूट वरु नाम, रुक्माचल गिरिकें विषै ।
पूजौं जिन गुन धाम, वसुविध उत्सव ठानिकै ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि रूप्यकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
रुक्माचलगिरि शीश, हैरण्यावत कूट हैं ।
पूजो जिन जगदीश, जिनमंदिर है शाश्वतो ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि हैरण्यवतकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

रुक्माचल गिरिकूट, मत कांचन वर नाम है ।
चहुगति दुखतें छूट् जिन मंदिर जिन पूजतैं ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि मणिकांचनकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

दोहा ।

सिद्धायतन आदिके, कूट सु वसु सुखकार ।
रुक्माचल गिरिके ऊपरि, पूजौं जिन गुण धार ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि वसुकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

रुक्मशिखिर विच जानिये, भोगभूमि शुभ ठाम ।
तह चारन मुनिजन जजो, है जघन्य जिस नाम ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखिर विच हिरण्यक्षेत्र जघन्य भोगभूमि तत्रस्थ चारणमुनिभ्यो अर्घ।

अडिल्ल छन्द ।

रुक्माचल पर पुंडरीक द्रह सार है,
पुंडरीक विच बुद्धि सुरी ग्रह चारु है ।
तह जिनमंदिर जिनप्रतिमा पद पूजियै,
वसुविध अर्घ बनाय सु हर्षित हूजिये ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरिपुंडरीकद्रहमद्ध्ये पुण्डरीक बीच बुद्धिदेवी ग्रहजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

पुण्डरीक द्रहसेती, निकस चली भली,
नरकान्ता सरिता सागर विच जो मिली ।
तहां तटवासी देव सेव जिनवर भजै,
तिस ग्रह जिनमंदिर जिनप्रतिमा हम जजै ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रहसे निकस, नरकान्ता नदी मध्यम भोगभूमि गत पश्चिम समुद्रगामिनी षटपंचाशत नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्तितत्पर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुण्डरीकसे निकसी सरिता दूसरी,
सुवर्ण कूला नाम जाय सागर मिली।
तर सु कूलवासी स्वर जिनमंदिर सही,
पूजौं जिन प्रतिमावर श्रीगुरु इम कही॥ १७॥

ॐ ह्रीं पुंडरीक द्रहसै निकसी दूसरी सुवर्णकूला नदी जघन्य भोगभूमिगत पूर्व समुद्रगामिनी अढाई हजार नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

---

# अथ शिखिर पर्वत पूजा।

सुन्दरी छन्द।

शिखिर पर्वत पर परमानिये, नाम कुलगिरि षष्टम जानिये।
कूट एकादश जिनग्रह धरै, त्रिविध करि तिन आह्वानन करै॥ १८

ॐ ह्रीं शिखिर पर्वत द्वापंचाश जोजन अधिक एक सहस्र द्वादश कला एकादश कूट जिनालय जिनात्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टकं।

चाल समोसरणके पाठकी "सुगुन हम ध्यावै" इस चालमे ॥सोरठा॥

सुर गंगाजल लै झारी, धार देत दुखत्रिषा निवारी।
सुपद हम ध्यावै शिखरी, गिरिपर कूट सुहाए॥

एकादश वर सुगुरु बताए, तहां जिनग्रह जिनबिंब सु पूजौं।
जिन सम तिहु जगदेव न दूजो, सुपद हम ध्यावै॥
जिन गुण मुनि भवि पार न पावै॥ सुपद०॥ १९॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो जलं।
मलयागिरि केसरि सम गारो।
पूजत जिन पद त्रिखा निवारो॥ सुपद०॥ २०॥
ॐ ह्री शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो चंदनं।
तन्दुल धवल पखारि अखण्डित।
चन्द किरिनि सम बहु गुण मण्डित॥ सुपद०॥ २१॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं।
कमल केतुकी कुन्द कुसुम वर।
पारजाति जम्पावति लै कर॥ सुपद०॥ २२॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।
मगद सुगदके मोदक ल्यावो।
फैनी घेवर सरस बनावो॥ सुपद०॥ २३॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।
मणिमय दीप रतनमय वाती।
जगमग जोति होत तम घाती॥ सुपद०॥ २४॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो दीपं।
अगर कपूर गन्ध सब डारौ।
धूप दशांग खेई अब जारौ॥ सुपद०॥ २५॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो धूपं।

सेउदा फल ल्याय अमृतफल ।
दाख छुहारे मधुर मधुर भल ॥ सुपद० ॥ २६ ॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो फलं ।
जल फल अर्घ बनाय सुहाई ।
जिन चरणाम्बुज पूज रचाई ॥ सुपद० ॥ २७ ॥
ॐ ह्रीं शिखिरपरिवतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

शिखिरिपर्वत ऊपर जानिये, कूट सिद्धायतन परमानियै ।
जजौं तन मन करि उत्सव भलै, जल सुगंधादिक वसु अर्घ लै ॥ २८॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि सिद्धायतनजिनेभ्यो अर्घ ।
शिखिरिपर्वत कूट सुहावनो ।
नाम धारक तसु मन भावनों ॥ जजौ० ॥ २८ ॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि शिखिरकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
शिखिर पर्वत कूट हिरन्यवत भलौ ।
जजौ जिनप्रति जिनग्रह अघ दलौ ॥ जजौ० ॥ २९ ॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि हिरण्यवतकूट जिनालयजिनेभ्यो अघ ।
शिखिर कूट सुरादेवी कहौ ।
जजौ जिनग्रह मो वसु रिपु दलौ ॥ जजौ० ॥ ३० ॥
ॐ ह्री शिखिरपर्वतोपरि सुरादेवीकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।
रक्तकूट शिखर गिर पर बनौं ।
जजौं जिन प्रति कर उत्सव घनौं ॥ जजौं० ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि रक्तकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कूट लक्ष्मी जिन मंदिर जजौं ।
अर्घ थार विषै बहुविधि सजो ॥ जजौं० ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि लक्ष्मीकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कूट नाम सुवर्ण गिनीजिये ।
शिखिर पर सुसमर्चन कीजियै ॥ जजौं० ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि सुवर्णकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कूट रक्तावती सु सार है ।
शिखिर परि पूजो अघ ना रहै ॥ जजौं० ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि रक्तावतीकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कूट गंधावती शुभ जानियै ।
शिखिर परि जिन पूजन ठानियै ॥ जजौं० ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि गन्धावतीकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कूट ऐरावत जिस नाम है ।
शिखिर पर पूजो जिन धाम है ॥ जजौं० ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि ऐरावतकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

हेम मनिवर कूट सु गाइये ।
शिखिर परि जिन पूज रचाइये ॥ जजौं० ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि हेममनिकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

सिद्धायतन आदि दै, मनिकांचन पर्यंत ।
कूट जिनालय जिन जजौं, करि कर्मनको अंत ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

सुन्दरी छन्द।

कूट सिद्धायतन कहे जिते, तिन हि पर जिनमंदिर शाश्वते।
अवर कूटनुवसती सुरसरी, तिनहु मैं जिन प्रतिमा शाश्वति खरी॥३९

अडिल्ल छन्द।

शिखिरगिरी मह पुण्डरीक द्रह सार है,
योजन सहस आयाम अरघ विस्तार है।
ता बिच कंज एक योजनको है सही,
पूजौं लक्ष्मी ग्रह जिनमंदिर जिन कही॥४०॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि महापुंडरीक द्रह आयाम योजन एक हजार विस्तार योजन पांचसौ, तिस बीच कमल योजन एक, तत्र लक्ष्मीग्रहजिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

गीता छन्द।

वरकंज द्रहसे निकसि सरिता, रूपकूला नाम है।
सो भोगभूमि जघन्य गत, जाकौं महासुख ठाम है॥
पश्चिम समुद्र गामिनी वसु, युग सहस परिपन गाइये।
तह कौन निवासी देव जिनग्रह, जजैं शुभ गति पाइये॥४१॥

ॐ ह्री शिखरिपर्वतोपरि महापुण्डरीक आयाम योजन १००० विस्तार योजन ५०० तहांसे निकसि रूप्यकूला नदी जघन्य भोगभूमि गत पश्चिम समुद्र गामिनी २०००० नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर तहां जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वडकंज द्रहसों निकस रक्ता, पूर्वदिशकों जो चली ।
चौदह हजार सुधारि निज, परिवार सागर वीच मिली ॥
तसु पुलिन वासी सुरनिके, तन जिनजिनालय पूजियै ।
जल गंध आदिक अर्घ ले, यातै अमरपद हूजियै ॥४२॥

ॐ ह्रीं महापुंडरीक द्रहसे निकरि रक्तानदी विजयार्द्ध फोटयित्वा ऐरावतक्षेत्रगामिनी चतुर्दशसहस नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

वडकंज द्रहसे निकसि रक्तोदा, नदी पश्चिम गई ।
चौदश सहस परिवार ले करि, जाय सागरमें थई ॥
तसकूलवासी अमर ग्रह, जिनवर जिनालय अरचिये ।
गुन गाई अर्घ बनाय वसुविधि, वचन तन मय परचिये ॥४३॥

ॐ ह्री महापुंडरीक द्रहसे निकसी रक्तोदा नदी चौदह हजार परिवार सहित ऐरावत क्षेत्रगत पश्चिमसमुद्रगामिनी तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

## जयमाला ।

गीर्वाण सुरपति, महित जिनपति इत्यादि ।

इति षटकुलाचल पूजा ।

# विजयार्ध पूजा।

अडिल्ल छन्द।

भरतक्षेत्र गत विजयार्द्ध गिर सोहए।
नगर दशोत्तर सत जाकै ऊपर लसै,
तहां विद्याधर वसै अमरगनकौ हसै।
है पचीस जोजन ऊपर तल वासतै,
त्रिशत विस्तीर्ण दीर्घ पंचासतै॥
नगरी विच जिन मंदिर इक इक सार है,
आह्वानन तसु करौ कूट नव धार है॥ ४४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धगिर भरतक्षेत्र गत पचास जोजन लंबा तीस जोजन चौड़ा पचीस जोजन ऊंचा तत्रस्थ जिनालय जिनात्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधीकरणं वार त्रयं पठनीयं।

## अथाष्टकं।

चाल जिनजूकी इन्द्र पूजा करै।

एजी सलिल विमल सुरसरीको, भरि कंचन झारी सार हो।
जिनपद जुग परछालिये, जातैं रोग त्रिखा निरवार हो॥
विजयारधगिरि पूजियें, नगरी जिनमंदिर सार हो।
कूटनपर फुनि जानिये, जिन ग्रह नव सुखकार हो॥ विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो जलम्।

बामन चंदन ल्यायकै, केशरि घन सार मिलाय हो।
जिनपद पूजो भावसै, जातै दाह दुरित मिट जाय हो॥ विज०

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो चंदनं।

सालि अखण्डन बीन लै, फुनि कीन विमल जल धोय हो ।
जिनपद आगै पुंज देयतै, तुरत अषै पद होय हो ॥
विजयारध जिन पूजिये, नगरी जिनमंदिर सार हो ।
खगपति जहां पूजा करै, भव यामैं भविदधि पार हो ॥विज०॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं ।
एजी मोगरु मरुवौ मालती, जाती एती वंधु कहो ।
जिनपद पंकज पूजतैं जातैं, नसै नसै सकल दुख शोक हो । विज०॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं ।
एजी खाजे ताजे बनायके, फेनी श्रेणी अवधारि हो ।
कंचन थारी भराइये, पूजें जिनपद सुखकार हो ॥
विजयारधगिरी पूजिये, नगरी जिनमंदिर सार हो ।
खगपति तहँ पूजा करै, अर पावै भविदधि पार हो ॥विज०॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो चरुं ।
एजी दीप रतनमैं ल्यायकै, जिन जोति न होति अमंद हो ॥
आरति कर जिन चरनकी, यातैं कटै कर्मको फंद हो ॥विज०॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो दीपं ।
अगर कपूर सुगंध ले, विच धूप दहनमें खेय हो ।
पाप धूम सब उड़ चलै, वसु कर्म जलै स्वयमेव हो ॥ विज० ॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो धूपं ।
एजी लौंग सुपारी लायची, बादाम छुहारे उहो ।
जिनपदपंकज पूजतै, भवि तुरत अषै पदसे हरो ॥विज०॥५२॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतौपरि जिनालयजिनेभ्यो फलं ।

एजी जल चंदन कुसुमावली, चरु दीप धूप फल सार हो।
अर्घ बनाय सुगाइये गुन, मनवांछित दातार हो ॥विज०॥५३॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

## अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

प्रथा सिद्धायतन कूट विजयारथ गिरपर कह्यौ।
वसुकर्मनतें छूट जिन मंदिर जिनप्रति जजौं ॥५४॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि सिद्धायननकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घ।
दक्षिण दिश वरजानि, कूट जिनालय जिन जजौं।
विजयारध परिमाण, वसुविधि अर्घ बनायलैं॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि दक्षिणार्धकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।
कूट जु खंड प्रयात, विजयारध गिर पर सही।
नासै भव भव पाप, जिन मदिर जिन पूजतै ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि खंडप्रयतकूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।
पूरन भद्र पिछानि, कूट जिनालय जिन जजौं।
विजयारध परमाण, जल फलादि वसु द्रव्यसें ॥ ५७ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि पूर्णभद्रकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घ।
मानभद्र शुभ कूट, विजयारध ऊपर लसै।
सुरपुरके सुख लूट, श्री जिन मंदिर जिन जजौं ॥ ५८ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि मानभद्रकूटाजिनालयजिनेभ्यो अर्घ।
कूट तमिश्रा नाम, विजयारध पर जानियै।
पूजौं जिन गुणधाम, वसुविध द्रव्य सु आनियै ॥५९॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि तमिश्राण्पकूटजिनालयजिनेभ्यो अघ।

उत्तरार्द्ध वर शृङ्ग, विजयारधपर पौ लसै ।
जिनप्रतिमा सर्वांग, नमिकर पूजत अघ नसै ॥६०॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि उत्तरार्द्धकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

कूट वैश्रवण सार, विजयारध गिरपर भलौ ।
पूजौ जयजयकार, जिनमंदिर प्रतिमा सही ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वैश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

मान वैश्रवण जान, विजयारध परि सानु है ।
पूजौ श्री भगवान, जिनप्रतिमा जिनग्रह भलै ॥६२॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि मानश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणि पंचास नगर जिनालय जिनपूजा ।

विजयारध पर सार, किन्नरपुर शुभ जांनियै ।
लै वसुद्रव्य अपार, जिनमंदिर जिन पूजियै ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि किन्नरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

विजयारधपर सार, विनगरीत पुर नाम है ।
पूजौं जिन गुण धार, जल फलादि वसु द्रव्य लै ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि विनगरीतपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

विजयारध पर जानि, वहुधुज नाम नगर भलौ ।
पूजौं जल फल जानि, तहां जिनमंदिर शाश्वतो ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वहुध्वजपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥२॥

विजयारध पर जोय, सिंहध्वजपुर नाम है।
वसुविधि अर्घ संजोय, श्रीजिनमंदिर जिन पूजयै ॥६४॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि सिंहध्वजपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

विजयारधगिर ठाम, पुंडरीकपुर नाम है।
पूजौं जिन गुण धाम, वसुविध द्रव्यसु ल्यायके ॥ ६५ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि पुंडरीकपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥३॥

विजयारध परिसार, वीतसोकापुर पुर नाम है।
पूजौं जग जिन धार, वसुविध अर्घ बनायकै ॥ ६६ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वीतसोकपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥४॥

बिजयारधगिर मांहि, गरुड़ध्वजपुर जो वसै।
पूजौं जिन ग्रह ताहि, जनम जनम पातिक नसै ॥ ६७ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि गरुड़ध्वजपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥५॥

श्रीप्रभनगर विशाल, विजयारधपर जानिये।
अर्घ ल्याय दर हाल, जिनमंदिर जिन पूजियै ॥ ६८ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि श्रीप्रभनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥६॥

बिजयारधपर जानि, श्रीधरनगर मनोग है,
पूजौ उर धरि ध्यान, वसुविध अर्घ बनायकै ॥ ६९ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि श्रीधरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥७॥

विजयारध पर गाम, लोहार्गलपुर नगर है।
वसुविध अर्घ बनाय, जिनग्रह जिन प्रति पूजियै ॥७०॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि लोहार्गलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥८॥

नाम अरिंजय जासु, पुर विजयारध ऊपरै ।
पूजौ जिनग्रह तासु, जिनप्रतिमा वसु द्रव्य लै ॥ ७१ ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अरिंजयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

विजयारधपर जोय, वज्रार्गलपुर नगर है ।
पूजे अघ क्षै होय, जिनप्रतिमा वसु द्रव्य लै ॥ ७२ ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वज्रार्गलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१०॥

पुनि विजयारध और, नगर वज्रपुर सार है ।
पूजौ जिनपद जौर, अर्घ लाय गुन गायकै ॥ ७३ ॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वज्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥११॥

विजयारध गिर सीस, नाम पुरञ्जय नगर है ।
पूजौ जिन जगदीस, जल फलादि वसु द्रव्य लै ॥७४॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि पुरञ्जय जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१२॥

विजयारध पर जानि, नाम विमोचन नगर है ।
पूजौं वसुद्रव आनि, जिन मंदिर जिन चरण युग ॥७५॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरिविमोचनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१३

विजयारध गिरि जोय, नाम सकटपुर शुभ वसै ।
तहं जिन मंदिर होय, पूजौ जिनप्रतिमा भलै ॥७६॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सकटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१४॥

विजयारध पर सार, नगर चतुरमुख वसत है ।
जिन मंदिर सुखकार, जिन प्रतिबिंब सु पूजियै ॥७७॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चतुर्मुखनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१५

विजयारध गिर ठीक, नगर बहुरमुख सुघर है ।
लै वसु द्रव्य सुनीक, जिन मंदिर जिन पूजियै ॥ ७८ ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चतुर्मुखनगर जिनालयेभ्यो अर्घ ॥१६॥

विजयारध परसार, नाम अमरपुर नगर है ।
पूजौ जिन जगधार, है जिन मंदिर तहां भलौ ॥७९॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि अमरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ । १७॥

विजयारध पर जानि, जयपुर नगर सुसार है ।
पूजौ जिन सुखकार, वसुविध अर्घ संजोयकै ॥ ८० ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि जयपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घ ॥१८॥

विजयारध सुख धाम, महास्वेत ध्वजपुर वसै ।
पूजै वंछित काम, जिन मंदिर प्रतिमा जजै ॥ ८१ ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि श्वेतध्वजपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥१९

रथनू पुरव सार, नगर विजयारधपर वसै ।
जिनमंदिर अघहार, जिन प्रतिमा वसुविधि जजौं ।'८२॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि रथनूपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥२०॥

चक्रवालपूर सार, विजयारधपर जानिये ।
चरन जजौं सुखकार, पूजै जिन प्रतिमा भलै ॥ ८३ ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चक्रवालपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥२१॥

विजयारध वर जानि, अपराजित पुर नगर है ।
पूजौं जिन गुण खानि, जल फलादि वसुविधि सही । ८४॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अपराजितपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥२२

विजयारध पर गाय, श्रीमेखलाख्य नगर भलौ ।
तहां जिनमंदिर पाय, जिन प्रतिमा वसुविधि जजौं ॥८५॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि श्रीमेखलाख्यपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।२३

विजयारध पर सार, अपराजितपुर नाम है ।
तहँ जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥८६॥
ॐ ह्रीं वजयार्द्धोपरि अपराजितपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२४॥

विजयारध पर सार, काम पुष्प पुर जो वसै ।
तहां जिन गृह सुखकार, लै जलादि जिन पू जये ॥८७॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कामपुष्पपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२५॥

विजयारध पर सार, गगनर्चनपुर नाम है ।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि पूजा करौ ॥८८॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि गगनार्चन जिनालयजिनेभ्यो अर्घं । २६॥

विजयारध पर सार, विनय आदि पुर अंत है ।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥८९॥
ॐ ह्रीं बिजयार्द्धोपरि विनयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२७॥

विजयारध परसार, विमुंश्रुक पुर वसत है ।
जंहां जिनगृह सुखकार, लै जला द जिन पूजियै ॥९०॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपर विमुंश्रुकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२८॥

विजयारध गिर सार, संजयंत पुर जो वसै ।
तहां जिन गृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९१॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरिसंजयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२९॥

विजयार पर सार है, जयंतपुर दूसरौ ।

तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥९२॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि जयंतपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥३०॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि जयपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥३१॥

विजयारघपर सार, वैजयंतपुर नगर है ।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वैजयंतपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥३२॥

विजयारधपर मार, क्षेमंकरपुर नगर है ।

जहां जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि पूजा करौ ॥९५॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि क्षेमंकरपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥३३॥

विजयारध पर सार, चन्द्रप्रभपुर सार है।

तहां जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९६॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चन्द्रप्रभपुरजिनालयजिनेभ्यो ॥३४॥

विजयारध पर सार, सूर्यप्रभपुर वसत है ।

तहां जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९७॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सूर्यप्रभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥३५॥

विजयारध पर सार, सुरतिचित्रपुर नाम है ।

तहां जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९८॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सुरतिचित्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥३६

विजयारध पर सार, महाकूटपुर जानिये ।

तहां जिन ग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥९९॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि महाकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

विजयारध पर सार, नित्योद्योतपुर वसत है ।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि नित्योद्योतपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥४५॥

विजयाधर पर सार, नगर विमुखपुर नाम है ।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि विमुखपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं । ४६॥

विजयारध पर सार, नित्यवाहपुर नगर है ।
तहां जिन ग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥९॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि नित्यवाहपुरनगरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥

विजयारध पर सार, नगर सुमुखपुर नाम है ।
तहां जिन ग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥१०॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सुमुखपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥४८॥

छन्द पाहा ।

विजयारध दक्षिण दिश नगरी, है पचास प्रमाना ।
जिन ग्रह जिन प्रतिमाको दीजै, पूर्ण अर्घ निदाना ॥
जल गंधाक्षत पुष्प वस्तु चरु वरु, दीप धूप फल धारौ ।
वसुविधि अर्घ बनाय गाय गुण, अशुभ कर्म निवारौ ॥११॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि दक्षिणदिश पचास नगर जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं ।

# अथ उत्तर दिश पूजा ।

दोहा ।

विजयारध उत्तर दिशा, अर्जुन नगर बताय ।
तहां जिन गृह जिनवर जजों, वसुविध अर्घ बनाय ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अर्जुननगरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर कैलास सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कैलासपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २॥
विजयारध उत्तरदिशा, वारुन नगर बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वारुननगरजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, अरुण नगर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अरुण नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥४॥
विजयारध उत्तरदिशा, किल किल नगर सु पाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि किलकिल नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥५॥
विजयारध उत्तरदिशा, चूडामणि पुर जाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं चूडामणिपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, चन्द्रप्रभ पुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं चंद्रप्रभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर विशाल तसु नाम ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं पुरविशाल जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुष्प चूडापुर धाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं पुष्प चूडापुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, हंस गर्भपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं हंसगर्भपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १० ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पूरवलाह सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं पूरवलाह जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ११ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, नगर शिवंकर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं शिवंकर नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १२ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, हर्म्यापुर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं हर्म्यापुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १३ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, चमर नगर सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं चमरपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १४ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, शिवमंदिरपुर नाम ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं शिवमंदिरपुरजिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १५ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर वसुमुक्त वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वस्तुमुक्तपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १६ ॥
बिजयारध उत्तरदिशा, पुरी वसुमती धाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वसुमतीपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १७ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, सिद्धारथ सुर नाम ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं सिद्धारथपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ १९ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, सेतुंजयपुर दाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं सेतुंजयनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २० ॥
विजयारध उत्तरदिशा, केतुमाल सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं केतुमालपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २१ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, भद्रिकांतपुर थप्प ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं भद्रिकांतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २२ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, गगननगर सु सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगननगरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २३ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर असोक सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं असोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २४ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर विसोक सु बताय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं विसोक जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २५ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, वीतसोक सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वीतसोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २६ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, अलकापुर शुभ गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं अलकापुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २८ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, तिलकांतापुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं तिलकांतापुरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २९ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, गगननगर सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगननगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३० ॥
विजयारध उत्तरदिशा, मंदिरनगर सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं मंदिरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३१ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, कुंदनगर शुभ ठाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं कुंदनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३२ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, कामदनगर सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं कामदनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३३ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, गगनवल्लभपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगनवल्लभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३४ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, गगनतिलक सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगनतिलकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, भूमतिलकपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं भूमतिलक नाम पुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३६ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर गंधर्व सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गंधर्वपुर जिनालयाजिनेभ्यो अर्घ ॥ ३७ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, नेमिखनगर बताय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं नेमिखनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३८ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, मुक्ताहारपुर ठाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं मुक्ताहारपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, अग्निज्वालपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं अग्निज्वालपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ४० ॥
विजयारध उत्तरदिशा, श्रीनिकेतपुर थाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं श्रीनिकेतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ४१ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, महानिकेत सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं मणिकेतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ४२ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, वासनगर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वासनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, रत्न वज्र सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं मनिवज्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, श्रीभद्रपुर थाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, गोक्षीरक सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्री गोक्षीरकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४६ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, केरलनगर रमाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं केरलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४७ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पुर अक्षोभ सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्री अक्षोभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४८ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, बाहु अंगपुर थाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं बाहु अंगपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४९ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, महिक्षोभपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं महिक्षोभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं । ५० ।
विजयारध उत्तरदिशा, सैलनगर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसैलनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५१ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, पृथवीपुर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं श्रीपृथवीपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५२ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, भूधरपुर सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं भूधरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५३ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, दुर्गनगर सु वसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं दुर्गनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५४ ॥
विजयारध उत्तरदिशा, नगर सुदरशन थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५५ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, विजयारधपुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं विजयारधपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५६ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, नगर सुगंध सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सुगंधनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५७ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, वज्रनगर सु वसाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं वज्रनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५८ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, रत्नाकर पुर थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं रत्नाकरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५९ ॥

विजयारध उत्तरदिशा, सदारतनपुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सदारतनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६० ॥

अडिल्ल छंद ।

विजयारध उत्तरदिशि श्रेणी जानिये ।
साठिनगर सु वसाय जिनेश वखानिये ।
तिन विच जिनमंदिर जिनप्रतिमा राज ही ।
पूजत अर्घ बनाय जजों अघ भाज ही ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि उत्तरदिश साठिनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाला ।

विजयारध श्रेणी विषें, पुरुष एक इक सार ।
जिनमंदिर जिन बिंब तहं, वंदों शिवसुखदाय ॥ १९ ॥

पद्धडी छन्द।

जहं रतनभूमि सोहे सु द्वार, तहं पुष्पवाटिका लसै सार।
विजयारध गिर जिनराज ग्रेह, वंदो सु दशोत्तर शतक राह॥

तिनमें प्रतिबिंब विराजमान, सुर खेचर पूजन कर महान।
सिंहासन स्थित जिनजगत भूप, वसु प्रातिहार्य शोभे अनूप॥विजय०

जहां छत्र तीन सोहै उदार, शिर चमर झूलै जिम क्षीर धार।
घंटा झालरि बाजै सुभाय, सुर सुरीनि रति करती सुहाय॥विजय०

बाजत बाजे सब साज संग, बिन मृदंग मुह चग चंग।
गावें सु तान बहुलहें मान, जिन वदन निरख हरषे महान॥विजय०

ध्वज पंकति सोहति अति विशाल, दश चिह्न सहित युत मुक्तमाल।
जै पवन दोलित गगन मांहि, भवि जीवनको मानौं बुलाय॥विजय०

जहां जय २ कार करंत देव, खेचर खेचरी जिन करत सेव।
सहु चारण मुनि करते विहार, उपदेश देत सिद्धांतसार॥विजय०

भवजीव सुनै मन हरष ल्याय, गुन गावत जन आनंद पाय।
भवि पूजा थुति करते सुभाय, छवि नैन निरखि बलि २ सुजाय॥वि०

विजयारधगिरि जिन राजग्रेह, वंदौं मन वच तन कर सुनेह॥२०

घत्ता छन्द।

विजयारध दक्षिणदिशा, पूजा भई विशाल।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, शिव पावै दर हाल॥ २१॥

इतिश्री दक्षिण भारतक्षेत्र विजयार्द्ध पूजा सम्पूर्ण।

# उत्तर ऐरावत बिजयार्ध पूजा।

अडिल्ल छन्द।

उत्तर ऐरावत विजयारध जानियै,
है पच्चीस जोजन उतंग परमानियै।
फुनि पचास जोजन आयाम विशेखिये,
अपरापर भू मान दण्डवत् देखिये॥
त्रिशंत जोजन चौडाई जाकी कही,
वैसे नव नव कूट जास ऊपर सही॥ २२॥

ॐ ह्रीं उत्तर ऐरावत विजयारधस्थित जिन चैत्यालय जिनात्रावतर२ संवौषट् ठः ठः सन्निधीकरणं।

ढाल–जोगीरासाकी।

गंगासागर क्षीर सु उज्वल, कंचन झारी भरावौ।
श्री जिन चरण प्रक्षालन भविजन, भवि आताप मिटावौ॥
ऐरावत विजयारध ऊपर, श्रेणी युग परमानौ।
नगर दशोत्तर शत जिनमंदिर, तिन प्रति पूजन ठानौ॥२३॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र बिजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो जलं।

बावन चन्दन दाह निकंदन, अरु घनसार मिलावौ।
केसरि सरस सुगन्ध मिलै करि, श्रीजिनचरण चढ़ावौ॥ऐरा०॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो चंदनं।

शालि अखण्ड सुगंध सु मंडित, निरमल नीर पखारौ।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, अक्षय मग पग धारौ॥ऐरा०

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं।

कनक रजतमय अतुरतरके, कुसुम मनोहर ल्यावों।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, मदनबाण सु नमावों। ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।
घृत पूरित पकवान तुरतके, नाते सरस सुहाते।
विजन पायस घी उखाडमिम, भरि थारी मन माते॥ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।
कनक रतनमय दीप मनोहर, चउमुख बाती बालों।
आरति करूं जिनचरण कमलकी, मोह महातम टालों। ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो दीपं।
अगर प्रमुख लै धूप दशांगी, जिनपर आगे खेवों।
धूपरवारी अल केकारी, धूम उडत इम वेवों॥ ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो धूपं।
फल नारियर बादाम छुहारे, लोंग सुपारी लीजे।
पिस्ता किसमिस दाख सु ले करि, जिनपद अर्चन कीजे। ऐरा०
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो फलं।
जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, चरु दीपक धरि थारी।
धूप सुफल वसु द्रव्य लेय करि, जिन पूजा सुखकारी॥ ऐरा०
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ प्रत्येक पूजा।

दोहा।

रजता चल सिर सिखिरवर, सिद्धायतन नाम।
ऐरावत जिनग्रह जजै, लै जलादि अभिराम॥ ३२॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि सिद्धायतन कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारथ मस्तक विषै, दक्षिणार्घ वर सानु।
ऐरावत जिनग्रह जजौ, जल फलादि वसु आनु ॥३३॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि दक्षिणार्घ कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

रजताचल सिर ऊपरै, कूट अखण्ड प्रताप।
जिनचैत्यालय जिन जजौ, मिटे पाप संताप ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अखण्ड प्रताप कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

पूर्ण भद्रवरकूट है, रजताचलके सीस।
लै जलादि जिनपद यजौ, जिनमंदिर जगदीस ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि पूर्णभद्रकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

रजताचलके सीसपर, कूट कुमार सु नाम।
ले जलादि जिनपद जजौ, जिनमंदिर सुखधाम ॥३६॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कुमारकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मानभद्रवर कूट है, रजताचल पर जाय।
लै जलादि जिनपद जजौ, वसुकर्मन क्षय होय ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि मानभद्रकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट तमिश्रा नाम है, रजताचल पर सार।
ऐरावत जिनग्रह जजौ, लै वसुद्रव्य अपार ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि तमिश्राकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

रजताचलके सीस पर, उत्तरार्द्ध वर कूट ।
ऐरावत जिनग्रह जजों, शिवपुरके सुख लूट ॥ ३९ ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि उत्तरार्द्ध कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
रजताचल भरतक विषैं, कूट वैश्रवण जानि ।
जिन चैत्यालय जिन यजों, द्रव्य सु वसुविधि आनि ॥४०॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि वैश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
ये नवकूट सुहावते, रजताचल सिर मोर ।
जिनग्रह जिनपद पूजिये, है शिवपुर मग ठौर ॥ ४१ ॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि नवकूटजिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

---

## अथ ऐरावत विजयार्द्धोपरि दक्षिण भरतक्षेत्र विजयारधवरपंचाशनगर जिनालय जिन-समुदाय पूजा ।

कवित्त–सवैया ।

विजयारध ऐरावतक्षेत्र जु विराजत हैं,
जाके सिर श्रेणी युगपरी अनसार जू ।
दक्षिण दिश ताके बीच शाश्वते,
जिनालय है रत्नमयी प्रतिमा विराजै सुखकारजू॥
पचास संख्या पुर परमित बखानी,
जिन पूजकरे खगपति द्रव्य ल्याय भरि थार जू ।
ध्यान धरे मुनिवर जहं यामैं गुन,
सुर नर जिनके पद कमल नैन नमै वारवार जू॥४२॥

ॐ-ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि दक्षिण श्रेणी भरतक्षेत्र विजयारधपंचासनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

कवित्त-सवैया।

ऐरावतक्षेत्र विजयारध मैं दूजी श्रेणी,
उत्तरदिशामें शाठिनगर गाए हैं।
जिन मंदिर प्रतिमा विराजै तिनमें,
महान जिनके पद पूजनको सुरनर खग धाए हैं॥
करे बहु नृत्य गान बने उत्सव महान,
महान जाप जपे धरे ध्यान तनमन हरपाए हैं।
तिनके चरणारविंद पूजैं वसु द्रव्य ल्याय,
वारवार शीश नाय परम सुख पाए हैं॥४३॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि उत्तरदिशि साठि नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

दोहा।

ऐरावत विजयार्द्ध, सत नगर दशोत्तर सार।
जिनमंदिर जिन प्रतिमा यजों, पूर्ण अर्घ समारि॥४४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि ऐरावतक्षेत्रस्थित तदुपरि दशोत्तर-शत जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

## अथ जयमाला।

दोहा।

विजयारध श्रेणी विषैं, पुरुष एक इक सार।
जिनमंदिर जिन बिंब तहं, वन्दौं शिवसुखकार॥४५॥

पद्धडी छन्द ।

जहं रतन भूमि सोहै सुढार, तहां पुष्प वाटिका लसै सार ।
विजयारधगिरि जिन राजगेह, ऐरावत गत वन्दौं सु तेह ॥
जिनमें प्रतिबिम्ब विराजमान, सुर खेचर यजन करते महान ।
सिंहासनस्थित जिनजगत भूप, वसु प्रातिहार्य शोभै अनूप ॥विज०
सिर छत्र तीन शोभै उदार, सित चमर ढलै जिम क्षीर धार ।
घंटा झालरि बाजै सुभाय, सुर सुरी निरति करती सु आइ ॥वि०॥
बाजत बाजे सब साज संग, वीना मृदंग मुहचंग चंग ।
गावैं सु तान सुर लेहि मान, जिनवदन निरखी हरपै महान् ॥वि०॥
ध्वजपंक्ति सोहै तिह विशाल, दस चिह्न सहित युत युक्त माल ।
ये वचनांदोलित गगन मांहि, भविजीवनको मानों बुलाहि । वि०॥
जह जयकार करंत देव, खेचर खेचरी जिन करत सेव ।
जह चारण मुनि करते विहार, उपदेश देहि हितमित उदार ॥वि०॥
भवि जीव सुनै मन हरप ल्याय, जिनपूजा थुति करते सु भाय ।
गुण गावै मन आनंद पाय, छवि नैन निरखि बलि बलि सुजाय ॥ वि०
विजयारध गिरि जिनराज गेह, ऐरावत गत वंदौं सु तेह ॥५१॥

घत्ता-दोहा ।

विजयारध उत्तरदिशा, पूजा भई विशाल ।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, पावै शिव दर हाल ॥ ५२ ॥

# अथ पूर्व विदेह पूजा।

गीता छन्द ।

मेरु पूर्व विदेह, षोडश क्षेत्र शास्वत जानियै।
नगरी परी षोडश जहां, षट्खंड भूमि वखानियै॥
सीता नदीतट उभय दिशि, बक्षारगिरि षोडश परै ।
तिन पर जिनालय शास्वते, जिनबिंब शोभित अति खरे॥
जहं जुगम तीर्थंकर विराजै, समोसरण विषै तहीं, ।
सुरनर खचर गनधर मुनीश्वर, त्रिजगपति पूजत सही॥
उपदेश देत सु भव्य जीवन, तरन तारन जिनवरौ ।
गुन गाय मन हरषाय तिनकौं, त्रिविध आह्वानन करौ॥५३॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहक्षेत्र षोडशनगरी षट्खंडमंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि शोभित तत्रवक्षारस्थ जिनालय जिन श्री मंदिर युगमंदिर पर्वतमान तीर्थंकरपुङ्गा अत्रागच्छागच्छ संवौषट् ठः ठः वषट् संनिधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चाल अडिल्ल छन्द ।

प्रासुक नीर सो क्षीरोदाधिको ल्याइये ।
कंचन झारी भराय सु जिनहि चढाइये ॥
श्री मंदिर युग मंदिर युग जिनवर यजौ ।
पूर्व विदेह निवास जासु निजपद भजौ ॥५४॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो जलं ।

मलयागिर चंदन घस सार सु गाइये ।
केशर मिश्रित रतन कटोरी धारिये ॥श्री०॥५५॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो चंदनं ।

चंद किरणसम तंदुल विमल पखारियै ।
प्रासुक जलकरि कंचनथारी धारियै ॥श्री०॥५६॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो अक्षतं ।

सुर तरुवरके धार पुष्प मनोहर अति खरे ।
पारिजाति मंदार जातके ले भले ॥श्री०॥५७॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो पुष्पं ।

मोदक फेनी सुहाली तुरत बनाइये ।
तातैं ताजे खाजे बहुविधि ल्याइयै ॥श्री०॥५८॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो नैवेद्यं ।

दीप रतनमय कंचन थाल सजोइयै ।
आरति कर जिनचरण मोहतम खोइयै ॥श्री०॥५९॥
ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमंदर युगमंदर जिनेभ्यो दीपं । -

अगर कपूर सु चदन चूरन ल्याइयै ।
धूप दहन बिच खेवत कर्म जलाइयै ॥श्री०॥६०॥
ॐ ह्रीं पूर्वविदेह श्री सीमंधर युगमंदर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

फल नारियेर छुहारे दाख मगाइये ।
श्री जिनचरण चढ़ाय मोक्षफल पाइये ॥श्री०॥६१
ॐ ह्रीं पूर्वविदेह श्री सीमंधर युगमंदर जिनालयजिनेभ्यो फलं ।

जल चंदन कुसुमाक्षित चरु दीप सु वारिये ।
धूप फलादिक अर्घ सु चरण चढ़ाइयै ॥
श्रीमंदिर युगमंदर जिनवर पद पूजौं ।
पूर्वविदेह निवास जासु नित पद जजौं ॥ ६२ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमंदिर युगमंदर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

---

## अथ पूर्वविदेह वक्षारगिर विजयारधसहित पूजा ।

दोहा ।

कक्षा देश विषै कही, क्षेत्रपुरी सुखकार ।
तहां जिनवर मुनिराज पद, पूजौं वसुविधि सार ॥६३॥
ॐ ह्रीं कक्षादिश क्षेमपुरी नगरी तत्र मुनिराज जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

कक्षादेश विषै मही, विजयारधगिर जानि ।
कूट सु नवपुर दश अधिक, शत जिन जजौं महान ॥६४॥
ॐ ह्रीं कक्षादेश विजयार्द्धगिर नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

देश सु कक्षाके विषै, महाक्षेत्र पुर ग्राम ।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजौं शिवसुख धाम ॥६५॥
ॐ ह्रीं सुकक्षादेश महाक्षेम पुर गत मुनिराज जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

चित्रकूट वक्षार गिर, कूट सु नव युत होय ।
जिनमंदिर जिनवर यजौ, वसुविधि अर्घ संजोय ॥६६॥

ॐ ह्रीं सुकक्षादेशचित्रकूटवक्षार गिर नवकूटसहित जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

देशु सु कक्षाके विषैं, रजताचलपर जान ।
दश विधि शतपुर कूट नव, पूजौं श्री भगवान् ॥६७॥

ॐ ह्रीं सुकक्षादेशविजयार्द्धनवकूट दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

देश महा कक्षा विषैं, पुर अरिष्ट वर गाय ।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजौं अर्घ बनाय ॥६८॥

ॐ ह्रीं महाकक्षादेशग्रहवतीविभंगानदीतत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

देश महा कक्षा, विजयार्द्धकूट नव जानि ।
नगर दशोत्तर शतक तह, पूजौं श्री भगवान् ॥७०॥

ॐ ह्रीं महाकक्षादेश अरिष्टपुर सम्बन्धी विजयार्द्धनवकूटदशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

सुन्दरी छन्द ।

देश कक्षावति सु जानियै,
रिष्टपुर तह नगर प्रमानियै ।
तहां जिनालय जिन मुनिपद जजौं,
अर्घ वसुविधि करि शिवसुख भजौं ॥७१॥

ॐ ह्रीं कक्षावती देश अरिष्टपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

देश कक्षावती विषैं कहा,
पद्मकूट वक्षार सु गिरि महा,
कूट नव युत परम पुनी तजौ,
तहांजिनालय जिनप्रतिमा यजौं ॥७२॥

ॐ ह्रीं कक्षावतीदेशपद्मकूटवक्षार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश कक्षावती विषै भलौ, मध्य विजयारध जना चलौ॥
पुरदशोत्तर शत नव कूट जहां, तहां जिनालय जिन पूजौं महा॥७३॥

ॐ ह्रीं कक्षावतीदेशअरिष्टपुरसम्बन्धी विजयारधनवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक शुभ जानिये, पुरी खड्ग सु नाम वखानिये।
जिन महामुनिराज विराज ही, जजै जिनपद सब दुख भाजही॥७४

ॐ ह्रीं आवर्तक क्षेत्र खड्गपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक हरयावती, नदी पूरन निर्मल जल भृती।
तासु तट जिन मंदिर जिन जजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैंसजौं॥७५

ॐ ह्रीं आवर्तक क्षेत्रगत हृदयावती नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक विच सोहए,
रौप्य गिरवर जन मन मोहए।
कूट नव सु दशोत्तर शत नगर जजौं,
जिनगृह जिन प्रतिमा खरी॥ ७६॥

ॐ ह्रीं आवर्तक क्षेत्र मध्य खडगपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डमण्डित नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र लांगल वर्त्तक नाम है,
पुरी मंजूषा शुभ तहं ठाम है।
जिन जिनालय जिनपद पूजिये,
मन सु वच तन है हरषित हूजिये॥ ७७॥

ॐ ह्रीं लांगलावर्त्तक क्षेत्र मंजूपापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

देश लांगल वर्त्तकके विषैं,
नलि नवक्षार गिरि श्रुति लिषैं ।
कूट नव जिस ऊपर राज ही,
जजौं जिन प्रतिमा सव दुख भाजही ॥७८॥

ॐ ह्रीं नलिनवक्षार नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

देश लांगल विच विजयार्द्धगिरि,
कूट नव सोहे ताके ऊपरि ।
पुर दशोत्तर शत जिनगृह जजौं,
जिन जलादिक लै वसुविधि सजो ॥ ७९ ॥

ॐ ह्रीं लांगलावर्त्त क्षेत्रगत मंजूपापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डमण्डित नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

क्षेत्र पुष्कल नाम सु गाइये,
चोख धान पुरी जहं पाइये ।
जहां जिनालय जिन मुनिरायकै,
पद जजौं वर अरघ बनायकै ॥ ८० ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलक्षेत्र औषधान्यपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

क्षेत्र पुष्कल विच सरिता वही,
नाम पंकावति जिनवर कही ।
है विभंगा सु तट विच जही,
मुनि जिनालय जिन पूजै सही ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलाक्षेत्र मध्यगत त्रिभंगा नदी पंकावती तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश पुष्कलक्षेत्र विषैं परो,
नाम विजयारधगिरि जिस खरो।
कूट नव सु दशोत्तर शतपुरी,
जिन जिनालय पूजत सुरसुरी ॥ ८२ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलक्षेत्रगत औषधानपुर सम्बंधो विजयार्द्धों नवकूट दशोत्तरशतनगर तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुष्कलावति देश विषे कहीं,
पुंडरीकीनी नाम प्रगट सही।
पुरी तह जिनग्रह जिन मुनि यजो,
अर्घ दो जिनचरण सदा भजो ॥ ८३ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलावती देश पुंडरीकिनी नगरी जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

पुष्कलावती क्षेत्र विषै कह्यौ,
एक गिरि बक्षार सुभग लह्यौ।
कूट नव जिनग्रह जिन पूजतैं,
ले जलादि छूटैं वसु कर्मतैं ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं एक शैल वक्षारनवकूट जिनालय जिनप्रतिमा अकृत्रिम जिनेभ्यो अर्घ।

पुष्कलावती देश विषैं भलो,
कूट नवयुत है रजताचलो।

पुर दशोत्तर शत जिनग्रह विषें,
पूजिये जिन आकृति श्रुत लिखें ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलावतीदेश पुंडरीकनी नगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध मंडित नवकूट दशोत्तरशत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

वत्स देश सुसीमा नगर है,
शिवपुरीकी जो मानो डगर है ।
तहां जिनालय जिन मुनिराजके,
चरण पूजौं वसु द्रव्य साजिकै ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश सुसीमानगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

वत्स देश विषें वक्षार गिरि,
नाम जासु त्रिकूटाचल शिखिरि ।
तहं जिनालय जिन प्रतिमा जजो,
अर्घ कर वसुविध तिन पद जजो ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश त्रिकूटाचल वक्षारगिरि नवकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

वत्सदेश विषें विजयार्द्ध जो,
है सुसीमापुर करि सार्द्ध जो ।
कूट नव शत पुर दश अधिक है,
तह जिनालय जिन यजि अघ दहै ॥ ८८ ॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश सुसीमानगर सम्बंधी विजयार्द्ध नवकूट दशोत्तरशत नगर षट्खण्ड मंडित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

पुण्य क्षेत्र सु वत्स वखानियौ,
नगर कुंडलपुर वर जानियौ।
तहां जिनालय जिन मुनि चरणकी,
पूज करिये सब दुःख हरणकी॥ ८९॥

ॐ ह्रीं सुवत्सक्षेत्र कुण्डलपुरनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुनि सु वत्सक देश विषैं कहीं,
तप्त जलासु सरिता है सही।
तसु विभंगा तट जिनधाम वर,
जिन जलादिक लै पूजौं सुघर॥ ९०॥

ॐ ह्रीं सुवत्सदेश गत तप्तजला विभंगा नदी तटस्थ जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वर सु वत्सक देश विषै परौं,
रोप्यगिरि वैताडलसे खरौ।
पुर दशोत्तर शत नवकूट युत,
यजौं जिनग्रह जिन सुर असुर नुत॥ ९१॥

ॐ ह्रीं सुवत्सक्षेत्र कुंडलपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध पर्टमंडित नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

महावत्सक क्षेत्र विषै परी,
पुरी अपराजित वसै खरी।
तहां जिनालय जिन मुनिराजके,
चरण पूजौं वसु द्रव साजके॥ ९२॥

ॐ ह्रीं महावत्साक्षेत्रगत अपराजितपुरी तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

महावत्सक क्षेत्र विषें परौ,
वैश्रवण वक्षार सु भूधरौ ।
कूट नव संयुक्त सु सारजू,
जजौं तहां जिनवर हिय धारजू ॥ ९३ ॥

ॐ ह्रीं महावत्सक क्षेत्रगत वैश्रवण वक्षारगिर नव कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

महावत्सक देश विषें कहा,
तारगिरि व भूधर शुभ महा ।
कूट नव शतपुर दशधिक तथा,
तहां जिनालय जिन पूजौं यथा ॥ ९४ ॥

ॐ ह्रीं महावत्स देशगत अपराजितपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डमण्डित दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

वत्सकावति देश सु बनी,
पुरी प्रभंकराय न भावनी ।
तहां जिनालय जिन मुनि चरण जुग,
पूजते जु कटे संसार रुग ॥ ९५ ॥

ॐ ह्रीं वत्साकावती देशगत प्रभंकरापुरी तत्र जिनालय जिनमुनिभ्यो अर्घं ।

वत्सकावती देश सु मध्यगत,
मत जलाजु सरिताके सु तट ।
तहं जिनालय जिन प्रति पूजियै,
वचन तन मन हरषित हूजियै ॥ ९६ ॥

- ॐ ह्रीं वत्सकावती देशगत मत जलादि नदी तीर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

वत्सकावती देश विषैं परौ,
तारगिर वैताड लसै खरौ ।
कूट नव शतपुर दश अधिक यहां,
तहां जिनालय जिन पूजौं सु महा ॥ ९७॥

ॐ ह्रीं वत्साकावतीक्षेत्रगत प्रभंकरापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

क्षेत्र रम्यक सम्यक जानिये,
तहां सु-अंकापुरी प्रमानिये ।
जिन जिनालय फुनि मुनि पूजिये,
जासु फलकरि सुरपति हूजिये ॥ ९८ ॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र अंकापुरी जिनालय जिनेभ्यो अर्घ ।

क्षेत्र रम्यक गत वक्षार गिरि,
नाम अंजन हैं ताकैं ।
ऊपर कूट नवपर जिनग्रह जह लसै,
पूज जिनपद सुर पुरमैं वसैं ॥ ९९ ॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र अंजनवक्षारगिर नवकूट जिनायलजिनेभ्यो अर्घं ।

देश रम्यक गत वैताड पर,
कूट नवपुर शत दश अधिक वर ।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा अरचियै,
द्रवि वसु विधि करि धन खरचियै ॥४००॥

ॐ ह्रीं रम्यकदेश अङ्कापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खंडमंडित नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सुर रम्यक वरक्षेत्र विषैं वसै,
नाम पद्मावतीपुरी लसै ।
तह जिनालय जिन मुनिराज पद,
यजो अर्घ सु वसुविधि करि सुभद ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं रम्यकदेश पद्मावतीपुरी तत्र जिनालय जिनमुनिभ्यो अर्घं ।

सु रम्यकवर क्षेत्र विषैं वही,
नामकरि उन्मत्त जला कही ।
नदी तसु तट जिनग्रह जानिये,
पूजि चैत्य परम सुख मानिये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सु रम्यक क्षेत्र गत उन्मत्त जलादि नदी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सुरम्यकवर देशविषै कहा,
तारगिर नव कूट लसै जहां ।
पुर दशोत्तर शत श्रुतमैं लिखै,
जिन जिनालय पूजौं तजि विषैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सुरम्यादेश पद्मावतीपुरी संबन्धी विजयार्द्ध नवकूट दशोत्तरशत नगर षटखंड मंदिर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

देश रमणीय कइक सार है,
पुरी सुभापुरी सुखकार है ।
तहां जिनालय जिन मुनि पूजि करि,
अर्घ वसुविधि भवदुख हरि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं रमणीय देश शुभापुरी नगरी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश रमणीयक बक्षार गिरि,
नाम आदरसन ताके शिखिरी ।
नव कहै जिनमंदिर जिन जजौं,
अर्घ वसुविधि ल्याय सु पद भजौं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं रमणीय देश आदरसनवक्षारगिरिकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

देश रमणीयक बिच जानियै, चंद्रहासकगिरि पहचानियै ।
कूट नवशत ग्रुदश करि अधिक, तहं यजौं जिन मनवचशुद्धत्रिक।६॥

ॐ ह्रीं रमणीय देश शुभापुरी सम्बन्धी विजयारध षट्खंड मंडित नवकूट दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

मंगलावती देश सु देखियै, रत्नपुर संचय तह लेखियै ।
तह जिनालय जिन पूजा करौ, अर्घ दे मुनि मुनिपद चित धरौ ॥७॥

ॐ ह्रीं मंगलावती देश रत्नसंचयपुरी तत्र जिनालय जिन-मुनीन्द्रेभ्यो अर्घं ।

मंगलावती क्षेत्र विखै परौ, कूट नव युत विजयारध लहौ ।
पुर दशोत्तर शत जिनराजग्रह, यजौं जिन प्रतिबिंब मनोगतह । ८॥

ॐ ह्रीं मंगलावती देश रत्नसंचयपुरी सम्बन्धी विजयारध षट्खण्डै मंडित दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

कवित्त स० ।

पूरब विदेह विषैं कक्षादिक देश,
वरस षोडश परै हैं जह जिन गेह राज ही ।

क्षेमादिकपुरी मांहि वसे राजधानी बीच,
　　जिन गेह जिन दर्श देखे दुख भाज ही ॥
चित्रकूट आदि वक्षार वसु कूट नव,
　　जुक्त जिनग्रेह जिन पूजे जिन सरै सर्व काजही ॥९॥

ॐ ह्रीं विदेह पूर्वदिश कक्षादिक षोडशदेश षोडश विजयार्द्ध षोडश नगर अष्ट वक्षार गिर सर्व जिनालय जिन बिंबेभ्यो पूर्णार्घं ।

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जे केवल दिनकर वर मोह तिमिरि हरं,
　　भव्य कमल पर कासन भासण जग धरं ।
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा,
　　जै जै जै कृत सुकृतनमै भवि सर्वदा ॥

छन्द पद्धडी ।

जै महाघाति विधि विघनचक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र ।
गिरि सिद्धकूट दह चैत्यगेह, जिन बिंब नमौं पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापन, कीय चरनन मोहीय धरौं ध्यान ।। गिरि०
सुरनर मुनि गति नित करत सेव, लक्षण वसु शततनु सहित एव ।
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥ गिरि०
जय सदा कोट रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत । गिरि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृप गण भविजन मन करत पाद ।। गि०

जय पुण्य क्षेत्र संचरन शील, जय प्राणि घात वर्जित सु शील॥गिरि०
जय सुरग मुकत पद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको अनंत ॥ गिरि०
वसु गुण रतननिके हैं भण्डार, जैवंते वरतौ जग मंझार ॥ गिरि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमौ पद कमल तेह ॥गि०

घत्ता—दोहा ।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि ।
तिन बीच जिन प्रतिमा, चरण नमो जोरि जुग पांनि ॥

अडिल्ल छन्द ।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजौं, मन वचन तन चावसौं ।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिरि मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर, हरि प्रमुख पदवी पाइयै ।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सु जिन गुण गाइयै ॥

इत्याशीर्वाद ।

इतिश्री सिद्धकूट चैत्यालयकी जयमाल सम्पूर्णम् ।

# अथ पश्चिम विदेह पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

अपर विदेह मजान षोडश नगरी जहां,
फुनि विजयारध गिरि षोड़श सोहै तहां ।
बाहु सु बाहु युगम जिनमन्दिर है तथा,
जिन आह्वानन करो त्रिविध करिकै यथा ॥१८॥

ॐ ह्रीं ऊपर विदेह षोडश क्षेत्र षोडश नगरी षट्खण्ड मण्डित षोड़श विजयार्द्ध वसु वक्षारगिर नवकूट सहित जिनालय जिन प्रतिमा तत्र तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि शोभित सुगम तीर्थंकर वरतमान बाहु सुबाहु स्वामि अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

गीता छन्द ।

लै सुर सरियको सलिल शीतल, सरस झारीमें भरो ।
जिनचरण युगपर क्षालि भविजन, जनम मरण विथा हरो ॥
श्री बाहु और सुबाहु ऊपर, विदेह जिन जु विराजही ।
तिनके चरण पूजों सदा, नित होहि सुख दुख भाजही ॥१९॥

ॐ ह्रीं बाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो जलं ।

लै मलयागिर घन सार, केशर सलिल संग बहु गारियै ।
खकरो अलिल अमोद वश, जिस मणि कटोरी धारियै ॥
श्री बाहु औ सुबाहु, अपर विदेह जिन जु बिराजही ।
जिनके चरण पूजौं सदा, भवि होहि सुख दुख भाजही ॥२०॥

नव सरस शालि अखण्ड तंदुल,
विमल जल पखालिये।
करि चन्द किरन समान निरमल,
स्वर्ण थाली धारिये॥ श्रीबाहु० ॥२१॥
ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं।
लै कनक कुसुम सुर जुत मय,
फुनि अमर तरुके ल्याइये।
जिन चरण अग्र चढ़ाय भविजन,
मदन बान नसाइये॥ श्रीबाहु० ॥२२॥
ॐ ह्रीं अपर विदेहगत श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।
पकवान घृत पूरित तुरतके,
विविध भांति बनाइये।
लै स्वर्ण थाली धार भविजन,
चरण अग्र चढ़ाइये॥ श्रीबाहु० ॥२३॥
ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।
लै रतन दीप समीप जिनपद,
आरती कर भावसो।
शुभ ज्ञान ज्योति प्रकाशि भविजन,
अमरपुर घर जावसौ॥ श्रीबाहु० ॥२४॥
ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो दीपं।
बहु शिलाजिती असित अगर,
करपूर चंदन लै धरै।

विच धूप दहन सु खेइ,
धूमा मनिनीके मन हरैं ॥ श्रीबाहु० ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो धूपं।

लै फल मनोग सु भोग जो मन,
हरन नासा दृग सही।
बादाम पिस्ता, जाय फर,
फासु सुफल फल जिन कही ॥श्रीबाहु०॥२६

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो फलं।

लै नीर सीर गो खीर खादिक,
द्रव्य थारी विच धरौं।
मनु हारि करि उतार जिनपद,
भक्तिवश है थुति करौं ॥ श्रीबाहु० ॥२७॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

पद्मदेश बिच सार, पुरी स्वपुरी है सही।
पूजौं जल फल धार, चरन सु जिन मुनिराजके ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं सीतोदा दक्षिण तट पद्मदेश स्वपुरी मध्यगत जिन मुनीन्द्रेभ्यो अर्घं।

पद्मदेश वक्षार कूट, सु नव जुत जिन कह्यौ।
श्रद्धावान विचार नाम, जासु जिन प्रति यजौ ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं पद्मदेश श्री आह्वानन वक्षार नव कूटजिनेभ्यो अर्घं।

पद्मदेश वैताड़ कूट, सु नव सिर सोहियो।
पूजौं जिन सुखकार, नगर दशोत्तर शत विषैं ॥ ३० ॥
ॐ ह्रीं पद्मदेश विजयारधपर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश सुपद्म पिछानि, सिंघपुरी नगरी भली।
पूजौं शिव सुखदानि, जिनमुनि वसुविध अर्घ लै॥ ३१ ॥
ॐ ह्रीं सुपद्मक्षेत्रगत सिंहपुरी जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र सुपद्म मझार, सीतोदा सरिता वरौ।
तसु तट जिनग्रह सार, वसुविधिकरि जिनवर जजौं ॥३२॥
ॐ ह्रीं सुपद्मक्षेत्रगत क्षीरोदा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र सुपद्मक मांहि, विजयारध गिरि है भलौ।
पुर दश शत तिहि ठाहि, तह जिनग्रह जिन पूजियै ॥३३॥
ॐ ह्रीं शिवपुरी सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महापद्मवर देश, महापुरी राजै परी।
पूजैं अमर नरेश, चरन सु जिनमुनिराजके ॥ ३४ ॥
ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्रगत महापुरीमुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महापद्म शुभ ठानि, विजयारध नाम वक्षार है।
पूजौं जिन सुखधाम, जिनग्रह जिन आकृति भलै ॥३५॥
ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्र विजयनाम वक्षारगिर नवकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महापद्म शुभ सार, देश विषैं रजता चलौ।
जिन पूजौं सुखकार, पुर दश अरु शत कूट नव ॥३६॥

ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्र महापुरी सम्बन्धी विजयारध जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

पद्मकावती देश, विजयानगरी जानियै ।
अघको रहे न लेश, पूजौं जिन मुनिराजके ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेश विजयानगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

पद्मकावती देश, सीतोदा सरिता परा ।
पूजौं चरन जिनेश, पुलिन जिनालयके विषैं ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेश मध्य सीतोदानदी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

दोहा ।

पद्मकावती देश बिच, विजयारध गिर सार ।
षष्ठि शतार्द्ध सुकूट नव, जिन पूजौं सुखकार ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावती देशविषैं विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

पुन्य देश संख्यावर, रजतापुरी वखांन ।
तहां जिनवर मुनिराज पद, यजौं अल्प वसु आनि ॥४०॥

ॐ ह्रीं संख्याक्षेत्र रजतापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

आशीविष वक्षारगिर, संख्या क्षेत्र मझारी ।
कूट सु नव जिनग्रेह, जिन पूजौं गगन अधार ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं संख्याक्षेत्रगत आशीविष वक्षार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

शंखदेश वैताडगिरि, कूट सु नव जिनग्रेह ।
नगर दशोत्तर शतविषैं, पूजौं जिन धरि नेह ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं शंखादेश रजतापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

नलिन नाम सुन क्षेत्र बीच, विरजानगरी जाय ।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजौं अर्घ चढाय ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं नलिनाक्षेत्रगत विरजानगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

नलिनादेश विषैं नदी, श्रोतो वहा सुभाय ।
तासु सु पुलिन जिनराजग्रेह, पूजौं जिन सुखदाय ॥४४॥
ॐ ह्रीं नलिना देशगत श्रोतोवहा नदी जिनालयाजिनेभ्यो अर्घं।

नलिन देश तेरा चलो, कूट सु नव जिनग्रेह ।
नगर दशोत्तरके विषैं, पूजौं जिन गुण नेह ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं नलिनादेश विरजानगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध दशोत्तरशतनगरी नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

कुमुद क्षेत्र आशोकपुर, जहं लक्ष्मीको वास ।
पूजौ जिन मुनि चरण युग, मन धरि परम हुलास ॥४६॥
ॐ ह्रीं कुमुदक्षेत्र आशोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

आनि परौं वक्षारगिरि, कुमुदक्षेत्र निवास ।
जिनमंदिर नवकूट पर, पूजौं जिन अघ वास ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं कुमुदक्षेत्रगत वक्षारगिरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

कुमुदाक्षेत्र विषैं कह्यो, विजयारध जिन धाम ।
कूट सु नवपुर दश अधिक, शत जिन ज ौं सु ठाम ॥४८
ॐ ह्रीं कुमुदाक्षेत्र आशोकपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

सरिता क्षेत्र विषै सुगत, शोकपुरी बिच जानि ।
जिनमंदिर जिनराज पद, पूजौं उर धरि ध्यान । ४९॥

ॐ ह्रीं सरिताक्षेत्र वीतशोकपुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सरितादेश विषैं सही, विजयारध नव कूट।
नगर दशोत्तर शत यजौं, जिनग्रह जिन सुखलूट ॥५०॥

ॐ ह्रीं सरितादेश विजयारधनगर दशोत्तरशत जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वप्रादेश विषैं तथा, नाम विजयपुर ग्राम।
तहं जिनमंदिर जिनचरण, पूजौं शिव सुख-धाम ॥५१॥

ॐ ह्रीं वप्रादेश विजयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वप्रादेश विषैं परो, नाम तारगिर चारु।
जिनमंदिर जिनवर यजौं, कूट सु पुर विच सार ॥५२॥

ॐ ह्रीं वप्रादेश विजयपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

शुभ सु वप्रादेश बखानिये, वैजयंती नगरी जानिये।
तहं जिनालय जिन पूजा करौं, द्रव्य ले वसु थाल विषैं धरौं ॥५३॥

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश वैजयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

वप्रा सुवर देश विशाल है, जहँ वक्षार सु गिर शशिमाल है।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा इजो, कूट नवपर जिनवरपद जजौं ॥५४

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश शशिमाल वक्षारगिरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुवप्राख्य सु देश लसै खरौ, जहं सु भूधर विजयारध परौ।
नवकूट सु दशोत्तर शतपुरी, यजौं जिनग्रह नावैं सुरसुरी ॥५५॥

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश वैजयंतीपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महावप्रादेश विषैं लसै, जयंतीनगरी सुरपुर हसै ।
जहं जिनालय जिन मुनिराजके, यजौं पद अघ जा'ह सु भाजिके ॥

ॐ ह्रीं महावप्रादेश जयंतीनगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

महावप्रादेश विषैं कही, गन्धमादन नाम नदी वही ।
तासु तट जिनमंदिर जानिये, पूजि पद 'जनवर सुख मानिये ।।५७

ॐ ह्रीं महावप्रादेश गन्धमादन नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

महावप्रादेश मझार है, नाम विजयारधगिरि सार है ।
कूट नव शतपुर दश अधिक जहां, तहं जिनालय जिन पूजौं महा ॥

ॐ ह्रीं महावप्रादेश जयंती नगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

क्षेत्र गंधल नाम वखानियै, पुरी चक्रायुध ह्वासु प्रमानियै ।
तहं जिनालय जिन मुनिवर यजौं, अर्घ वसुविधि थाल विपैं सजौं।.५९

ॐ ह्रीं गंधिलक्षेत्र चक्रापुरी जिनालय जिनेभ्यो अर्घ ।

क्षेत्र गंधा बिच वक्षारगिरि, कूट नव राजै जाकै शिखिरी ।
तहां जिनालय जिन पूजौ सदा, अर्घ वसुविधिल्याय सु करि मुदा।.६०

ॐ ह्रीं गंधाक्षेत्र चक्रापुरी सम्बन्धी सूर्यवक्षारगिरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

देश गंधा बिच रजता चलौ, कूट नवयुत राजतु है भलौ ।
पुर दशोत्तर शत जह सोहए, यजौ जिनग्रह प्रतिमन् मोहए ।। ६१॥

ॐ ह्रीं गंधादेश चक्रापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

सुगन्धावरक्षेत्र खड्गपुरी, तहां जिनालय जिन प्रतिमा खरी।
पूजपद भविजिन मुनिराजके, अर्घ लै वसुविधि द्रवि साजके॥६२॥
ॐ ह्री सुगंधाक्षेत्रगत खड्गपुरी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
सुगंधावरक्षेत्र विषे कही, फेन मालिन सरिता है सही।
पुलिनगत जिन मंदिर जासुके, यजौ जिन प्रतिमा पद तासुके॥६३
ॐ ह्री सुगंधक्षेत्रगत खड्गपुरी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
मध्य गंधिल क्षेत्र सुहावनी, जहं अजोध्यापुरी सुहावनी।
तहं जिनालय जिन मुनि पद जजौं, अर्घ करि फुनि गुण ग्रामें भजौ॥
ॐ ह्री गंधिलक्षेत्रगत अजोध्यापुरी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
क्षेत्र गंधिल विच भूपर परो, नागभिध वक्षार सुगिर खरौ।
तहां जिनालय जिन नवकूटपर, यजौ वसुविध अर्घ बनायकर॥६५॥
ॐ ह्री गंधिलक्षेत्र नागभिधवक्षारजिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
मध्य गंधिल क्षेत्र विषै परो, कूट नवयुत विजयारध गिरो।
तहं जिनालय जिन पूजा करो, जिन सु पूरव दुकृतको हरो॥६६॥

ॐ ह्री गंधदेश अयोध्या सम्बंधी विजयार्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महागन्धादेश विषैं परी, हैं अजुध्यापुरी सु दूसरी।
तहं जिनालय जिनपद पूजिये, जासु फल करि सुरपति हूजिये॥६७

ॐ ह्री महाक्षेत्र गन्धागत अजोधापुरी दूसरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महागन्धाक्षेत्र मझार है, उर्मिमालिनि नदी सु ठार है।
तहं पुलिनगत जिनमन्दिर सही, पूजि वसुविध जिनप्रति सुख मही॥

ॐ ह्रीं महागन्धाक्षेत्रगत उर्मिमालिनि नदीतट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

महागंधाक्षेत्र विषैं परौ, तारमय विजयारध भू धरौ।
श्रेणि द्वय नवकूटनके ऊपरि, यजौ ।जनपद वसुविध अर्घ धरि॥६९

ॐ ह्रीं महागंधा क्षेत्रगत अवध्या सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

गन्धमालिनि क्षेत्र सु ठौर है, शुभपुरी नगरी तहं जोर है।
सरस शोभित जिनमन्दिर जहां, पूजि वसुविधि जिनप्रतिमा तहां॥

ॐ ह्रीं गंधमालिनि शुभपुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

गंधमालिनि देशविषैं जु है, देवगिरि वक्षार सु नाम है।
कूट नव जहं जिनमन्दिर लसै, यजौ जिन आकृति वसु द्रव्यसै॥७१

ॐ ह्रीं गंधमालिनि क्षेत्रगत देवगिरि नाम वक्षार तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

गंधमालिन देश मझार, भल रजतमय विजयारध है।
अचल कूट नव सु दशोत्तर शत पुरी,यजौं जिनप्रतिमा वसुविधि खरी

ॐ ह्रीं गन्धमालिनि देशगत विजयार्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

दोहा।

जम्बूद्वीप विदेह जुग, भरथैरावत थान।
भाषै जिन उत्कृष्ट करि, चौतिस चहुँदिशि जान॥७३॥
पूरब ऊपर विदेह जुग, है जघन्य करि तेह।
वर्तमान प्रणमौ सदा, मन वचन क्रम करि येह॥७४॥

## अथ जयमाला।

छन्द-अडिल्ल।

जय केवल दिनकर वर मोह तिमिर हर।
जे भव्य कमल परकाशन, भासन जग धरन॥
जै चिन्मय सुंदर विनत, पुरंदर पद सदा।
सुन तिनकी जयमाल, कहूं धारि चित मुदा॥

पद्धडी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमों पदकमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरन नमो हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अँग शोभै सु भाय॥गि०
जय सदा कोटि सर्व द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संवरनसील, जय प्रातिघात वर्जित सुशील। गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, यह शर्म्म वीर्य जिनकौं न अंत॥गि०
वसु गुण रतननुके है भंडार, जैवंते वरतो जग मझार॥गि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह॥गि०

घत्ता दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिनप्रतिमा चरण, नमो जोरि जुग पांन॥

अडिल्ल छंद ।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसौं ।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिर मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये ।
ते होय तुमकौं सदा जयवंते सु जिन गुन गाईये ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति सिद्धकूट चैत्यालयकी जयमाल संपूर्ण ।

---

# अयोध्यानगरी सम्बंधी अतीत अनागत वर्तमान पूजा ।

छंद गीता ।

मेरु दक्षिण भाग, भारतक्षेत्र अधिक सुहावनों ॥
षट्खंड मंडित पूज्य पंडित, सुरनरन मन भावनों ॥
हिमवंत अरु वैताड गिरि, युग नदी कर शोभित तदा ।
जिनतीतनागत वर्तमान, करौं सु आह्वानन मुदा ॥८३॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सुकोशलदेशगत अयोध्यानगरी सम्बंधी अतीतानागत वर्तमान अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वाननं । ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संन्निधीकरणं ।

## अथाष्टक ।

चाल जोगीरासाकी ।

आज तासतरास फल अड़कनुरी जिनवद ध्यावत हैं मैं अति इस चालमैं ।

गंगाजल भरि आनि छानि करी, झारि रतन जटाय ।

जिनगुण गाय जाय ल्याय उर, बहु विधि भक्ति चढाय सु जिन-पद पूजिये मेरे मीत ॥ मेरू सुदरशन भारत सारथ । आरजखंड बखानि, नगर विनीतातीतानागत वर्तमान जिन जान सु जिन पद पूजिये ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखंड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो जलं ।

मलियागिर केसर चन्दन घिसि, रतन कटोरी धारी ।
मन वच काय चढ़ाय चरण जिन, भव आताप निवारी ॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत ॥ मेरु० ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखंड अयोध्यानगर संबन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो चन्दनं ।

मुक्ताफलसम सालि अखण्डित, उज्जल नीर प्रक्षालि,
मन वच काय चढ़ाय चरन जिन ।
भव आपद सब टालि, सु जिन पद पूजिये ॥ मेरु० ॥८६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं ।

कुसुममनोहर सुरतरु केवर रजतकनकमय ल्याय ।
मन वच काय चढ़ाय चरन जिन मदन बाण नसि जाय ॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत ॥ मेरु० ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।

नासा दृगवश करन हरन मन पोषन इंद्री पांच।
श्री जिन चरण चढ़ाय भविकजन, नसै क्षुधा दुख साच॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ८८॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिण दिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।

मणिमय दीपक ल्याय अमोलिक, ज्योति रतनमय धारि।
आरतिकर जिन चरणकमलकी, मोह तिमिर निरवारि॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ८९॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिण दिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो दीपं।

अगर कपूर सुगन्ध दशो धरि, धूप दहन बिच खेव।
जिनके चरणकमलके आगे, करजोरों स्वयमेव॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ९०॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो धूपं।

फल फासूखवर लै अति सुन्दर, लोग लायची सेऊ।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, तुरत मुकतफल लेहु ॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत ॥ ९१ ॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो फलं।

जल फल अर्घ बनाय गाय गुण, मन वच काय लगाय।
श्री जिनचरण करो भवि पूजा, स्वर्ग मुकति फलदाय ॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत ॥ ९२ ॥

ॐ ह्रीं सुदरशनमेरु दक्षिणदिश भरततक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौवीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत आरजखण्ड वखानि।
नगर विनीतातीतानागत, वर्तमान जिन जानि ॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत ॥ ९३ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु भारतक्षेत्र आरजखण्ड विनीतानगर सम्बन्धी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो अर्घं।

इति समुदाय पूजा।

---

## अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

जंबू भारत क्षेत्र, प्रथम तीर्थ निर्वाग है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजों ॥९४॥

ॐ ह्रीं निर्वाणदेवाय अर्घ्य ॥ १ ॥

जम्बू भारत क्षेत्र, सागर नाम जिनेश है।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥९५॥

ॐ ह्रीं सागर जिनेशाय अर्घ्य ॥ २ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, महासाधु जिनवर कहे।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ९५ ॥

ॐ ह्रीं महासाधु जिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र नाम, विमलप्रभ है सही।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥९६॥

ॐ ह्रीं विमलप्रभाय अर्घ्य ॥ ४ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, श्रीधर नाम सु जानिये।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥९७॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घ्य ॥ ५ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, दत्तदेव जिन नाम है।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ९८ ॥

ॐ ह्रीं दत्तदेवाय अर्घ्य ॥ ६ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, अमल प्रभू जिनराज ही।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥९९॥

ॐ ह्रीं अमलप्रभाय अर्घ्य ॥ ७ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, शुद्ध प्रभु जिनवर भले।

जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५००॥

ॐ ह्रीं शुद्धप्रभाय ॥ ८ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, उद्धारक जिनराज है ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥ १॥
ॐ ह्रीं उद्धारकाय अर्घं ॥ ९ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, अग्निदेव जिनराज हैं ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अग्निदेवाय अर्घं ॥ १० ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, संयम तीर्थंकर भये ।
जल फल ल्याय पवित्र. तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं संयम तीर्थंकराय अर्घं ॥ ११ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, शिव जिनवर परमानियैं ।
जल फल ल्याय प'वत्र, तीत जिनेश्वरपद ज.ौं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं शिवजिनालय अर्घं ॥ १२ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, ज्ञान जिनेश्वरपद भजौं ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, पुष्पांजलि जिनवर प्रभु ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं जलिजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, श्री उत्साह जिनेश हैं ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं उत्साह जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, परमेश्वर जिन नाम है ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घ ॥ १६ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थंकर जितशत्र है ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं जितसत्रवे नमः अर्घ ॥ १७ ॥

जंबू भारतक्षेत्र, नाम विमल जिनवर कह्यौ ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौ ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं विमलजिनालयाय नमः अर्घ ॥ १८ ॥

जंबू भारतक्षेत्र, तीर्थ जसोधरसंज्ञ है ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौ ॥१०॥
ॐ ह्रीं जसोधराय नमः अर्घ ॥ १९ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, ज्ञानामृत जिन जानिये ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानामृताय नमः अर्घ ॥ २० ॥

जंबू भारतक्षेत्र, तीर्थ विशुद्धमतिस्तथा ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं विशुद्धमतये नमः अर्घ ॥ २१ ॥

जंबू भारतक्षेत्र, शांतिदेव जिनराज है ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥१३॥
ॐ ह्रीं शांतिदेवाय नमः अर्घ ॥ २२ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थ भद्र मति जहं भरा ।
जल फल ल्याय पवित्र. तीत जिनेश्वरपद जजों ॥१४॥
ॐ ह्रीं भद्रमतगाय अर्घ ॥ २३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, कृष्ण अन्त जिनवर भयौ ।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजों ॥१५॥
ॐ ह्रीं कृष्णदेवाय अर्घ ॥ २४ ॥

दोहा ।

सब तीर्थंकर तीत ये, निर्वृतिपद दातार ।
भव्यनकौं तिन पद यजों, पूरण अर्घ सम्हार ॥ १६ ॥

इति पूर्णार्घम् ।

## अथ जयमाला ।

छन्द–अडिल्ल ।

आदि श्री निर्वाण, कृष्ण पर्यंत ये ।
जम्बू भारयक्षेत्र, तीत अरहंत ये ॥
गुण गणलंकृत गणि मुनि, वंदित पद सदा ।
मति माफिक जैमाल, करो तिनकी मुदा ॥१४॥

पद्धडी छन्द ।

जय जय निर्वाण सुदेव देव, त्रिदशाधिप जिनपद करत सेव ।
जय सागर गुण आगर महान, भवि जीवनको कीनौ कल्याण ॥
जय महासाधु विधि वैराधि, भये शिवधव आराधन आराधि ।
जय जय श्री विमलप्रभ जिनेश, जिनकी दुति लषि लाजत दिनेश ॥

जय शुद्ध भाक जिन शुद्ध वाक, गुण कथन करत गणधर सु थाक ।
जय जय श्रीधर श्रीधर महान, भये शिवतिय प्रति लहि तुरिय ज्ञान ॥
जय दत्तदेव जिन दत्तदेव, पशु आदिक जुतयुत करत सेव ।
जय अमल प्रभ महिमा निधान, अमलान सु गुण जिनके महान ॥
जय उद्धारक तीर्थंकर सुभाय, उद्धारक भविदधि तै सु गाय ।
जय अग्निनाथ सुर नमित माथ, जाले अघरिपु वसु कर्म साथ ॥
जय संयम संजम धरन धीर, भव्यनु संजम दायक सु वीर ।
जय शिव जिन शिव कामिनी कंत, शिवपुर निवास कीनौ महंत ॥
पुष्पांजलि निर्जित पुष्पवान, पुष्पांजलि करि पूजत महान ।
उत्साह देव हत कर्म जाल, उत्साह भविनको देत हाल ॥
परमेश्वर जिनको नाम गाय, परमेश्वर पददायक सुभाय ।
जय ज्ञान जिनेश्वर नाम धार, ज्ञानावर्णादिक कर्म हार ॥
जय जय जयारि जिन नाम सार, जय विमल अमल जस जग विथार ।
जय जय ज्ञानामृत विगत गर्व, ज्ञानामृत करि पोषित सुभव्य ॥
जय जय विशुद्धमति नाम पाय, भवि जीवनको बहु सुमतिदाय ।
जय शांति शांति करतार जांनि, जग जीवन जिन दिय अभयदान ॥
जय श्री भद्र भवि भद्रकार, जिनके गुणको नहिं पारवार ।
जय कृष्ण कलंकोज्झित जिनेश, पद पूजत जिनके सुर सुरेश ॥

दोहा ।

यह अतीत जिनकी कही, वर जयमाल बनाय ।
तिन जिनवर पदकमलपर, नैन सदा बलि जाय ॥ १६ ॥

इति अतीत जिन पूजा ।

# अथ वर्तमान जिन पूजा ।

सोरठा ।

जंबू भारत मांहि, आदि जिनेश्वर वृषभ है ।
पूजत पातिक जाहि, वर्तमान वसु द्रव्य लै ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय अर्घ ॥ १ ॥

जंबू भारत मांहि, आदि जिनेश्वर दूसरे ॥ पूज० ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अजितनाथाय अर्घ ॥ २ ॥

जंबू भारत मांहि, संभवनाथ जिनेश हैं ॥ पूज० ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं संभवनाथाय अर्घ ॥ ३ ॥

जंबू भारत मांहि, अभिनंदन जिनवर कहे ॥ पूज० ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दन जिनाय अर्घ ॥ ४ ॥

जंबू भारत मांहि, सुमति जिनेश्वर नाम हैं ॥ पूज० ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं सुमति जिनेभ्यो अर्घ ॥ ५ ॥

जंबू भारत मांहि, पद्मप्रभू जिन है सही ॥ पूज० ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभु जिनाय अर्घ ॥ ६ ॥

जंबू भारत मांहि श्री सुपार्श्व जिनराज हैं ॥ पूज० ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथाय अर्घ ॥ ७ ॥

जंबू भारत मांहि, चन्द्रप्रभ जिनेश्वर सही ॥ पूज० ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ ॥ ८ ॥

जंबू भारत मांहि, पुष्पदंत जिन हैं भलो ॥ पूज० ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पदंत जिनाय अर्घ ॥ ९ ॥

जम्बू भारत मांहि, शीतल शीतलकार हैं ॥ पूजत० ॥ २६ ॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथाय अर्घ ॥ १० ॥
जम्बू भारत मांहि, श्री श्रेयांस महाराज हैं ॥ पूजत० ॥ २७ ॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय अर्घ ॥ ११ ॥
जम्बू भारत मांहि, वासुपूज्य जिन जानिये ॥ पूजत० ॥ २८ ॥
ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनाय अर्घ ॥ १२ ॥
जम्बू भारत मांहि, विमल विमल मतिकार हैं ॥ पूजत० ॥२९॥
ॐ ह्रीं विमलनाथाय अर्घ ॥ १३ ॥
जम्बू भारत मांहि, तीर्थ अनंत सु नाम हैं ॥ पूजत० ॥ ३० ॥
ॐ ह्रीं अनंतनाथाय अर्घ ॥ १४ ॥
जम्बू भारत मांहि, धर्म जिनेश्वर धर्मधर ॥ पूजत० ॥ ३१ ॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथाय अर्घ ॥ १५ ॥
जम्बू भारत मांहि, शांतिनाथ जिननाथ हैं ॥ पूजत० ॥ ३२ ॥
ॐ ह्रीं शांतिनाथाय अर्घ ॥ १६ ॥
जंबू भारत मांहि, कुन्थुजिनेश्वर तीर्थकृत ॥ पूजत० ॥ ३३ ॥
ॐ ह्रीं कुन्थुनाथाय अर्घ ॥ १७ ॥
जंबू भारत मांहि, अरहनाथ जिनवर महा ॥ पूजत० ॥ ३४ ॥
ॐ ह्रीं अरहनाथाय अर्घ ॥ १८ ॥
जम्बू भारत मांहि, मल्लिमदन गज दलन हैं ॥ पूजत० ॥ ३५ ॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथाय अर्घ ॥ १९ ॥
जंबू भारत मांहि. मुनिसुव्रत जिनराज हैं ॥ पूजत० ॥ ३६ ॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथाय अर्घ ॥ २० ॥

जम्बू भारत मांहि, नमि जिनवर जगतार हैं॥ पूजत०॥ ३७॥
ॐ ह्रीं नमिजिनाय अर्घं॥ २१॥
जंबू भारत मांहि, नेमनाथ गुण धार है॥ पूजत०॥ ३८॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं॥ २२॥
जंबू भारत मांहि, पार्श्वनाथ जिनवर भले॥ पूजत०॥ ३९॥
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं॥ २३॥
जंबू भारत मांहि, वर्द्धमान जिन अन्त हैं॥ पूजत०॥ ४०॥
ॐ ह्रीं वर्द्धमान जिनाय अर्घं॥ २४॥

दोहा।

वर्तमान चउवीस जिन, जगमें सब सुखदाय।
जिन चरनन पूजौं सदा, पूरन अर्घ चढ़ाय॥ ४१॥
ॐ ह्रीं वर्तमान चउवीस जिनाय अर्घं।

चौपाई।

जै वृषभांक वृषभ जिननाथं, केवल सहित नमित सुर माथं।
जय अजितेश्वर सर्व निधानं, मोहतमौघ विनाशन भानं॥
जय संभव भव काटन फंदं, शिवसुख करन हरन दुख दंदं।
जै जै अभिनंदन जिनदेवा, भूपत सुरपति कृत संसेवा॥
जय जय सुमति सुमति दातारं, काममतंग दलन सुखकारं।
जय जय पद्मप्रभु गत रागं, मोहमही रुह तोरन नागं॥
श्री सुपार्श्व निज पार्श्व सुहैनं, भवि जीवन सुखकारन ऐनं।
चंद्रप्रभू जग करन अनंदं, तन द्युति धर जिन पूरन चंदं॥
पुष्पदंत जिन पुष्प सुवानं, जन्म जरा मरणादिक हानं।
जय सीतल जिन सीतलता कर, भवि जीवनको भव आताप हर॥

श्रेय जिनं चउ घाति विमुक्तं, केवल नंतचतुष्टय युक्तं ।
जय वासुपूज्य अमरपति पूज्यं, जिन परताप जगतपति हूज्यं ॥
जय श्री विमल विमल तन धारक, जन्म जरा मरनादि निवारक ।
जय अनंत जिन असितन सोहं, गुण अनंत संयुत गत मोहं ॥
जय जिनधर्म धर्म दस भास्यौ, जिनकरि लोकालोक प्रकाश्यौ ।
जय जिन शांतिकरण तिहू जगकै, दरसावन भवि मोक्ष सुगमके ॥
जय जिन कुंथ दयानिधि स्वामी, कुंथ्यादिक पालक शिवगामी ।
जय श्री अरहनाथ जिनदेवं, अरि हरि करि लीय शिवपुर भेवं ॥
जय श्री मल्लि मदन गज दलनं, ईर्य्यापथ सोधन किय गमनं ।
जय मुनिसुव्रत सुव्रत धरनं, भव दुख हरन जगत जन शरनं ॥
जय नमिनाथ नरामर वद्यं, तीन लोक जिन जस अभिनंद्यं ।
जय नेमीस्वर एक विहारी, कुमरपने दीक्षा जिन धारी ॥
जय जय पार्श्व कमठ मद मर्दन, सम्यग्ज्ञानादिक गुन वर्धन ।
जय महावीर सु वीर शिरोमणि, गणधर पार लहै न सुगुण भवि ॥

घत्ता-दोहा ।

वर्तमान चौवीसकी, वरनी यह जयमाल ।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, पावै शिव दर हाल ॥ ४१ ॥

इतिश्री वर्तमान चउवीसी पूजा सम्पूर्णम् ।

# अथ भविष्यत् जिन पूजा ।

जम्बू भारत भावि, पद्म महा जिनवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं महापद्म जिनाय अर्घ ॥ १ ॥

जम्बू भारत भावि, सूरसेन मुनिवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं सूरसेन मुनींद्राय अर्घं ॥ २ ॥

जंबू भारत भावि, सु प्रभ जिनवर पद यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४२॥
ॐ ह्रीं सुप्रभाय अर्घं ॥ ३ ॥

जंबू भारत भावि, तीर्थ स्वयंप्रभ जिनवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४३॥
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय अर्घं ॥ ४ ॥

जंबू भारत भावि, सर्वायुध जिनपद यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४४॥
ॐ ह्रीं सर्वायुधाय अर्घं ॥ ५ ॥

जम्बू भारत भावि, जगदेवा जिन पूजियै ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४५॥
ॐ ह्रीं जगदेवाय अर्घं ॥ ६ ॥

जंबू भारत भावि, उदय देव जिनवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४६॥
ॐ ह्रीं उदयदेवाय अर्घं ॥ ७ ॥

जंबू भारत भावि, प्रभादेव जिनवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४७॥
ॐ ह्रीं प्रभादेवाय अर्घं ॥ ८ ॥

जंबू भारत भावि, श्री उदंक जिनपद यजौं ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४८॥
ॐ ह्रीं उदंक जिनाय अर्घ ॥ ९ ॥

जंबू भारत भावि, पक्ष कीर्ति जिनपद यजौं ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥४९॥
ॐ ह्रीं यक्षकीर्तिजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

जम्बू भारत भावि, जयकीर्ति जिनपद यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५०॥
ॐ ह्रीं जयकीर्तिजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

जम्बू भारत भावि, पूर्ण वुद्धि जिनवर यजौ ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५१॥
ॐ ह्रीं पूर्णवुद्धिजिनाय अर्घ ॥ १२ ॥

जम्बू भारत भावि, निष्कषाय जिन पूजिये ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५२॥
ॐ ह्रीं निष्कषाय जिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जम्बू भारत भावि, विमलप्रभ पद पूजिये ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५३॥
ॐ ह्रीं विमलप्रभाय अर्घं ॥ १४ ॥

जम्बू भारत भावि, बहुल प्रभ जिनवर यजौ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५४॥
ॐ ह्रीं बहुलप्रभजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
जम्बू भारत भावि, निर्मल जिनवर पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५५॥
ॐ ह्रीं निर्मलजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥
जंबू भारत भावि, चित्रगुप्त जिन पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५६॥
ॐ ह्रीं चित्रगुप्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥
जंबू भारत भावि, गुप्त समाधि सु जिन यजौ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं समाधि गुप्त जिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
जंबू भारत भावि, नाम स्वयंप्रभु जिन यजौ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥
जंबू भारत भावि, नाम कंदर्प्प जिनेश है।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं कंदर्प्पजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
जंबू भारत भावि, तीर्थंकर जय पद यजौ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर जयदेवाय अर्घं ॥ २१ ॥
जंबू भारत भावि, श्री विमलेश्वर जिन यजौ।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥

ॐ ह्रीं विमलेश्वराय अर्घ ॥ २२ ॥

जंबू भारत भावि, दिव्यवाद जिनवर यजों ।

जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥

ॐ ह्रीं दिव्यवादजिनाय अर्घ ॥ २३ ॥

जंबू भारत भावि, श्री अनंत वीरज यजों ।

जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ।

ॐ ह्रीं अनंतवीरजाय अर्घ ॥ २४ ॥

दोहा ।

ये जिन भावी भरतके, तीर्थंकर महाराज ।

भव्य संग मंगल करो, पूजों अर्घ सु साज ॥

पूर्णार्घ ।

## अथ जयमाला ।

भारत क्षेत्र सु भावि जिन, तुरिय वीस मिति जानि ।

तिन सबकी जयमाल अब, वरनो सब सुख दानि ॥

पद्धडी छन्द ।

जय महापद्मवर नाम धार, जिन जीत्यौ दुर्धर सुभट मार ।

जय सूर सु सुर नर करत सेव, जिन भरत भावि देवाधिदेव ॥

जय सुप्रभ सुप्रभ धरन अंग, लखि दुति लाजत कोटिक अनंग।

जय स्वयंप्रभू गत क्रोधभाव, जे विगत मोह भए थिर सु भाव ॥

सर्वायुध आयुध रहित जान, जिन हस्यौ कुसुम सर शुभ मान।

जगदेव दयाकर जगत मांहि, जिन वच लहि भव भव पारि जाहि ॥

जय उदय नाम जिन जग उधार, संपूरन गुनके हैं भण्डार ।

जय प्रभादेव भास्वतस्वरूप, लखि लाजत रवि शशि द्युति अनूप ॥

जयश्री उदंक किए कर्म चूर, जिनको जम तिहु जग रह्यौ पूर।
जय कृश्णकीर्ति महिमा निधान, प्रश्नोत्तरदायक जग महान ॥
जय जय जयकीर्ति नाम गाय, बहु तिरे जु भवि जिन वचन गाय।
जय पूरन मति पूरन सु ज्ञान, सर्वार्थसिद्ध पूरन महान् ॥
जय निष्कषाय जिन निष्कषाय, विषयादिक रिपुवश करन गाय।
जय विमल प्रभु गुन विमल धार, तन भाण्डल दुति लसत सार।
जयजय जिन बहुल सु गुन गनेश, जिन तन द्युति लखि लाजतदिनेश
जय निर्मल निर्मल तन धरंत, राजै निर्मल आचार बंध ॥
जय चित्रगुप्त त्रय गुप्ति गुप्त, त्रय दश विधि चारित्र करि संयुक्त।
जय जय जिनवर सु समाधि गुप्ति, जिन दिय वताय करजोग जुक्ति॥
जय स्वयंभूत करुणानिधान, जिनके गुण हैं बहु अप्रमान।
जय जय कंदर्प जिनेश सूर, जिन हरौ मदन गज दर्प भूरि ॥
जय जय जय नाथ मुनीश ईश, जिन मोह नशे भये केवलीश।
जय जय विमलेश जिनेश स्वामि, मलरहित सुतन तुम शरण जामि॥
जय दिव्यवाद जिन नाम सार, दिव्यध्वनि वर्षत अमृत धार।
जय जय अनंत वीरज महंत, जय नंत चतुष्टय गुण धरंत ॥

घत्ता दोहा।

भवि भारत जिनराजकी, वरनी यह जयमाल।
पढ़ै सुने जो उर धरै, छूटि जाय जगजाल ॥ ६२ ॥

इति भारतक्षेत्र जिनपूजा।

# अथ ऐरावत क्षेत्र जिन पूजा।

अडिल्ल छन्द।

मेरुत्तरदिशि ऐरावत जिन जानिये।
तीतागता अनागत जिन परमानिये॥
तीत चतुर्विंशति तीर्थंकर ए भये।
तिन आह्वानन करौ वास शिवपुर ठए॥६३॥

ॐ ह्रीं मेरुत्तर ऐरावत चतुर्विंशति जिनात्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट् सन्निधिकरणं।

## अथाष्टकं।

"सैंयाको ले आवौरे" इस चालमे।

भैया गुन गावौरे गावौ॥
सुर गंगाको नीर क्षीर सम, प्रासुक निर्मल ल्यावौ।
कंचन झार भराय भविकजन, श्री जिनचरण चढावौ॥
परमपद पावौ रे, चरण चितु ल्यावौरे॥ २॥
मेरुत्तर ऐरावत नीतागतानागत जिन ध्यावौ।
नाचि नाचि गुन गाय गाय जिन तन मन हर्ष बढ़ावौ॥
चरन चित ल्यावौरे, ल्यावौजी परमपद पावोजी॥६४॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमानजिनेभ्यो जलं।

चंदन अगर कपूर सु कुमकुम, लै करि जल सम गारौ।
श्री जिन चरण चढ़ाय भविकजन, दाह दुरित निरवारौ॥पर०॥६५

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो चंदनं।

तंदुल धवल सु वासु अखण्डित, निर्मल नीर पखारौ ।
जिनपद पंकज अग्र पुंज धरि, अक्षय मग पग धारौ ।।पर०।।६६।।
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो अक्षतं ।

जाइ जुही अर वेल चमेली, बिकसित पुष्प लै आवौ ।
शुद्ध होइ तरु अन्तरालचुत, सो लै जिनहि चढ़ावौ ।।पर०।।६७।।
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो पुष्पं ।

घेवर बावर मोदक खाजे, ताजे ताजे लीजे ।
हेमथार भरि भरि करि भविजन्, श्री जिन अरचन कीजे ।।पर०।।
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो नैवेद्यं ।

दीपकनक मय मनिमय वाती, जगमग जोति सुहाती ।
आरति करत चरण युग जिनवर, मोह तिमिर मिट जाती ।।पर०।।
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो दीपं ।

अगर कपूर लवंग लायची, दसविधि धूप सम्हारौ ।
श्री जिनचरण कमलके आगे, खेइ कर्म वसु जारौ ।।पर० चरनचित०
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो धूपं ।

दाख छुहारे लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावौ ।
पिस्ता किसमिस सेउ लाइची लै, करि जिनहि चढ़ावौ ।।पर०।।
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो फलं ।

जलफल अर्घ बनाय गाय गुण, मन वच काय लगावौ ।
श्रीजिन चरणकमलकी पूजा, करि शिवपुर पद पावौ ।। पर० ।।
चरणचित ल्यावोजी ल्यावोजी, परम पद पावोजी पावोजी ।

मेरुत्तर ऐरावत तीता, गता नागत जिन ध्यावौ ।
नाचि नाचि गुण गाय गाय करि, तन मन हर्ष बढ़ावौ ॥७३॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भावीभूतवर्तमानजिनेभ्यो अर्घं ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

पंचरूप जिनेश्वर नाम है, पंचकल्याणकके धाम है ।
जबूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥७४
ॐ ह्रीं पंचरूपय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

'फुनि जिनंधर तीर्थंकर महा, नाम गनधर गौतमने कहा ॥जंबू०
ॐ ह्रीं जिनंधर जिनालयाय अर्घं ॥ २ ॥

सांप्रतिक जिन नाम समेत हैं, भविजनको शिव सांप्रति देत हैं॥जंबू०
ॐ ह्रीं सांप्रतिक जिनाय अर्घं ।

ऊर्ध्वयंत सुगुण जिनके महा, ऊर्ध्वयंत सु नाम सु गुरु कहा ।
जंबूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥७७
ॐ ह्री उर्ध्वयंतजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

अधिसुक्षायक नाम जिनेश वर, क्षायकादि अनंत सु गुनाकर।
जंबूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥७८
ॐ ह्रीं अधिसुक्षायकजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

फुनि सु अभिनंदन जिनवर कहै, लहै शिवसुख अष्ट करम दहै।
जंबूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥७९
ॐ ह्रीं अ भनदनजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

नाम जिन रत्नेश सु जानिये, रत्नत्रय संयुत परमानिये।
जंबूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८०
ॐ ह्रीं रत्नेशजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

सिवर मावर रामेश्वर प्रभू, रमा धाम जिनेश्वर है स्वभू।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८१
ॐ ह्रीं रामेश्वरजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

नाम अंगेक्षित जिनार है, अव्ययांग सुनिर आकर है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८२
ॐ ह्रीं अंगेक्षितजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

नामवर विन्यास जिनेश है, शुद्ध धर्म प्रकाशन देश है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८३
ॐ ह्रीं विन्यासीजिनालयाय अर्घं ॥ १० ॥

नाम जिन सु अरोप बताइयौ, रोष सहित सुगुण जिन पाइयौ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, यजौ तीत सु जिनवर वसु द्रव्य लै ॥८४
ॐ ह्रीं आरोषजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

बहु विधान सुगुण जिनके विषैं, नाम जिन सुविधानक श्रतलिषैं।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८५
ॐ ह्रीं सुविधानकजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

वप्रदत्त जिनेश्वर नाम है, इंद्रवंदित पूरण काम है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥८६
ॐ ह्रीं वप्रदत्तजिनेन्द्राय अर्घं ॥ १३ ॥

श्रीकुमार सु नाम सही परौ, जिंन कुमारग मिथ्या मद हर्यो।
जम्बूदीप सु ऐरावत नाम है, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥८७
ॐ ह्रीं श्रीकुमारजिनेशाय अर्घं ॥ १४ ॥

नाम जिन श्री शैल वखानियौ, महामिथ्या गिरवर जानियौ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥८८
ॐ ह्रीं श्रीशैलजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

प्रभंजन जिन भंजन करमगिर, भव्य कमल विकासन भान थिर।
जंबूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥८९
ॐ ह्रीं प्रभंजनजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

नाम जिन सौभाग बखानिये, युतचतुस्त्रिशतिमय जानिये।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौं तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥९०
ॐ ह्रीं सौभाग्यजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

मुनि मनांबुज परकाशन सु रवि, श्रीदिवाकर नाम सु रहो फवि।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौं तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥९१
ॐ ह्रीं दिवाकरजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

वृत्त निदेमक भव्यतु वृत्ताकरि, सुवृत्तविंदु जिनेश्वर नाम धर।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥९२
ॐ ह्री वृत्तविंदुदेवाय अर्घं ॥ १९ ॥

सिद्धि करि जिनकौ वर नाम है, सिद्धपुर जिनको निज ठाम है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥९३
ॐ ह्रीं सिद्धिकरजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

ज्ञानघन जिन नाम सु ज्ञान तन, ज्ञानकर संबोधित भविकजन ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै।।९४

ॐ ह्रीं ज्ञानधनजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

विना कल्पित पूरन काय जिन, कल्पद्रुम वर नाम सु कह्यौ तिन ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै ॥९५

ॐ ह्रीं कल्पद्रुमाय अर्घं ॥ २२ ॥

तीर्थपद दायक भव्यनु सदा, तीर्थफल जिन नाम कहे मुदा ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै ॥९६

ॐ ह्रीं धर्मफलजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

विगत काम विरमप्रभ नाम है, राग रहित सदा सुखधाम है ।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलौ, पूजौ तीत सु जिन वसुद्रव्य लै ॥९७

ॐ ह्रीं विरमप्रभाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा ।

दोष अठारह रहित ये, गुण छ्यालीस भण्डार ।
पूर्णार्घ करि तिन यजौ, स्वर्ग मुक्ति दातार ॥९८॥
ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ।

## अथ जयमाला ।

गीता छन्द ।

संसार सागर तरन तारन, नाम जिनको जानियै ।
फुनि सकल कलुश विमुक्ति शोभित, गात्र जिन परमानियै ॥
ये भविक कमल वन घन प्रकाशन, भान सम शोभित सही ।
हो नमौं जिनके वीस तीस, जिनेश ऐरावत मही ॥ ९९ ॥

पद्धडी छन्द।

जय पंच रुप तिहु जगत भूप, शुभ ध्यान धुरंधर गुनन कूप।
जय जय जय जिनधर देव देव, जिन सुर मुनिगण करत सेव॥
जय सांप्रति जिन शुचि ध्यान लीन, जिन करे सुभट वसु कर्मक्षीण।
जय उर्ध्यंत गुणधर महंत, तिहु लोक प्रकाशन ग्यानवंत॥
जे अधि क्षायक जिन नाम सार, उत्तम क्षायक सम्यक्त धार।
जय अभिनंदन महिमा निधान, जगवंदन नंदन शुद्ध ज्ञान॥
जय रत्नेश्वर भय रतन ईस, जे जाय वसे तिहु जगत सीस।
जय रामेश्वर शिव रमा वास, किये कर्म चूर क्षय जग उदास॥
जय अगेक्षित सब संग हीन, जिन अंग उपंग प्रकाश कीन।
विन्यारा पंच मरु ज्ञान धार, तजि दोष सकल गुणके भंडार॥
जय जय अरोप जिन रोष सोप, भय लोभ मान माया विमोष।
जय जय अभिधानक गुण निधान, जिन शुद्धातमरस कियो पान॥
जय वप्रदत्त जय सूर गाय, जिन शिवमारग भवि दिय बताय।
जय जय कुमार वर नाम धार, ये कुमर काल जग बंधु सार॥
श्री सैल महाविधि सैल तोरि, सुख किय शिवत्रिय संगहेत जोरि।
जय देव प्रभंजन नाम गाय, जिनको जस जामें रह्यो छाय॥
सौभाग्य देव सौभाग्य पात्र, लक्षण अष्टोत्तर सहस गात्र।
जय जय हि दिवाकर नाम जास, चर अचर पदारथकी प्रकाश॥
जय जय वृतबिंदु जगीस स्वामि, तुव चरन कमल नित सरन जामि
सिद्धंकार जिन को नाम गाय, ते सिद्ध रमापति है सु भाय॥

जय ज्ञान सु तन जिन नाम थाय, जिन ज्ञान तिहूजग रह्यौ छाय।
जय कल्पतरोवर नाम जानि, जय पोषन कल्पद्रुम समान ॥
जय नाम तीर्थफल है विशाल, सुर नर मुनि सेवत पद त्रिकाल।
शिव रमा रमन सुख नंत धाम, गुर गायौ जिनको विरय नाम ॥

घत्ता त्रिभङ्गी छन्द ।

श्री भूत जिनेश्वर जग परमेश्वर, सेवत सुर नर पद कमलं ।
शिवसुखके कारन भविजनतारन, कलुष निवारन गुण अमलं ॥
जम्बू ऐरावत तीत सु जिन भूत, काम क्रोध रत सुख करनं ।
हो जिनपद बदौं पाप निकंदों, मन आनंदों भव हरनं ॥७०॥

इतिश्री ऐरावत अतीत जिन पूजा सपूर्णम् ।

---

# अथ वर्तमान पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

बालचन्द्र जिनेश्वर जानिये, लसत चंद्रानन परमानिये ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१॥
ॐ ह्री बालचद्र जिनाय अर्घ ॥ १ ॥

मुनिसुव्रत जिनाय सु सार है, वृतीजन भवियनु आधार है ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥२॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनाय अर्घ ॥ २ ॥

अग्निसेन सु जिन परधान है, काम वन घन दहन कृसान है ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥३॥
ॐ ह्रीं अग्निसेनाय जिनेभ्यो अर्घ ॥ ३ ॥

नंदि जिन गुण ज्ञान समेत है, भव्यजन आनंद सु देत है ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदिसेनजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

त्रिजग श्रीसेवित जुग चरन जिन, दत्त श्रीजिन नाम कह्यौ सु तिन ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीदत्तजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

श्रीजिनेश्वर व्रत धर नाम वर, व्रतीजन शिवदायक सुक्खकर ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥६॥

ॐ ह्रीं वृत्तधरजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

सोमचंद्र सु जिनको नाम है, चन्द्र सम शीतल सुखधाम है ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥७॥

ॐ ह्रीं सोमचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम जिनघृत दीर्घ बताइयो, वृतीजन धृति कारण पाइयो ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥८॥

ॐ ह्रीं घृतदीर्घदेवाय अर्घं ॥ ८ ॥

तीर्थंकर शतपुण्य जिनेश है, पद शतेंद्र सु पूज्य महेश है ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥९॥

ॐ ह्रीं शतपुण्यजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

विदित नाम सु शिवमत तीर्थंकर, शिव सुखाकर शिवदायक सु वर ।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१०

ॐ ह्रीं शिवमतजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

श्रीश्रेयांस जिनेश महेश हैं, श्रेय करता जगत दिनेश है।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥११

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनाय अर्घ ॥ ११ ॥

श्रीसुतोदक नाम सु येन है, श्रुत महोदधि पार सो देन है।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१२

ॐ ह्रीं सुतोदकजिनाय अर्घ ॥ १२ ॥

सिंहसेन जिनेश्वर जानिये, सिंहवत विक्रम विधि हानिये।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१३

ॐ ह्रीं सिंहसेनजिनाय अर्घ ॥ १३ ॥

शांति प्रद उपशांत सु जिन कहे, वनु कषाय सु वन घन जिन दहै।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसु विधि यजौ ॥१४

ॐ ह्रीं उपशांतजिनाय अर्घ ॥ १४ ॥

गुप्त आसन जिन गुण थान है, गुप्ति त्रिय गोपन धरि ध्यान है।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसु विधि यजौ ॥१५

ॐ ह्रीं गुप्तासनजिनाय अर्घ ॥ १५ ॥

जिन अनंत सु वीरज नामवर, जग विख्यात अनंत सु वीर्य धर।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसु विधि यजौ ॥१६

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यजिनाय अर्घ ॥ १६ ॥

पार्श्व नाम सु जिन सुखदाय है, पार्श्वदायक सहज सुभाय है।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१७

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय जिनाय अर्घ ॥ १७ ॥

देव जिन जयवन्ते हो सदा, करत सेव सुर नर सुरपति मुदा ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१८

ॐ ह्रीं देवजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

नाम जिन मरुदेव सु गुरु धरन, मरुतदेवादिक पूजित चरन ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१९

ॐ ह्रीं मरुतदेवजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

सुधर जिनवर श्रीधर नाम है, ज्ञान श्री शोभित शिवधाम है ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥२०

ॐ ह्रीं श्रीधरजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम श्याम सु कंठ जिनेश है, मेघ छवि कंठी सुख देश है ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥२१

ॐ ह्रीं श्यामकंठजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

कर्म वन घन जारन अग्नि सम, अग्रप्रभ जिन नाम कह्यौ सु इम ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥२२

ॐ ह्रीं अग्रप्रभाय अर्घं ॥ २२ ॥

पाप ईन्धन सब जिय जारिदिय, अग्निदत्त जिनेश्वर नाम लीय ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसु विधि यजौ ॥२३

ॐ ह्रीं अग्निदत्तजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

वीर वीर महा वर वीर है, वीरसेन सदा गुन धीर है ।
वर्तमानैरावत जिन जजौ, जल फलादिक लै वसु विधि यजौ ॥२४

ॐ ह्रीं वीरसेनजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

जम्बूदीप ऐरावतक्षेत्र वखानियो, वर्तमानचौवीस जिनेश्वर जानियो

पूरण अर्घ बनाय सु तुम पद पूजियै, दीजै निजपद हाल दयाल सु हूजियै ॥ २५ पूर्णार्घं।

## अथ जयमाला।

गीता छन्द।

ये सकल नर अमरेंद्र पूजित, चरन तारन तरन है।
पद नमत भवि ये भक्ति युत, तिनको सदा सुखकरन है॥
ये द्वीप जम्बू वर्तमान सु, क्षेत्र ऐरावत सदा।
जिनकी कहो जयमाल नमि पद, कमलमति माफिक मुदा॥

चाल-त्रिभुवनस्वामीकी।

चन्द्रानन स्वामीजी, शिवदायक नामीजी।
फुनि बालचन्द्र शिवगामीको नमौंजी॥
श्री सुव्रत जिनेश्वरजी, ये जग परमेश्वरजी।
अकलंक सुरेश्वर, चरन नमौ भलेजी॥
नमौ अग्निसेन पदजी, गत अष्ट महामदजी।
हृद्याम्बुज मध्य चरन जिनके धरौंजी॥
प्रभ नन्दसेनवरजी आनंद सुधाकरजी।
श्रीदत्त जगन गुरुके चरन यजौंजी॥
व्रतधारक नामीजी, ये शिव सुखधामीजी।
शिव वामापति सोमचंद्र जिनको नमौंजी॥
घृत दीरघ देवाजी, सुर करत सु सेवाजी।
शत पुष्प कहे या जिनपदको नमौंजी॥
शिव मत शिवनायकजी, भविजन सुखदायकजी।
मम होहु सहायक पास, जिनेश्वरोजी॥

# अथ प्रत्येक पूजा !

सुन्दरी छन्द ।

तीर्थ सिद्धारथ जिन पूजिये, तुरत शिवरमनी पति हूजिये।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविध थार विषैं सजौ ॥२९

ॐ ह्रीं सिद्धारथजिनाय अर्घ ॥ १ ॥

अमल गुन तन विमल जिनेश हैं, पूज्य पद नर सुर अमरेश हैं।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ ॥३०

ॐ ह्रीं विमलजिनाय अर्घ ॥ २ ॥

तीर्थंकर जयघोष सु गाइयें, कर्म रिपु जय शिवपद पाइयै।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ ॥३१

ॐ ह्रीं जयघोषजिनेन्द्राय अर्घ ॥ ३ ॥

नाम स्वमंगल जिन जानियै, स्वर्ग शिवपद दायक मानियै।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ ॥३२

ॐ ह्रीं स्वर्गगतजिनाय अर्घ ॥ ४ ॥

नंदिघोष सु जिनवर नाम है, भव्यजन मन पूरन काम है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ ॥३३

ॐ ह्रीं नंदिघोषजिनाय अर्घ ॥ ५ ॥

वज्रधर जिन चर्म शरीर है, कामगिरि तोरन वर वीर हैं।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ ॥३४

ॐ ह्रीं वज्रधरजिनाय अर्घ ॥ ६ ॥

मोक्षमार्ग प्रकाशनकौं सुरवि, नाम निर्वान सु जिन रहो फवि।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ ॥ ३५

ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घ ॥ ७ ॥

धर्मध्वजजिननाम मनोग है, दया धर्म निरूपण जोग है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥३६॥

ॐ ह्रीं धर्मध्वजजिनाय अर्घ ॥ ८ ॥

सिद्धसेन सु जिन सुषकार है, सदा सिद्ध वधू भरतार है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥३७॥

ॐ ह्रीं सिद्धसेनजिनाय अर्घ ॥ ९ ॥

महासेन जिनेश्वर है सही, महाविधि रिपु सैना जिन दही।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥३८॥

ॐ ह्रीं महासेनजिनाय अर्घ ॥ १० ॥

भव्य कमल विकासन भान सम, नाम जिन मित्र सु ज्ञान गम।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥३९॥

ॐ ह्रीं रविमित्रजिनाय अर्घ ॥ ११ ॥

सत्यसेन जिनेश्वर जानियें, मुक्तिमारग सत्य वखानियै।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥४०॥

ॐ ह्रीं सत्यसेनजिनाय अर्घ ॥ १२ ॥

चन्द्रदेव जिनेश्वर नाम है, चन्द्रमुख शोभित सुख धाम है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥४१॥

ॐ ह्रीं चन्द्रजिनाय अर्घ ॥ १३ ॥

महाचंद्र सु जिनको नाम है, ज्ञान सागर वर्द्धन काम है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥४२॥

ॐ ह्रीं महाचन्द्राय अर्घ ॥ १४ ॥

श्री श्रुतांजन जिनवर गाइयौ, भव्य मिथ्यातिमिर नसाइयौ।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ॥४२

ॐ ह्रीं श्रुताजनजिनाय अर्घं॥ १५॥

देवसेन सुसेना करमकी, घात कर लई वाट सु शर्मकी।
अनागत ऐरावत जिन यजौ अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ॥४३

ॐ ह्रीं देवसेनजिनाय अर्घं॥ १६॥

सुव्रतस्वामि जगत सुखधाम है, जपत नाम मिलति सब वाम है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ॥४४

ॐ ह्रीं सुव्रतजिनाय अर्घं॥ १७॥

श्री जिनेन्द्र जिनेश्वर देव है, करत सुरनर जिनपद सेव है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ॥४५

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवाय अर्घं॥ १८॥

नाम जिनको पारस सार है, पार्श्व सम भवि बन हितकार है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौ॥४६

ॐ ह्रीं पार्श्वदेवाय अर्घं॥ १९॥

सकल विद्यागुनगन कोस है, सु कोशलनाम निरोस है॥
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ॥४७

ॐ ह्रीं सुकोशलजिनाय अर्घं॥ २०॥

जिन अनंत करन सुख मोट है, भव्य शरन हरन जम चोट है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ॥४८

ॐ ह्रीं अनंतजिनाय अर्घं॥ २१॥

विमलजन भविजन सुखदाय है, मार अगनित सुरगुन गाय है।
अनागत ऐरावत जिन यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ॥४९

ॐ ह्रीं विमलजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

धर्म अमृत सिंचित भव्य घन, अमृतसेन जथारथ नाम भन।
अनागत ऐरावत जिन यजौं, पूजौं वसुविधि थार विंप सजौं ॥५०

ॐ ह्रीं अमृतसेनजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

कर्म ईंधन सब जिन जारिदिय, अग्निदत्त सु जिनवर नाम लिय।
अनागत ऐरावत जिन यजौं, पूजौं वसुविधि थार विंपं सजौं। ५१

ॐ ह्रीं अग्निदत्तजिनाय अर्घ। २४ ॥

दोहा।

ऐरावतके भावि जिन, मिति चउवीस वखानि।
पूजौं पूरन अर्घ करि, नमों जोर जुग पानि ॥

## अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

समवसरन लक्ष्मी लक्षित जिनराज ही,
शिवपद शुभ लक्ष्मी गत भव्य सु माज ही।
त्रिविध विविध लक्ष्मीधर श्री जिनवर भले,
नमों तिनि चरन कर्म वसु जिन दले ॥

जिनयानी मेंटीको चाल।

जय २ प्रभु हो सिद्धारथ जिनराजजी।
ये राजत ही सकल संघ सिरताजजी,
जय विमल सु जिन नमौं चरन शिरनायके शिवमारगजी।
भविजन दियौं है बतायके, जय २ प्रभजी कुमोमहा जिनवर भले ॥
जिन दुर्द्धर श्री मोह मनगज मन गले।
जय जय प्रभुजी कुर्गल नाम वखानियों,

# अथ धातुकी खंड द्वितीय मेरु पूजा।

दोहा।

पंच परम पदको नमों, पंचमगति दातार।
पंचाचरन सुकरन नमौं, होहु मुक्ति करतार॥ ५५॥

छन्द-अडिल्ल।

द्वितीय धातुकी खण्ड, मेरु जुग जह परै।
चतुरसीत योजन, उन्नत सोहत खरे॥
नागदंत वसु कुलगिरि, द्वादश है सही।
वसु जुग सरिता औ, त्रिभंगादिक जही॥
वर विदेह चतुःषष्टि, रूपगिरि ए जही।
चदु त्रिसत द्विगुणी, संख्या जिन क्षाजही॥
तह जिन मंदिर जिन प्रतिमा, मुनिराज है।
तिन आह्वानन करत, सकल अघ भाजि है॥ ५६॥

ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकी खण्ड द्वीप अनेक शोभा सहित श्री जिनालय जिन मुनिराज अत्रावतरावतर संवौषट्, अत्र ठ ठः वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टक।

सुन्दरी छन्द।

सुर सरित जल शीतल लायके, हिम सु चंदन सरस मिलायकैं।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये जुगपद अमरेश्वरं॥५७
ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्व जिनेभ्यो जलं।
मलय चंदन केसर गारिकै, नीर सम घनसार सुधारिकै॥५८॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो चंदनं।

स्याम जीर कमोद सुहावनो, लै अखण्ड सु अक्षत पावनो।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥५९॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो अक्षतं।

वर गुलाब चमेली लाइयै, शुद्ध तन जिनचरण चढ़ाइयै।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६०॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो पुष्पं।

शुद्ध घृत पकवान बनाइयै, तुरत ताजै जिनहि चढ़ाइयै।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६१॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो नैवेद्यं।

दीप कंचनके मन मोहने, चतुरमुख प्रजुलित अति सोहने।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६२

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो दीपं।

अगर चंदन अर कर्पूर लै, धूप दश विध खेवत अघ जलै।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६३

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो धूपं।

नारियल बादाम मंगाइयै, सुघर श्रीफल जिन हि चढ़ाइयै।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६४

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो फलं।

जल फलादिक लै वसु विधि सही, यजों पद श्रीजिन गुनगन मही।

द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं ॥६५

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो अर्घं।

# अथ धातुकी विजयमेरु सम्बन्धी अर्घ।

विजयमेरुगिरि पूरव अपर विदेहके,
दक्षिण उत्तर भरतैरावत गेहके।
चारों दिशि चारों शिल न्हवन भयौ जिनै,
जल फलादि वसु विधि करि हम पूजै तिनै ॥६६॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुगिरि चारिदिशि चारि सिंघासनोपरि जिन न्हवन संयुक्त पूरव अर दक्षिण उत्तर गत जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छद।

विजयमेरु पांडुकवन चारौं दिश विषै,
जिनमदिर शोभे अति शास्वत श्रुत लिखै।
तिनमें जिन प्रतिबिंब अकृत्रिम राजही,
तिन पद पूजो वसुविधि सब दुख भाजही ॥६७॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु पांडुकवनविषै चारिदिश चारि चैत्यालय अकृत्रिम जिनेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु गिरि वन सौमनस सु दूसरे,
चारौं दिशि चैत्यालय राजत है खरे।
तहां जिनप्रतिमा राजै तिनपद पूजियै,
अर्घ ल्याय करि तन मन हर्षित हूजियै ॥६८॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सौमनसवन चतुर्दिशि स्थित जिन-चैत्यालयजिनबिंबेभ्यो अर्घ।

विजयमेरु नंदनवन चारौ जानियै,
चारौ दिशि चैत्यालय चारि प्रमानियै।
तिनमें राजे प्रतिमा वसु शत सारजू,
पूजो तिन पद होहि करम जरि छारजू ॥६९॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु नंदनवन चतुरदिशि चैत्यालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु वन भद्रशाल चौथो भरो,
भूपर अधिक विराजै अति सुंदर खरौ।
चारौं दिशि चैत्यालय चारि सुहावने,
पूजौ चरण जु तुम्हे परम पद पावनै ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु भद्रशालवन चतुरदिशि चैत्यालय जिनबिंबेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

विजयमेरु गजदंत, चारौ विदिशन सोहने।
तह जिन गृह सोभंत, जिन पूजै वसुविधि हनै ॥७१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुके च्यारि विदिशा विषैं चारि गजदन्त तत्र जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु दुहु ओर दक्षिण उत्तर जानियै।
वृक्ष धातुकी जोर तिनपर जिनग्रह जिन यजौ ॥ ७२ ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सम्बन्धी धातुकी वृक्ष युग जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

दीप धातुकी पूरव विजयारधगिरि,
जहं निकट निषधाचलके शिखर।
तहं जिनालय जिन प्रतिमा यजौं।
अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौं॥ ७३॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु निकटवर्ती निषधाचल सिद्धायतन आदि कूट नव जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

निषिधि नील सु बीच परी भली,
भोग भू उत्कृष्ट सु सुख थली।
तहं जिनालय जिन मुनिराज पद,
पूजते जु छूटे संसार गद॥ ७४॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सम्बन्धी निषिधनील मध्यगत उत्कृष्ट-भोगभूमि तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

निषिद्धाचलगिरि पर ग्रह विषैं,
कंजदल वसु सहसको श्रुति लिखै।
धृति सुरी गृह तह जिन गृह परो,
पूजि जिनपद वसुविधि अघ हरो।

ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि तिगंछ द्रहविषैं कमलमध्य धृतिदेवी ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

तिगिंछ द्रहसै निकसी है सही,
सरित युग मग सागर की लही।

कृत कांत सु सीता नाम जिन,
पुलिन गत जिनग्रह पूजौ सु तिन ॥ ७५ ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ द्रह निर्गता सु सीता कृष्णकांता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन पर्वतके उपरि,
कूट रा ने वसु जाके शिखिर।
तह जिनालय जिन प्रति पूजिये,
शुद्ध मन वच तन त्रिक हूजिये ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनोपरि सिद्धकूटादि व्‍ कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

महा हिमवन निषिध सु बीच ही,
मध्यमा भू भोग जहां कही।
तहां चरण सु सिद्ध मुनीशकैं,
पूजिये पद जुग जग शीसकै ॥ ७७ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिद्धाविच मध्यम भोगभूमि गत चारणार्द्धि मुनिभ्यो अर्घ।

महा हिम पद्म द्रहसे निकसि,
हरित रोहित सरित सु भूमि धसि।
युगम पुलमें मंदिर जैनके,
तहां जिनालय पूजि सु भायकै ॥ ७८ ॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसे निकसी रोहित नदी हरित जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

महापद्म द्रह गत कंजवर ही,
सुरीग्रह तहं जिन ग्रेह पर ।
अष्ट शत प्रतिमा तह शास्वती,
पूजियै वसुविधि करि जिन शुभमती ॥७९॥

ॐ ह्रीं महापद्मद्रह गत कमल मध्य ह्री ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

महा हिमवत बीच सु जानियै,
भोगभूमि जघन्य वखानियै ।
चारणार्द्धिक महा मुनिराज ही,
पूजि पद अघ जांहि सु भाजिके ॥ ८० ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनहिमर्यो मध्ये जघन्य भोगभूमि गत चारण मुनिभ्यो अर्घ ।

पद्म द्रहते त्रय सरिता वही,
सिंधु रोहित फुनि गंगा सही ।
तासु तट जिन मंदिर राजही,
यजो िन प्रति दुख सब भाजही ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं हिमाचल निर्गत रोहित गंगा सिंधुतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।



# अथ उत्तर धातुकी खंड अर्घ।

विजय मेरु उत्तर दिशिमें परो,
नील पर्वत कुलगिरि है खरो।
स्थूल उच्च द्विगुण ताको कहौ,
यजौ जिन प्रतिमा जिन सुख लहौ ॥८२॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु उत्तरदिशि नील कुलाचल नवकूट संयुक्त तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

नील निषिध सु बीचमें भोग भुव,
परी उत्तम आनि पवित्र सुव।
तह सु चारण मुनिपद पूजिये,
शुद्ध मन वच तन त्रय हूजिये॥

ॐ ह्रीं निषिध नील बीच उत्तम भोगभूमिगत चारण-मुनिभ्यो अर्घ।

नीलगिरि ऊपर परमानियै,
द्रह तिगिंछ सु केसरि जानियै।
कीर्तिदेवीके गृह जिन भुवन,
पूजिये वसुविधि मन वचन तन ॥ ८३ ॥

ॐ ह्रीं नीलगिरि तिगिंछ द्रहगति धृतिदेवी ग्रह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

केशरी द्रह निर्गत दो नदी,
नाम नारी सीतोदा वही।

तसु पुलिन गत जिनमंदिर भलौ,
　　　　यजौ जिनपद वसुविधि अघ्र दलौ ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं केसरी द्रह निर्गत नारी सीतोदा नदी, पूर्वपर-समुद्रगामिनी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

विजयामेरुत्तर दिशमें कह्यौ,
　　　　रुक्मकुलगि र नाम महा लह्यौ ॥
कूट वसु जसु ऊपर सोहए,
　　　　यजौ जिन प्रतिमा मन मोहए ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुत्तर रुक्मगिर अष्टकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

नील रुक्मसु मध्य जहां परी,
　　　　भोगभूमि सु मध्यम है खरी ।
चारणार्द्धि महामुनिराजके,
　　　　चरण पूजहु वसु द्रवि साजिकै ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं नीलरुक्मयो मध्ये मध्यम भोगभूमि तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

रुक्म पर्वतपर द्रह जानिये,
　　　　पुंडरीक सु नाम वखानियै ।
बुद्धिदेवी ग्रह बीच जिन भुवन,
　　　　पूजिये वसुविधि श्री जिन करि न्हवन ।'८७॥

ॐ ह्रीं रुक्म पर्वत पुंडरीक द्रहगत बुद्धिदेवीग्रह तत्र जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ ।

पुंडरीक द्रहसे निर्गत नदी,
सो जाय सागर बीच सुफदी,
सोरर्चन कूला नरकांता तथा,
तसु पुलिन गत जिन पूजौ यथा॥ ८८॥

ॐ ह्रीं रुक्मिगिरि पुंडरीक द्रहसे निर्गत स्वर्णकूल नर-कांता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

विजयमेरु सु उत्तर कुलाचल,
तीसरो कुल भूधर है।
सुभल कूट एकादश जिनग्रह यजौ,
जिन चरण वसु द्रव्य सुफल भजौ॥ ८९॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु शिखिरगिर एकादश कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

पुण्डरीक महा द्रह शिखिर पर,
तहां लक्ष्मी देवीको सु घर।
श्रीजिनालय कर मंडित भलौ,
पूजि वसुविधि भविजन अघ दलौ॥ ९०॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि महापुण्डरीक द्रह गत लक्ष्मी-देवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

अडिल्ल छन्द।

पुण्डरीक सैनिकसी त्रय सरिता भली,
भोगभूमि गत होय सु सागरको चली।
तासु पुलिन गत श्रीजिनमंदिर पूजिये,
अष्ट द्रव्य लै तन मन हर्षित हूजिये॥ ९१॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रह निर्गत रुप्यकूला रक्ता रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

रुक्म शिखिरिबिच भोगभूमि सु राजही,
नाम जघन्य जासु को सुनि दुख भाजही।
तह चारण मुनिके पद पूजन कीजिये,
वसुविधि अर्घ बनाय सु ज न्म जग लीजिये ॥९२

ॐ ह्रीं रुक्मशिखिर मध्यगत जघन्य भोगभूमि तत्र चारण मुनिभ्यो अर्घं ।

विजयमेरुते दक्षिण दिशमें जानिये,
भरतक्षेत्र विजयारध गिरिपर मानिये ।
नगर दशोत्तर शतश्रेणी द्वय जह लसै,
तह जिनभवन विषैं जिन पूजत अघ नसै ॥९३

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विजयमेरु दक्षिण भरत विजयारध दशोत्तर शत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सोरठा।

बिजयारध नवकूट, भरतक्षेत्र बिच जो परे।
शिवपुरके सुख लूट, जिनमंदिर जिन पूजिये ॥ ९४ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्ध नवकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

अडिल्ल छंद।

दीप धातुकी विजयमेरु उत्तर मही,
ऐरावत विजयारध राजत है सही ।
नगर दशोत्तर शत जिनग्रह तह सुखकार है,
तह जिनमंदिर पूजित जिन अघनार है ॥९५॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड विजयमेरु उत्तर ऐरावतक्षेत्र दशोत्तर-शत जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

विजयारध नवकूट, ऐरावतमें जानिये।
वसु कर्मनते छूट, पूजौ जिनवर पद भलै॥ ९६ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

दीप धातुकी पूर्व विजयगिर मेर है।
दक्षिण उत्तर माह जिनालय जे रहै॥
शैल नदी द्रह क्षेत्र बीच जे जानिये।
पूरन अर्घ बनाय पूजि थुति ठानिये॥ ९७ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी खंड द्वीप विजयमेरु सम्बन्धी उत्तर दिशि शैल द्रह क्षेत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जय केवल दिनकर जिन जगत प्रकाशियो।
भवि जीवनको मोह तिमिर सब नासियो॥
चिदानंद मय नमत पुरंदर जिन सही।
तिन वरनन युग नमो विराजत सुख मही॥ ९८ ॥

पद्धडी छन्द।

जय जिन घाते घातिया चार, फुनि किय अघातियनको प्रहार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह॥

जय चिदानंदमय है सु छन्द, जगजीवनको आनंद कंद।
अष्टोत्तर शत लक्षण सु अंग, जिन तति लखि लाजत अनंत ॥९९॥
ये कोटि सूर्य्य द्युति धरन धीर, युत प्रातिहार्य्य वसु गुन गंभीर ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥८००
सुर नर धरणीधर पूज्य पाय, गणधर मुनिवर जिन नमत धाय।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥१॥
थिच पुनय क्षेत्र विहरत सदीव, भवि प्राणि घात गत जगत पीव।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥२॥
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष, शुच ध्यान लीन शोभे अलक्ष ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥३॥
ये अनंत चतुष्टय करि संयुक्त, महाधीरय धर वसुकर्म मुक्त ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥४॥
वसु गुण करि मण्डित शोभमान, जयवंतो वर्तों जग प्रधान ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥५॥

घत्ता-अडिल्ल ।

दीप धातुकी खण्ड जिनालय ये कहे,
विजयमेरुके उत्तर दक्षिणमें लहे ।
तिन सबकी जयमाल सु भाषी गायके,
चरण कमल द्रग नमें सु मन हरषायके ॥६॥

इति श्री विजयमेरु उत्तर दक्षिण भरतऐरावतक्षेत्र कुलाचल पूजा संपूर्ण।

---

# अथ विदेहक्षेत्र पूजा ।

दोहा ।

पूर्व धातुकी मेरुते, पूर्व विदेह मझार ।
षोड़श क्षेत्र जहां परे, सुरनर मुनि सुखकार ॥ ७ ॥
स्वयं जात अर स्वयं प्रभु, युग तीर्थंकर जानि ।
आह्वानन तिनको करो, नमो जोर जुग पानि ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड पूर्व विजयमेरु पूर्वविदेह षोड़शक्षेत्र वर्तमान जिनात्रागच्छ २, अत्र तिष्ठ तिष्ठ वषट् ठः ठः सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चाल—सुगुण हम ध्यावे इसकी ।

क्षीरोदधि सुरसुरीय नीर लै, चरण प्रक्षालि करो भवि जय जय ।
दीप धातुकी पूर्व विदेहा, विहरमान तीर्थंकर येहा ॥
प्रथम सुजाति स्वयं प्रभु दूजो, मनवचतन करि जिनपद पूजो ।
सुपद हम ध्यावे, जिन गुण गण मुनि पार न पावे ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड पूर्वविजयमेरुपूर्वविदेह संजात स्वयंप्रभजिनेभ्यो जलं ॥ ९ ॥

चन्दन अगर कपूर मिलावौ, केशर घसि जिन चरण चढ़ावौ ।
सुपद हम० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ॥
तंदुल धवल अखण्ड पखारौ, पुंज चरण जिन आगै धारौ ।
सुपद हम० ॥११॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥
प्रफुल्लित कुसुम सुवासित नीके, वरनवरन मन हरन सु जीके ॥
सुपद हम० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥

घेवर बावर मोदक खाजे, कंचन थार भलौ लै ताजे।
सुपद हम० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥
दीप रतन तमहरन अनूपम, आरति करत मिटौ मिथ्यातम।
सुपद हम० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥
अगर कपूर सु धूप दशंगी, खेव चरणं ढिग पावक संगी।
सुपद हम० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
लौंग दाख बादाम सुपारी, चरण यजौं जिन भरि भरि थारी।
सुपद हम० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं फल ॥
जल फल अर्घ बनाय थालमें, पूजहु पद धरि ध्यान सु मनमें।
दीप धातुकी पूर्व विदेहा, विरहमान तीर्थंकर येहा ॥
प्रथम सुजात स्वयंप्रभ दूजो मन वच तन करि जिनपद पूजौ।
सुपद हम ध्यावे, जिन गुन मुनि गनि पार न पावै ॥ १७ ॥

---

# प्रत्येक पूजा ( विदेहकी )।

दोहा।

षोडश क्षेत्र सुहावने, सीतोदा तट सार।
दक्षिण उत्तरमें वहे, पूजो जिन सुखकार ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड पूर्वमेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र च षटखंडमंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिकरिमंडित तत्र विहरमान सुजात स्वयंप्रभ जिनेभ्यो अर्घ।

विजयारध षोडश तथा, परे क्षेत्र बिच जोय।
पुरीकूटपर जिनभवन, पूजै अघ क्षय होय ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र सम्बन्धी षोडश विजयारधगिरसनैक चतुचत्वारिंशत कूटकसहस्र सप्तदशशतषष्टोपरिनगर श्रीजिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

वक्षारा वसु जानियै, कूट सु नवयुत येह ।
तिनपर जिनग्रह जिन यजौं, उर धर परम सनेह ॥२१

ॐ ह्रीं पूर्वविदेह अष्टवक्षारगिरि वनकूट तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

षोडश नदी सुहावनी, नाम विभंगा जासु ।
तिन तट जिनग्रह जिन यजौं, उर धर परम हुलासु ॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहक्षेत्र षोडश विभंगा नदीतट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ।

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छंद ।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हर,
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं ।
चिन्मय सुंदर विनत पुंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमें भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द ।

जे महाघाति विधि विघन चक्र. कृत नाशन सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरण नमो हिय धरो ध्यान॥गिरि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु सततनु सहित एव। गि०

जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गिरि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गिरि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु शील ॥गिरि०
जय सुरग मुक्तिपद दानदक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष ॥गिरि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह सर्म वीर्य जिनको न अंत ॥गिरि०
वसुगुन रतननुके हैं भंडार, जैवंते वरतो जग मझार ॥गिरि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह ॥

घत्ता–दोहा ।

जे जिनग्रह द्रव्य क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि ।
तिन बिच जिन प्रतिमावरण, नमो जोरि जुगपानि ॥

अडिल्ल छन्द ।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वच तन चावसो ।
नर सुग्गके सुख भोगि करि फिरि, मुकति पुरघर जावसो ॥
ताके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये ।
ते होहु तुमको सदा जयवते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वाद ।

इतिश्री सिद्धकूट चैत्यालय ताकी जयमाल सम्पूर्णम् ।

---

# अथ धातुकी द्वीप पूर्वमेरु पश्चिम विदेह पूजा।

अडिल्ल छंद।

पूर्व धातुकी मेरु अपूर्व सु जानियै,
षोडश क्षेत्र विदेह जहां परमानियै।
ऋषभानंतमवीरज जिन युगराज ही,
आह्वानन तिन करौ दुरित दुख भाजही ॥३०॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड पूर्वमेरु पश्चिमविदेह षोडशक्षेत्र षट्खंड-मंडित वर्तमान जिनमागच्छागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अथाष्टकं।

चाल होली धमारमे।

क्षीर पयोधि प्रमुख तीरथको, निरमल जल ले आवो।
कंचन कलश भराय गुन, श्री जिन चरण चढावो॥
ऋषभानंतम वीर्यके हो, पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित तिन पूजियै तो, तुरत अखैपद पाय॥
हरष चित धारियै, करि पूजा वसुविधि सार।
सकल अघ टारियै॥३१॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूर्वमेरु पश्चिमविदेह ऋषभानंतवीर्य युगमतीर्थेभ्यो जलं।

बावन चंदन सरस गारि, घन सार मिलावो।
दाह निकंदन रतन कटोरीमें धरि ल्यावो॥

भाव सहित जिन पूजिये तो मोह तिमिर मिट जाय ॥३८॥
॥ ॐ ह्रीं दीपं० ॥

कृष्णागर वर आदिक दस विध धूप सम्हारै।
खेवत अगिनि सुगंध लुब्ध, अलिगन गुंजारै॥
ऋषभानंतम वीर्यके हो, पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित जिन पूजिये, तो सकल करम जरि जाय॥
हरष चित धारिये।
भवि नाचौ गाय बजाय, सकल अघ टारिये॥ ॐ ह्रीं धूपं० ॥

दाख छुहारे लोंग लायची, निंबू श्रीफल भारी।
पिस्ता किसमिस सेउ और, बादाम सुपारी॥
ऋषभा ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं फलं० ॥

जल चंदन अक्षत प्रसून, चरु दीप समारौ।
धूप फलादिक अर्घ टारि, फुनि फुनि उचारौ॥
ऋषभा० ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं० ॥

सुन्दरी छन्द।

दीप धातुकी पूरव मेरुके भाग, पश्चिम जानि विदेह ये।
परे षोडश संख्या जिन कही, तह सु जिनवरपद पूजौ सही॥४२

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पूर्वविदेह परमादि षोडश मण्डित सदा तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि विहरमान जिनेभ्यो अर्घं।

रूपगिरि तह षोडश जानिये, कूट पुर युत सदा प्रमानिये।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषै सजौ॥४३

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र सम्बन्धी षोडश विजयारध शतैकचतुः-

चत्त्वारिंशत्कूटैक सहस सप्तशत षष्ठोपरि नगर श्री जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

अष्ट वछार गिरि जहां परै, कूट नव संयुक्त लसै खरे ।
तहं जिनालय जिनपद पूजिये, शुद्ध मनवचतन त्रय हूजिये ॥४४

ॐ ह्रीं अष्टवक्षारगिरि द्वि सप्तति कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

नदी द्वादश षोड़श क्षेत्र ही, है विभंगा नाम सु तिन सही ।
तासु तट जिनमंदिर राजही, यजौ जिनपद सब दुख भाजही ॥४५

ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छंद ।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं ।
भव्य कमल परकासन् भाजन जगधरं ॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा ।
जै जै जै कृत सुकृतनमें भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द ।

जे महा घाति विध विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिन बीच नमौं पदकमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरण नमो हिय धरो ध्यान ।गि०
सुरनरमुनि गनि नित करत सेव, लक्षन वसु संत तनुमहित खेव ।गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगन भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्ज्जित सुशील ॥गि०

जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष ।।गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महा शर्म वीर्य जिनको न अंत ।।गि०
वसुगुण रतननुके है भंडार, जैवंते वरतौ जग मझार ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह ।।

घत्ता-दोहा ।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र, गिरि नदी तटादिक जानि ।
तिन बिच जिन प्रतिमा चरण, नमो जोर जुग पान ।।

गीता छंद ।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वच तन चावसौं ।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिरि मुकतपुर घर जा वसौं ।।
जाके सुफल करि तीर्थ करि, हरि प्रमुख पदवी पाईयै ।
ते होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिनगुन गाईयै ।।

इत्याशीर्वादः ।

इति विजयमेरु संबंधी पश्चिमविदेह पूजा सम्पूर्णम् ।

---

# धातुकी द्वीप पूर्वविदेह मेरु दक्षिणदिशाऽतीत अनागत वर्तमान पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

दीप धातुकी विजयमेरु तै जानियै ।
दक्षिण भारत क्षेत्र सु प्रथम प्रमानियै ।।
तीतानागत वर्तमान जिनराज ये ।
तिन आह्वानन करो सुधारण काज ये ।।५३।।

ॐ ह्रीं धातुकी दीप पुरवविदेहमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र तीतानागत वर्तमान जिनात्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

नन्दीश्वर श्रीजिनधाम इस चाल्मे ।

कंचन मणिमय भृङ्गार, तीरथ नीर भरौ ।
करि प्रासुक निरमल सार, जिनपद अग्र टरौ ॥
धातुकी भरत पर मेरु, दक्षिण जिन पूजौ ।
तीतानागत जेर, सुर शिव सुख हजौ ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो जलं ।

चन्दन मलियागिर लाय, केमरसम गारौ ।
जिनचरन यजौ सुख पाय, भवदुख निरवारौ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान-जिनेभ्यो चन्दनं ।

तंदुल जल विमल पखारी, जिनपद पुंज धरौ ।
अक्षय मारग पग धार, पुण्य भंडार भरौ ॥
धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजौ ।
तीतानागत जेर, सुर शिवसुख हुजौ ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान-जिनेभ्यो अक्षतं ।

बहु प्रफुल्लित कुसुम, सु आनि वरण वरण कर।
नहिं लगै कुसुम सर बान, पूजत जिन तेरे॥
धातुकी० पू० ॥५७॥ ॐ ह्री पुष्पं० ॥

घृत पूरित बहु पकवान, तुरत बनाय करौ।
जिन चरण यनौ जुग जानि, रोग क्षुधा जु हरौ॥
धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजौ।
तीतानागत जेर, सुर शिव सुख हुजो॥ ५८॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरब मेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान-जिनेभ्यो नैवेद्यं।

बहु दीप रतनमय ल्याय, थाली मांहि धरौ।
करि आरत जिन गुण गाय, मिथ्या तिमिर हरौ॥
धातुकी० ॥ ५९ ॥ ॐ ह्रीं दीपं० ॥

लै अगर कपूर सुगंध, दशविध धूप वरौ।
सब कटैं कर्मको फंद, खेवत जिन सु धरौ॥
धातुकी० ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥

नारियल सदा फल खेव, श्री जिन चरण धरौ।
तुम तुरत अखै पद लेहु, मन वच शुद्ध करौ॥
धातुकी० ॥ ६१ ॥ ॐ ह्रीं फलं॥

जल फल लै वसु द्रव्य सार, जलसे तीसयरौ।
करि पूजा अष्ट प्रकार, नर भव सफल करौ॥
धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजौ।
तीतानागत जेर, सुर शिवसुख हूजो ॥६२॥ ॐ ह्रीं अर्घं॥

# अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

जल फल अर्घ संयुक्त, करि रत्नप्रभ जिन धरौ।
पूरव मेरु सु भूत, धातुकी भारत जिन यजौ ॥६४॥
ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु भरतक्षेतगत रत्नप्रभाय अर्घं ॥ १ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, करि जिन अमित सु नाथजी।
पूरव मेरु सु भूत, धातुकी भारत जिन यजौ ॥६५॥
ॐ ह्रीं अमितनाथाय अर्घं ॥ २ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, कर संभव जिनराजजी।
पूरव० ॥ ६६ ॥ ॐ ह्रीं संभवजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, कर अकलंक जिनेशजी।
पूरव० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं ॥ ४ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु चंद्र जिनचन्द्रस।
पूरव० ॥ ६८ ॥ ॐ ह्रीं सुचंद्रजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु शुभंकर नाम जिन।
पूरव० ॥ ६९ ॥ ॐ ह्रीं शुभंकरजिनाय अर्घं ॥६।
जल फल अर्घ संयुक्त, करि सुतत्व ज्ञायक प्रभू।
पूरव० ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं तत्वज्ञायकजिनाय अर्घं ॥७॥
जल फल अर्घ संयुक्त, करि सुंदर जिन नाम है।
पूरव० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं सुंदरजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥
जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु पुरंदर नाम धर।
पूरव० ॥ ७२ ॥ ॐ ह्रीं पुरंदरजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि स्वामी प्रभवर प्रभू।

पूरव० ॥ ७३ ॥ ॐ ह्रीं स्वामिप्रभाय अर्घं ॥१०॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु देवदत्त नामजी ॥

पूरव० ॥ ७४ ॥ ॐ ह्रीं देवदत्तजिनाय अर्घं ॥११॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि जिन वासवदत्तजी।

पूरव० ॥ ७५ ॥ ॐ ह्रीं वसुदत्तजिनाय अर्घं ॥१२॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि श्रेयांस जिनवर भले।

पूरव० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनाय अर्घं ॥१३॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि विश्वरूप जिन शिव मही।

पूरव० ॥ ७७ ॥ ॐ ह्रीं विश्वरूपजिनाय अर्घं १४॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि तप तेज जिनेशजी।

पूरव० ॥ ७८ ॥ ॐ ह्रीं तपतेजजिनाय अर्घं ॥१५॥

जफ फल अर्घ संयुक्त, करि सिद्धारथ जिन भले।

पूरव० ॥ ७९ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धारथजिनाय अर्घं ॥१६॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि प्रतिबोध सु नाम है।

पूरव० ॥ ८० ॥ ॐ ह्रीं प्रतिबोधजिनाय अर्घं ॥१७॥

णल फल अर्घ संयुक्त, करि संजम जिनराजजी।

पूरवं० ॥ ८१ ॥ ॐ ह्रीं संजमजिनाय अर्घं ॥१८॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि देवेन्द्र सु नाम जिन।

पूरव० ॥ ८२ ॥ ॐ ह्रीं देवेन्द्रजिनाय अर्घं ॥१९॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु प्रवर जिनवर सही ।

पूरव० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं प्रवरजिनाय अर्घ ॥२०।

जल फल अर्घ संयुक्त, करि अभयप्रभ जिनवर यजौ ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं अभयप्रभजिनाय अर्घ ॥२१॥

जल फल अर्घ संयुक्त, विश्वसेन जिनवर यजौ ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं विश्वसेनजिनाय अर्घ ॥२२॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि मेघनयन सुपद यजौ ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं मेघनयनाय अर्घ ॥२३॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि त्रिनेत्र जिनपद यजौ ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं त्रिनेत्रकाय अर्घ ॥२४॥

जल फल अर्घ संयुक्त, कर श्रीप्रभ जिनवर यजौ ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप्रभजिनाय अर्घ ॥२५॥

जीवन चंदन आदिदै लै वसुद्रव्य मनोग्य धातुकी भारत जिन यजौ।

पूरव० ॥ ॐ ह्रीं श्रीप्रभजिनाय अर्घ ॥२६॥

जीवन चंदन आदिदै लै वसुद्रव्य मनोग्य ।
धातुकी भारत, भूत जिन यजौ चरन शुभ योग्य ॥

## अथ जयमाला ।

गीता छन्द ।

सुकर्म मुक्त विमुक्त भव थिति युक्त, पति पति ये सदा ।
समवादि सरण विभूति मण्डित, गुन अखण्डित गत मुदा ॥
धातुकी पूरवमेरु भारत, भूत जिनवर राजही ।
तिनकी कहो जयमाल भविजन, पढ़त सब दुख भाजही ॥८४॥

पद्धडी छन्द ।

जय जय तारन प्रभुजी महान, जय अमितनाथ जुत पूर्ण ज्ञान ।
संभव भव थिति मेटन सु भाव, अकलंक जिनेश्वर नमो पाय ॥
जिन है सुचंद पुनि चंद्र धार, शुभंकर जिनवर जग अधार ।
जय तत्त्व जाण नामा जिनेश, सुन्दर जिनवर काढ़ौ कलेश ॥
पुरंदर स्वामी सु गतिदाय, जय स्वामिनाथ जिन नाम गाय ।
जय देवदत्त भवि मुक्त दूत, वासव जिन गुन युत अप्रमत्त ॥
श्रेयांस जिनेश्वर जग महेश, जय विश्वरूप थिति निज सुदेश ।
तप तेज जिनेश्वर नमौ पाद, सिद्धारथ नाम सु करौ पाद ॥
प्रतिबोध जिनेश्वर बोधदाय, संजम संजम वृत धरन काय ।
अमल प्रभके गुण अमल जानि, देवेन्द्र नमो युग जोरि पानि ॥
जय प्रवरनाथ नुत अमरनाथ, विसुसेन नमौ धरि शीश हाथ ।
जय मेघनंद नामा गणीश, सर्वज्ञ नाम ये जिन चौवीस ॥
तिन चरण कमल द्रिग दरस पाय, नमि२ करि फुनि बलि२ जाय ॥८५॥

घत्ता-दोहा ।

भारत भूत जिनेश जे, पूर्वधातुकी दीप ।
भाषी तिन जयमालवर, राखौ चरण समीप ॥ ८६ ॥

इति श्री धातुकी द्वीप पूर्व भरतभूत जिनपूजा संपूर्णम् ।

---

# अथ वर्तमान पूजा ।

दोहा ।

जल फलादि करि पूजिये, श्री युगादि जिन पाय ।
पूरबमेरु सु धातुकी, भारत गत जिनराय ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं पूरब धातुकी खण्ड भरतक्षेत्रगत श्री युगादि जिनाय अर्घं ॥ १ ॥

श्री सिद्धांत जिनेश पद, पूजौ वसुविध भाय ।
पूरबमेरु सु धातुकी, भारत गत जिनराय ॥ ८८ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धान्तजिनेशाय अर्घं ॥ २ ॥

महासेन जिन पूजिये, जल फल अर्घ बनाय ।
पूरब० ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं महासेनजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

परमारथ जिन पूजिये, जल फल अर्घ सु ल्याय ।
पूरब० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं परमारथजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

समुद्धरन जिनके चरन, पूजौ अर्घ बनाय ।
पूरब० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं समुद्धरनजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

भूधरनाथ जिनेशपद, यजौ अर्घ धरि भाय ।
पूरब० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं भूधरनाथजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

उद्योतक जिन चरण युग, पूजौ मन वच काय ।
पूरब० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं उद्योतजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

अर्जुन जिनपद पूजिये, जल गंधाक्षत लाय ।
पूरब० ॥ ९४ ॥ ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

अभय जिनेश्वरपद यजों, अर्घ द्रव्य वर पाय।

पूरव० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अभयजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

अप्रकंप जिनराजपद, पूजों जल फल ल्याय।

पूरव० ॥ ९६ ॥ ॐ ह्रीं अप्रकम्पजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

श्रीपद्माभ जिनेशपद, पूजों द्रव्य सुभ भाय।

पूरव० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं पद्माभजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

पद्मनंदि जिनपद यजों, अर्घ ल्याय गुण गाय।

पूरव० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं पद्मनंदिजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

नाम प्रियंकर जिन कह्यो, पूजों वसुविधि ताहि।

पूरव० ॥ ९८ ॥ ॐ ह्रीं प्रियंकरजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

श्री सुकृत जिनराजपद, पूजों अर्घ बनाय।

पूरव० ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं सुकृतजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

भद्रेश्वर जिनवर यजों, अर्घ ल्याय गुण गाय।

पूरव० ॥ ९०० ॥ ॐ ह्रीं भद्रेश्वरजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

महाचंद्र मुनिचन्द्र जिन, पूजों शुद्ध सुभाय।

पूरव० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं मुनिचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

पंचमुष्टि जिनराजपद, पूजों हर्ष बढ़ाय।

पूरव० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं पंचमुष्टिजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

जिन त्रिमुष्टके चरण युग, पूजों अर्घ बनाय।

पूरव० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं त्रिमुष्टिजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

गांगकनाथ जिनेशपद, यजों द्रव्य वसु ल्याय।

पूरव० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं गांगकजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

श्री गणनाथ नमौ सदा, पूजौ शुद्ध सुभाय ।
पूरव० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं गणनाथाय अर्घ ॥ २० ॥

श्रीमर्वांग सुदेवके, पूजौ पद गुण गाय ।
पूरव० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं सर्वांगदेवाय अर्घ ॥ २१ ॥

इन्द्रदत्त जिन पूजिये, वसु विधि अर्घ बनाय ।
पूरबमेरु सु धातुकी, भारतगत जिनराय ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं इन्द्रदत्तजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

ब्रह्मनाथ जिनवर भजौ, पूजौ जल फल ल्याय ।
पूरव० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥

गणपति स्वामीके चरण, पूजौ अर्घ चढ़ाय ।
पूरव० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गणपतिस्वामिजिनेभ्यो अर्घ ॥ २४

वर्तमान चौबीसके, चरण यजौ सुखदाय ।
धातुकी पूरव भरतके, पूरण अर्घ बनाय ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ॥ २५ ॥

पूरव धातुकी भरतके, वर्तमान चउवीस ।
तिन सबकी जयमाल शुभ, कह्यौं यानि धरि शीश ॥ ११ ॥

पद्धडी छन्द ।

जय जय जुगादि जिनदेव सार, जय शुद्ध सुमतगत मद विकार ।
महसेननाथ जगहित सुभाय, परमारथ जिन परमार्थ दाय ॥
जय समुद्धरन जिनदेव देव, इन्द्रादिक सुरनर करत सेव ।
जय जय जिन भूधर धर्म धरन, उद्योत जगत उद्योत करन ॥

जय अर्धेव अर्थेव धरमदाय, जिन अभय जिनेश्वर नमौं पाय।
जय अप्रकंप जिनराज सुर, पद्माभ धरनपद क्रांति भूर ॥
जय पद्मनंदि पद इन्द्र वंदि, असुरासर सेव करे अनंदि।
प्रिय करण प्रयंकर नाम जास, जय सुकृत जिन सुकृत निवास ॥
भद्रेश्वर नाम जिनेश गाय, भविजनको भद्र करण सुभाय।
मुनिचन्द्र जगत गुरु है जिनेश, जय पंचमुष्टि जिन लुंचि केश ॥
जय मुष्टि पुष्टि कृत धर्मवृक्ष, जय गांगिक जिन वशकरण अक्ष।
गणनाथ जिनेश्वर गुण गरीय, सर्वांग सर्व भविजन सुप्रीय ॥
जय इन्द्रदत्त पद नमैं इन्द्र, जय जय जिन नाम कह्यौ ब्रह्मेन्द्र।
गणपति फणपतिपद करत सेव, गणपति जिन नाम कह्यो सुएव ॥ १२

घत्ता सोरठा।

यह जयमाल विशाल, वरनी मति माफिक सही।
नमौ चरण सु त्रिकाल, धातुकी पूरव भरत जिन ॥ १३ ॥

इति धातुकी खण्ड पूर्वमेरु दक्षिण भरतक्षेत्र वर्तमान जिनपूजा संपूर्ण।

---

# अथ भावी जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

सिद्धनाथ जिनेश्वर सिद्धकर, सिद्धरमनीपति भावै सुवर।
मेरु पूरब धातुकी भरत जिन, जल फलादिक लै पूजौ सु तीन ॥ १४

ॐ ह्रीं धातुकी पूरब भरत भावी जिन सिद्धाय नमः अर्घं ॥ १ ॥

नाम जिनको है सम्यक्त धरं, भव्य सम्यकदायक पापहरं।
मेरु० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं सम्यकजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

नाम जिनको है सुजिनेन्द्रवर, जयनशील सदा वसु कर्महर ।
मेरु० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं जिनेन्द्रजिनाय अर्घ ॥ ३ ॥
सुपननाथ जिनेश्वर गाइयौ, पूजि पद जिन शिवपद पाइयौ ।
मेरु० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं सुपननाथाय अर्घ ॥ ४ ॥
सर्व स्वामी महासुख धाम है, भव्यजन मन पूरन काम है ।
मेरु० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं सर्वस्वामीजिनाय अर्घ ॥ ५ ॥
नाथ मुनि जिन नाम कह्यौ भलो, पूजि पद जुग मिलैं सु शिव फलो ।
मेरु० ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं मुनिनाथाय अर्घ ॥ ६ ॥
नाम जिन वासिष्ठ सु जानियौ, सर्व सुखदायक परमानियौ ।
मेरु० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं वशिष्ठनाथाय अर्घ ॥ ७ ॥
अमरनाथ जिनेश्वर नाम है, कर्महारी वरी शिव वाम है ।
मेरु० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अमरनाथाय अर्घ ॥ ८ ॥
ब्रह्म शांति जिनेश्वर जानिये, ब्रह्मवेत्ता जग परमानिये ।
मेरु० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मशांतजिनाय अर्घ ॥ ९ ॥
पर्वनाथ जिनेश्वर जिन कहे, पर्व कर्त्ता जगमें जगमहे ।
मेरु० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ ॥ १० ॥
अकामुक जिनको है नामवर, काम रहित लसै तन अति सुघर ।
मेरु० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अकामुकजिनाय अर्घ ॥ ११ ॥
ध्याननाथ जिनेश्वर ध्यान धर, ध्यान करि जीते वसु कर्म अरि ।
मेरु० ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घ ॥ १२ ॥
कल्पनाथ जिनेश्वर नाम है, कल्पतरु सम पूरन काम है ।
मेरु० ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं कल्पनाथाय नम. अर्घ ॥ १३ ॥

संवेश्वर नाम बताइयौ, तिहु जगमें जिन जसु गाइयौ।
मेरु० ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं संवर जनाय अर्घं ॥ १४ ॥

स्वस्थ नाम सु जिन जयकार है, भावजन तिहु जग आधार है।
मेरु० ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं स्वस्थजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

नाम आनंद जिन परमानियै, देन आनंद जगत बखानियै।
मेरु० ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं आनंदजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

तीर्थंकर रवि प्रभ जिन नाम है, परम पुण्य सु गुणके धाम है।
मेरु० ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं रविप्रभजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

चन्द्रप्रभ जिनराज कहे भले, विगत करम सर्व अघ मल गले।
मेरु० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

नंद नाम सुजिन सुखकार है, भव्यजन भव तारनहार है।
मेरु० ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं नन्दजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

है सु जिनको नाम सुकरम शुभ, लह्यौ भव तजि अव्ययपद सु बुध।
मेरु० ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं सुकर्मजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम जासु सुकर्मक वीर है, पापनाशन गुण गंभीर है।
मेरु० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं सुकर्मकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

अमम नाम सु जग गुण गाय है, करमनाश परम पद पाय है।
मेरु० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अममजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम शाश्वत जिन सुखकार है, मुक्त रमणीके भरतार है।
मेरु० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं शाश्वतजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

पार्श्वनाथ स्वधाम दाय है, भव्यजनको शरण सहाय है।
मेरु० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ २४॥

भवि भारत धातुकी, पूरब मेरु जिनेश,
तिन पद पूजन करत भवि, अघको रहै न लेश ॥ ३८॥

पूर्णार्घ।

## अथ जयमाला।

सोरठा।

धातुकी पूरब मेरु, भरत भावि जिनराजरे।
नमौ चरन तिय केर, जिन जयमाल बखानिये ॥ ३९॥

पद्धरी छन्द।

जय सिद्धनाथवर सिद्धदाय, असुरासुर खग नर नमत पाय।
सम्यक्त नाम जिन गुणनु धाम, जिनवर जिनेन्द्र पूरन सु काम॥

जय ब्रह्म शांति जिन शांति करन, ध्यावत भविजन भवभीत हरन।
जिन शांति जिनेश्वर नाम पाय, तिन चरणनमें हम शीश नाय॥

जग तारन है जिन नन्द स्वामि, पद तिनके हम नित शरण जामि।
मुनिनाथ नाथ मुनिनाथ गाय, सुर असुर नाथ जिनमें न पाय॥

वाशिष्ट नाम धारक जिनेश, जिन नमै सुरासुर नर खगेश।
जिन अपरनाथ सुर नमत माथ, गणधर मुनिश्वर युग जोरि हाथ॥

नाथनुके नाथ अनाथ नाथ, नमै पर्श्वनाथको सर्व माथ।
आकामुक नाम कह्यो जिनेश, जिनको अकामतन लसै वेश॥

जय ध्याननाथ किय शिव सुवासु, जिन शुक्लध्यान करि कर्म नास।

जय कल्प जिनेश्वर गुण गंभीर, कल्पद्रुम समदाता सुधीर ॥
जय संवर संवर किय सु भाय, सत्तावन संवर दिय बताय ।
जय सुस्थ जिनेश्वर स्वस्थ जानि, निज ज्ञान सुधीरस कियौ पान॥
जय जय आनंद सु नाम जासु, सुरनर मुनिगण धर नमैं तासु ।
जय शुचिप्रभ नाम जिनेशदेव, ए कोटि भान द्विति धरन एव ॥
जय चंद्र जिनेसुर नाम गाय,लखि द्युति जिन तन रवि शशि लजाय।
जय जय श्रीनंद जिनंद वीर, आनंद कारण भव हरण पीर ॥
जिन नाम सु करन जिनेश जानि, ये तीन लोक धुनि सुनहि कान।
जिन नाम सु कर्म कह्यौ विचारि, तीर्थंकर करम सु भोगकार॥
ममता मद गत जिन अमम नाम, शाश्वत जिन पूरन सर्व काम।
पारस प्रभ भवि निज पार्श्वदाय, भावी चौवीस जिन नमो पाय॥४०

दोहा ।

भावी जिन चौवीसकी, वरणी यह जयमाल ।
पढ़ै सुनै जो कण्ठ धरि, पावै शिव दर हाल ॥ ४१ ॥

गीता छन्द ।

ये सर्व अतिशय युक्त पर, म्हाल्हाद कर पूरन खरे ।
ये त्रिजगतापति पाद पूजित, शिव महल मग पग धरे ॥
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देसक, सुभग शिवत्रिय कंत वे ।
फुनि जय प्रताप सु जनक जिनवर, होहु जग जयवंत वे ॥४०॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्री धातुकी द्वीप पूरव भरतक्षेत्र पूजा सम्पूर्ण ।

## अथ धातुकी द्वीप उत्तर ऐरावत क्षेत्र पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

धातुकी पूरव ऐरावत जानिये,
तीता नागत वर्तमान परमानिये ।
जिन चौवीस तीन भई जहां सार है,
आह्वानन तिन करौं त्रिवार उचार है ॥

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप उत्तर ऐरावत क्षेत्र पूर्व विजयमेरु सम्बंधी तत्र त्रिचतुर्विंशति जिन भूत भविष्यत वर्तमानात्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

### अथाष्टकं ।

वसतधनासिरीकी–रागनी ।

सुरगंगाको नीर क्षीरसम, कञ्चन झारीमें भरो ।
प्रासुक परम पुनीत सरस लै, जिनवर पद पूजा करो ॥
प्रानी पूजो त्रय चौत्रय चौवीसकौं ।
धातुकी पूरवमें ऐरावत, भूत भावि जिनपद यजो ॥
मन वच काय लगाय गाय गुण, यातैं सुर शिवसुख भजो ।
प्रानी पूजो त्रय चौत्रय चौवीसकौं ॥४२॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु उत्तर ऐरावत भीवीस्थित भूतजिनेन्द्रेभ्यो जलं ।

मलयागिरि चंदन केसरिसम, करि कपूर मिश्रित वरो ।
शीतल जल सम सरस गारिके, रतन कटोरीमें धरो ॥

प्रानी पूजो० ॥ ४३ ॥ धातुकी० ॥ ॐ ह्रीं चंदनं।

सालि सुगंध अखण्ड ल्याय करि, ताजे तंदुल लै छरो।
थारी बीच प्रक्षालि सरस जल, जिनपद पंकज अनुसरो॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

जाय जु हीमच कुंद केतुकी, कुसुम सुगन्ध मनोहरो।
कनक रजत मय अर सुरतर कै, लै कंचन थारी भरो॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

मोदक खाजे गूंजा ताजे, फेनी घेवर चरु वरो।
विंजन नाना भांति ल्याय, पायस मिश्री सम घी खरौ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

जगमग ज्योति उद्योत दशौ दिशि, दीप रतनमय ले धरौ।
आरति करि जिन चरन कमल, गुण गाय गाय पायन परौ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

कृष्णागर कपूर लायची, लौंग सुगंध दशौ धरौ।
जिनपद आगै लेय अगिन विच, कर्म काट वसु विधि जरौ।

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

चोचमोच नारंगी सदा फल, अरफास तनमन हरौ।
दाख छुहारे श्रीभारी, लौंग सुपारी लै खरौ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल फल अर्घ बनाय गाय गुण, भक्तिभाव चितमें धरौ।
जिनपद कमल नैन जु परसत, यातैं भवसागर तरौ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ५० ॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

## प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

वज्र क्रांति जिनेश्वर जानियो, कर्म वसु भूधर जिन भानियो ।
धातुकी पूर्व ऐरावत भजौ, भूत जल फल लै वसु विधि यजौ ॥५१॥

ॐ ह्रीं पूर्व धातुकी ऐरावत वज्रकांतिजिनेश्वराय अर्घं ॥१॥

उदयदत्त जिनेश्वर नाम है, उदयगिरि केवल रवि धाम है ।
धातुकी० ॥ ५२ ॥ ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं ॥२॥

सूर्यस्वामि जिनेश्वर नाम जिन, तीन लोक प्रकाशित ज्ञान तिह ।
धातुकी० ॥ ५३ ॥ ॐ ह्रीं सूरस्वामिन्यै अर्घं ॥३॥

नाम पुरुषोत्तम जिनको कह्यो, महापुरुषनु पूजित पद लह्यौ ।
धातुकी० ॥ ५४ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं ॥४॥

सहन स्वामि जिनेश्वर नाम है, सरन आगत जन सुखधाम है ।
धातुकी० ॥ ५५ ॥ ॐ ह्रीं सरनस्वामिने अर्घं ॥५॥

नाम अवबोधन जिनको परौ, बहुत भव्यन संबोधन करौ ।
धातुकी० ॥ ५६ ॥ ॐ ह्रीं अवबोधनजिनाय अर्घं ॥६॥

विक्रमाख्य सु जिनवर जानिये, महाविक्रम धर परमानिये ।
धातुकी० ॥ ५७ ॥ ॐ ह्रीं विक्रमजिनाय अर्घं ॥७॥

नाम निर्घटक जिन सार है, विकट विधि वनजारन हार है ।
धातुकी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं निर्घटजिनाय अर्घं ॥८॥

हरिहरादिक करि सेवित चरण, नाम जासु हरिंद्र सु अघहरण ।
धातुकी० ॥ ५९ ॥ ॐ ह्रीं हरिंद्रजिनाय अर्घं ॥९॥

प्रतीरित जिन नाम महासुघर, भव्य प्रतींद्ररित जिनधर्मवर।
धातुकी० ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं प्रतींद्रतजिनाय अर्घं ॥ १०

नाम निर्वाण जिन गाइयो, भविनु शिवपुर मार्ग बताइयो।
धातुकी० ॥ ६१ ॥ ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

चतुरमुख जिन नाम विशाल है, चार मुख चउदिश शोभा लहै।
धातुकी० ॥ ६२ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्मुखजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

धर्महेत जिनेश्वर देत शिव, हरिहरादिक पद फुनि कल्पदिव।
धातुकी० ॥ ६३ ॥ ॐ ह्रीं धर्महेतजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

शुक्रतेन्द्रशतेन्द्रनि करि सदा, नमित पद पंकज जिन सर्वदा।
धातुकी० ॥ ६४ ॥ ॐ ह्रीं शुक्रतेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १४

श्रीश्रुताब्धि जिनेश्वर है सही, सुत समुद्र गुणागर सुम मही।
धातुकी० ॥ ६५ ॥ ॐ ह्रीं श्रुताब्धिजिनाय अर्घं ॥ १५

विमलरवि जिनवर सु बखानिये, कोटि रवि द्युति धरन प्रमानिये।
धातुकी० ॥ ६६ ॥ ॐ ह्रीं विमलदित्याय अर्घं ॥ १६ ॥

धरन इन्द्र शतेन्द्र सु पूज्य पद, भव्यजननु हरो जिन जन्मगद।
धातुकी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं धरणेंद्राय अर्घं ॥ १७ ॥

भव्य पाथो निधिको तरनि सम, तीर्थनाथ सुपद पूजे सु हम।
धातुकी० ॥ ६८ ॥ ॐ ह्री तीर्थनाथाय अर्घं ॥ १८ ॥

देवप्रभ जिनराज विराजही, देव सेव करत निज काजही।
धातुकी० ॥ ६९ ॥ ॐ ह्रीं देवप्रभजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

तीर्थ सर्वार्थसिद्ध नाम जिन, धर्म तीर्थ प्रवर्त्तक नमो तिन।
धातुकी० ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धजिनाय अर्घं ॥ २०

जिन सु धार्मिक नाम बताइयो, धर्म धारण जग जसु गाइयो।
धातुकी० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं ॥२१॥
क्षेत्र स्वामि जिनेश्वर नामवर, सिद्धक्षेत्र विषै जिन वासकर ।
धातुकी० ॥ ७२ ॥ क्षेत्रस्वामिजिनाय अर्घं ॥२२॥
नाम जिन हरिचद्र सु गुरु कह्यो, चंद्र सूरजकर पूजन लह्यो ।
धातुकी० ॥ ७३ ॥ ॐ ह्रीं हरिचद्रजिनाय अर्घं ॥२३॥

दोहा ।

ये जिनवर चौवीस, भनि धातुकी पूरव मेर ।
ऐरावत तेतीत युग, पद वंदौं तिन केर ॥ ७४ ॥
ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ।

## अथ जयमाला ।

भूत सु जिन चौवीसकी, वरनौ गुण जयमाल ।
ऐरावत विच जानिये, वंदौं चरण त्रिकाल ॥ ७५ ॥

पद्धडी छन्द ।

वज्र स्वामि तन वज्र धरन है, उदयदत्त जग उदय करन है ।
सूर्य स्वामिवर बोध प्रकाशक, पुरुषोत्तम तत्वारथ भासक ॥
शरण जिनेश्वर अशरण शरणं, अवबोधन भविबोध सु करणं ।
विक्रमार्क महाविक्रम धारक, निर्घटक जग जीवनु तारक ॥
जिन हरिचंद्र विधि मृग सु हरिंद्र, नाम प्रतीरित कहत चिंद्रं ।
निर्वाणक निर्वाण सु दायक, नाम चतुर्मुख तिहु जगनायक ॥
धर्म हेतु जिन धर्म धुरंधर, दशविध धर्म कथन कर सुन्दर ।
शुक्रतेन्द्र जिन सुकृत बढ़ावन, श्रुतांबुधि भवि पाप नसावन ॥

विमलादित्य नाम जिन गायौ, धर निरंधर निज सु छायौ ।
जिन सु तीर्थ तीर्थंकर स्वामी, सर्वारथसिद्ध तिहूं जगनामी ॥
धार्मिक नाम धरम दश भाष्यौ, क्षेत्र स्वामि आतमरस चाख्यौ ।
उदयदत्त जिन जगत उदय किय, श्रीहरिचंद्र करम हरि शिवतिय ॥
नाम प्रतिरित जगत कीरति, धर्म हेत जिन दाय धर्म मति ।
देव प्रभू देवनिके देवा, सुखद सकल करत जिन सेवा ॥

घत्ता—दोहा ।

आरति तीन जिनेशकी, वरनी बुधि अनुसार ।
तिनके युगपद कमलपद, कमल नैन बलिहार ॥ ७६ ॥

इति ऐरावत क्षेत्रातीत जिन पूजा संपूर्णम् ।

सोरठा ।

पूजौ जल फल आनि, जासु अपश्चिम नाम है ।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरव मेरके ॥७७॥
ॐ ह्रीं अपश्चिमजिनाय अर्घं ॥ १ ॥
पूजौ जल फल आनि, पुष्पदंत जिनवर भले ।
ऐरावत० ॥ ७८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनाय अर्घं ॥२॥
पूजौ जल फल आनि, नामरहंत जिनेशजी ।
ऐरावत० ॥ ७९ ॥ ॐ ह्रीं अरहंतजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥
पूजौ जल फल आनि, जिन सु चरित्र चरन युगे ।
ऐरावत० ॥ ८० ॥ ॐ ह्रीं सुचारित्रजिनाय अर्घं ॥४॥
पूजौ जल फल आनि, सिद्धनन्दि जिनवर सही ।
ऐरावत० ॥ ८१ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धनन्दिजिनाय अर्घं ॥५॥

पूजो जलफल आनि, नंद नाम जिनेश्वर।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरव मेरके ॥८२॥
ॐ ह्रीं नंदननामजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

पूजौ जल फल आनि, पद्म कूप जिन नाम है।
ऐरावत० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं पद्मकूपजिनाय अर्घं ॥ ७॥
पूजौ जल फल आनि, उदयनंदि जिनवरनवर।
ऐरावत० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं उदयनंदिजिनाय अर्घं ॥८॥
पूजौ जल फल आनि, रुक्मदेव जिनवर भलौ।
ऐरावत० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं रुक्मदेवाय अर्घं ॥ ९ ॥
पूजौ जल फल आनि, जिन कृपाल सुदयाल जग।
ऐरावत० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं कृपालजिनाय अर्घं ॥१०॥
पूजौ जल फल आनि, प्रोष्ठिल जिनको नाम है।
ऐरावत० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं प्रोष्ठिलजिनाय अर्घं ॥११॥
पूजौ जल फल आनि, सिद्धेश्वर जिन जानिये।
ऐरावत० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेश्वराय अर्घं ॥ १२ ॥
पूजौ जल फल आनि, अमृतदेव जिनराजजी।
ऐरावत० ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं अमृतदेवजिनाय अर्घं ॥१३॥
पूजौ जल फल आनि, स्वामि नाम जिनवर कह्यो।
ऐरावत० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं ॥१४॥
पूजौ जल फल आनि, मोनिलिंगवर नाम जिन।
ऐरावत० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं मोनिलिंगस्वामिने अर्घं ॥१५॥

पूजौ जल फल आनि, सर्वारथ सिद्ध नाम है ।
ऐरावत० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं सर्वारथसिद्धजिनाय अर्घं ॥१६॥
पूजौ जल फल आनि, मेघनंदि जिनवर भले ।
ऐरावत० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं मेघनंदिजिनाय अर्घं ॥१७॥
पूजौ जल फल आनि, केशवनंदि जिनेशजी ।
ऐरावत० ॥९४॥ ॐ ह्रीं केशवनंदिजिनाय अर्घं ॥१८॥
पूजौ जल फल आनि, हरिहर नाम सु गाइये ।
ऐरावत० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं हरिहरजिनाय अर्घं ॥१९॥
पूजौ जल फल आनि, शांति नाम जिनको भलो ।
ऐरावत० ॥९६॥ ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनाय अर्घं ॥२०॥
पूजौ जल फल आनि, श्री आनंद जिनन्द है ।
ऐरावत० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं आनंदजिनाय अर्घं ॥२१॥
पूजौ जल फल आनि, जिन अधिष्ठ नामा कहै ।
ऐरावत० ॥९८॥ ॐ ह्रीं अधिष्ठितजिनाय अर्घं ॥२२॥
पूजौ जल फल आनि, कुंड पार्श्व जिनवर सही ।
ऐरावत० ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं कुंडपार्श्वजिनाय अर्घं ॥२३॥
पूजौ जल फल आनि, नाम विमोचन जिन पर्यौ ।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरब मेरके ॥
ॐ ह्रीं विरोचनजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

वर्तमान चौवीस जिन, ऐरावत गत जानि ।
धातुकी पूरब मेरके, पूजौ जिन सुखकार ॥

वर्तमान चौवीस जिन, ऐरावत विच सार ।
धातुकी पूरव मेरके, पूजौ जिन सुखकार ॥ १००० ॥

पूर्णार्घ ।

## अथ जयमाला ।

पदडी छन्द ।

जय जय सु अपश्चिम सुगुण धार, जय पुष्पदंत जिन दलित मार ।
जय जय श्रीजिन अरहंतदेव, सुर सेवित पद सु चरित्र एव ॥
जय सिद्धि नंद जिनचरण वंदि, जय नंदन जिनपद वंदौ अनंदि ।
जय पद्म कूपवर गुणन कूप, जय उदय नंदि शिव सिद्ध रूप ॥
जय रुक्मदेव जिन नाम सार, जय नाम कृपाल हृदया धार ।
जय प्रोष्टिल जिन जग नाम गाय, सिद्धेश्वर भविजन सुगतिदाय ॥
जय अमृतदेव सुर करत सेव, स्वामी जिन जग स्वामी सु एव ।
जय भवनि लिंग जीतौ अनंग, सर्वारथ भाषित द्वादशांग ॥
जय मेघनंदि नामा जिनेश, जय जय श्रीजिनवर नंदि केश ।
जय हरिहर हरिहर नमत पाय, जय शांति शांति करता बताय ॥
आनंदि स्वामि पद शरणनामि, जय जय अधिष्ट पूरन सु कामि ।
जय कुण्डपार्श्व भविदिय सु पार्श्व, जिन नाम विरोचन नमौ तासु ॥ १

घत्ता दोहा ।

जिन नाम सुमाला, सुगुण विशाला, सो भवि निज कंठे धरई ।
जो सुर धरि गावै, सुर पद पावै, वारिज द्रग शिवतिय वरई ॥ २ ॥

इतिश्री धातुकी पूर्वमेरु ऐरावत वर्तमान जिन पूजा संपूर्णम् ।

# अथ भावी जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

वीर जिनवर महावीर है, विगत शोकहरन परपीर है।
धातुकी पूर्व ऐरावत यजौ, जल फलादिक लै वसु विधि सजौ ॥१॥
ॐ ह्रीं वीरजिनाय अर्घ ॥ १ ॥

विजय जिन विधि रिपु जय करन है,
ज्ञान धरन मिथ्यातम हरन है।
धातुकी० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं विजयजिनाय अर्घ ॥ २ ॥

सत्य जिन सत्यारथ वानि जिन,
सत्य धरम प्रकाशक नमौ तिन।
धातुकी० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं सत्यजिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

महा मृगेन्द्र शतेन्द्र सु पूज्य पद,
पाइ कर नास्यौ जिन जन्म गद।
धातुकी० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं महामृगेन्द्रजिनाय अर्घ ॥४॥

नाम चिंतामणि जिनराजजी,
भवि अचिंत्य सुधारन काजजी।
धातुकी० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं चिन्तामणिजिनाय अर्घ ॥ ५ ॥

है अशोक विशोक महाप्रभू,
ध्यान रत स्वातम गत जिन स्वयंभू।
धातुकी० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अशोकजिनाय अर्घ । ६ ॥

मृगेन्द्र जिनेन्द्र सु नाम है,
काम गज मर्दन निरकाम है।

धातुकी० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं मृगेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम उपवासक जिन जानिये,
विधि उपासनकी सु बखानिये ।

धातुकी० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं उपवासिकजिनाय अर्घं ॥८॥

पद्म चन्द्र जिनेश्वर सार हैं,
चन्द्रमुख पद कुंज द्युति धार है ।

धातुकी० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं पद्मचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जिन सुबोधक नाम बताइयो,
व्याधि बंधन हरन सु गाइयो ।

धातुकी० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं बोधकजिनाय अर्घं ॥१०॥

नाम चिन्ता हिम जिनको कह्यो,
करन काज अचित्य सु जग महो ।

धातुकी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्री चिताहिमजिनाय अर्घं ॥११॥

है जिनेश जु उत्साहक प्रभू,
भव्य मन उत्साहक करन विभू ।

धातुकी० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं उत्साहकजिनाय अर्घं ॥१२॥

जिन अपासिक नाम प्रमाण हैं,
दियौ भव्यन शिवपुर थान है ।

धातुकी० ॥ १५ ॥ ॐ ह्री अपासिकजिनाय अर्घं ॥१३॥

देव जल जिन नाम परयौ भलो,
काम मृगपति जिन करि दलमलो ।

धातुकी० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं देवजलजिनाय अर्घं ॥१४॥

अनारक सुखकर है सदा,
भव महोदधि तारक शिव प्रदा।
धातुकी० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अनारकजिनाय अर्घं ॥१५॥

अनघ नाम जिनौ उर ल्याइयौ,
अनघ पद तुरतै तिन पाइयौ।
धातुकी० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अनघजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जानि जिन नागेन्द्र सु नामवर,
पञ्चादिक सर्व विपाप हर।
धातुकी ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं नागेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

नाम नीलोत्पल जिन चर भनौ,
भव्य आनंद करन सु है घनौ।
धातुकी० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं नीलोत्पलाय अर्घं ॥ १८ ॥

अप्रकंप नाम सुधार है,
सर्व अमति विनाशन हार है।
धातुकी० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अप्रकंपजिनाय नमः अर्घं ॥ १९ ॥

जिन पुरोहित नाम विचारियै,
तिन चरण पर तन मन वारियै।
धातुकी० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं पुरोहितजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम जिन भिंदक गायौ सुगम,
करमगिरि भेदनकौं वज्र सम।
धातुकी० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं भिंद भिंदकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

पार्श्व देव नमौं पद तासु कै,
नमौ सुरासुर पद जासके ।
धातुकी० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वदेवाय अर्घं ॥ २२ ॥
नाम निर्वाचक जिनको परौ,
जिन सुपद तुम भवि हियरै धरौ ।
धातुकी० ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं निर्वाचकजिनाय अर्घं ॥२३॥
जिन विरोचिप नाम सुगुरु कही,
सदाशिव पुरराज करै मही ।
धातुकी० ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं विरोचिपजिनाय अर्घं ॥२४॥
ये जिनवर नागत, कहे ऐरावत परमान ।
धातुकी० ॥२७॥ ॐ ह्रीं जिनवरजिनाय अर्घं ॥२५॥

## अथ जयमाला ।

सोरठा ।

धातुकी पूरव मेरु, उत्तर ऐरावत विषैं ।
वंदौं पद तिनके, रनागत जिन चौवीसके ॥

चाल–इक बात सुनी है हो कि प्रभु तेरी अकथ कथाकी ढालिमें ।

जय वीर जिनेश्वर हो कि, वीर नु वीर महा ।
श्री विजय स्वामि प्रभ हो कि, शिवपुर वास लहा ॥
जय सत्य जिनेश्वर हो कि, सत्य धरम भाखौ ।
जय महा मृगेन्द्र सु हो कि, मदन गज हनि नाखो ॥
चिंतामनि स्वामी हो कि, चिंता हरन सही ।
अशोक सोक कहत हो कि, जिनपद शरन लही ॥

द्वि मृगेंद्र जिनेश्वर हो कि, करन मृग बस कीने।
उपासक स्वामी हो कि, शिव त्रिय रंग भीनैं॥
जय पद्म चन्द्रप्रभ हो कि, पद्म शशि धरन द्युति।
जय बोध केंद्र प्रभ हो कि, यजतपद सुरसुपति॥
चिंता हिम स्वामी हो कि, चिंता हरन खरे।
उत्साह जिनेश्वर हो कि, जगत उत्साह भरे॥
जिनको सु अपासिव हो कि, नाम बताईयौ।
जय देव देव जस हो कि, जगत जस गाईयौ॥
अनारक स्वामी हो कि, जग सुख छांडि दियो।
स्वामी अनघ जिनेश्वर हो कि, शिवपुर वास कियौ॥
नागेन्द्र जिनेश्वर हो कि, जगतपति पूज्य भए।
नीलोत्पल जिनवर हो कि, जगत जिनचरण नये॥
जय अप्रकंप जिन हो कि, नाम जगतारक है।
सु पुरोहित जिनवर हो कि, शिव सुखकारक है॥
भिदक जिन स्वामी हो कि, चरण उर धारिये।
जय पार्श्व जिनेश्वर हो कि, भवोदधि तारिये॥
निरवाच्य नाम जिन हो कि, परम सुखसागर है।
वीरोचित जिनवर हो कि, गुण रतनागर हो॥३०॥

घत्ता—दोहा।

सकल गुनन संयुक्त ये, सुद्ध बुद्ध उर धार।
ऐरावत पर धातुकी, भावी जिन गुण गाय॥ ३१॥

गीता छंद ।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजौ, मन वचन तन चावसूं।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिरि मुक्तिपुर घर जा वसौं॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइयै।
ते होहु तुमको सदा जयवंते, सु जिन गुण गाइयै॥

इत्याशीर्वाद ।

---

# अथ पश्चिम धातुकी अचलमेरु संबंधी पूजा ।

अडिल्ल छंद ।

द्वितीय धातुकी खंड, अचलगिरि है सही।
पश्चिम दिशमें जानि, जिनालय जिन कही॥
वन गजदंत ऐरावत, भरत विदेहको।
कुलगिरि भोगभूमि आह्वानन करौ तिनको॥ ३२॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड अचलमेरु सम्बन्धी सर्व जिन मुनिराज अत्रावतरावतर संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सान्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

## अथाष्टकं ।

सागरमें प्रानी धातुकी द्वीप सुहावनो॥ टेक॥
रतन ज टत कंचनकी झारी, सुरगंगा जल ल्याइयै।
आनि छानि प्रासुक करियामन, श्री चरण चढाइयै॥

द्वितीय धातुकी खंड, सकल जिनमंदिर प्रतिमा पूजियै।
मेरु उत्तर दक्षिण, सुपरावरतन मन हरपित हूजियै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकीखंड सर्व जिनालयजिनबिंबेभ्यो जलं।

गोसीरप घन सार, सु केसर एला लौंग मिलायकै।
गारि सरस धारि कटोरी, चरण यजौ मुध भायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं।

सालि सुगन्ध कमोद सुवासी, खासी सरस कुटायके।
ले अखण्ड जल विमल पखारो, जिनपद पूज चढ़ायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

वरन वरनके कुसुम मनोहर, अन्तरालु चुत ल्यायकै।
अति सुगंधवश अलिगण गुंजित, तन मन अति हरपायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

ताजो गो घृत तुरत ल्यायकै, बहु पकवान बनायकै।
कंचन थार भराय भविक लै, श्री जिनमंदिर जायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

कंचन दीप थाल बिच धरिकै, चौमुख जोति जगायकै।
आरति करत मोह तम नासै, जिन चरणण ढिग आयकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

अगर कपूर लवंग लायची, और सुगंध मिलायकै।
धूप दहन बिच खेउ भविक वसु, कर्मतु देह जलायकै॥
...गुन० द्वितीय० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

सुंदर सुरस मधुर मन भामन, आम अमृत फल ल्यायकै।
द्रग मन हरन करन सुख नासा, अरु बहु थाल भरायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं फल।

जल चन्दन अक्षत कुसुमावलि, दीप धूप फल लायकै।
कंचन थाल बनाय अरघ भवि, अरचौ मन हरषायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्घ।

द्वितीय धातुकी खण्ड सकल, जिन प्रतिमा पूजिये।
मेरुत्तर दक्षिण सुपराय, रतन मन हरखत हूजिये॥
गुन गावौ भक्ति बढ़ायकै, सुख पावौ शिवपुर जायकै॥ ४२॥
ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकी खण्ड जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ प्रत्येक पूजा।

अडिल्ल छन्द।

तृतीय मेरु पांडुक वन शिला बखानिये,
पांडुक नाम चहु दिशि चारि प्रमानिये।
भरतैरावत और विदेहनके जहा,
न्हवन भयो जिनराज यजो तिन पद महा॥४१॥

ॐ ह्रीं तृतीयमेरु पांडुकवन चतुर्दिश चतुशिलोपरि जिनन्हवन-होल तत्र जिनेभ्यो अर्घ।

पांडुकवन चारौं दिश जिनमंदिर परे,
पूरव दक्षिण उत्तर पश्चिममें खरे।
तिनमें अष्टोत्तर शत प्रतिमा सोहए,
पूजो चरन सरोज दर्श मन मोहए॥४२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरु संबन्धी पांडुकवन चतुःचैत्यालयजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ।

वन सौमनस दूसरौ जन मन मोहनो,
चहुं दिशि चार जिनालय ताहू मैं गनो।
पूरववत अष्टोत्तर शत प्रतिमा भली,
पूजैं पद सुरसुरी जहां करती रली ॥४३॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु सौमनसवन चतुर्दिशि चतुःचैत्यालय जिनेभ्यो अर्घ।

तृतीय मेरु फुनि तृतीय विपनमें राजही,
चारि जिनालय बहु दिशि सुंदर छाजही।
तिनमें बहु शत प्रतिमा चरन सु पूजिये,
जल फल अर्घ बनाय कृतारथ हूजिये ॥४४॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु नंदनवन चतुःचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घ।

भद्रशाल वन चौथो भूपर जहां लसै,
चारि जिनालय चहुंदिशि जा मांही बसै।
अष्टोत्तर शत प्रतिमा इक इकमें खरी,
पूजै सुरपति पाय सु नाचै सुरसुरी ॥४५॥

ॐ ह्रीं तृतीयमेरु भद्रसालवन चतुर्दिशि चतुःचैत्यालय जिनेभ्यो अर्घ।

धातुकी खड अचलगिरि मेरु चहु दिशा,
यजौ चरन जिनराज गेह भवि अहनिशा।

चारों गजदंतनुपर चारि विराजही,
पूजौ पद खग सुरपति बाजन बाजही ॥४६॥

ॐ ह्रीं तृतीयमेरु चारि गजदंतऊपर चारि चैत्यालयजिनविम्बेभ्यो अर्घ्य ।

जंबूवृक्ष धातुकी वृक्ष सुहावनो,
अचलमेरु उत्तर दक्षिण मन भावनो ।
तह जिनमंदिर शाखा अग्र दुइ विषैं,
पूजौं जिनवर प्रतिमा शास्त्र (?) विषै ॥४७॥

ॐ ह्रीं जम्बू धातुकीवृक्षशाखाया जिनालय जिनेभ्यो अर्घ्य ।

---

## अथ कुलाचल पूजा ।

सुदरी छद ।

कूट नव युत निषधाचल भलौ,
तह जिनालय जिन पूजन चलौ ।
जल फलादिक लै भरि थारियै,
पूजि पद उर आनन्द धारियै ॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल नवकूटसंयुक्त जिनालयजिनेभ्यो अर्घ्य ।

निषिधनील सु बीच बखानियै,
भोगभूमि उत्कृष्ट सु जानियै ।
तहां जिनालय जिन मुनि चरन युग,
पूजिये वसु विधि पावो सुरग ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं निषिधनील बिच उत्कृष्ट भोगभूमि तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ्य ।

निषिध ऊपर द्रह सुखधाम है,
जासु तिगंछ सु केशरि नाम है।
तहं जिनालय जिन पूजा करौ,
द्रव्य वसु करि उर आनन्द भरौ ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि तिगंछ द्रह पद्म मध्य धृतिदेवी ग्रह-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

तिगंछ द्रह सेती सरिता युगम,
निकसि चली सागरको अगम।
कृष्ण कांता सीता नाम जिन,
पुलिन गत सुर ग्रह पूजौ सु जिन ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहसे निकसी कृष्णाकांता सीता नदीतट-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन पर्वत दूसरो,
नाम कुलगिरि जाको शुभ परो।
कूट वसु युत जिनग्रह जिन यजौ,
अर्घ वसु विधि थार विषैं सजौं ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन अष्टकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन निषिद्ध सु मध्य थल,
भोगभूमि मध्यम शुभ जानि भल।
चारणर्द्धि सु मुनिपद पूजिये,
अर्घ करि सुर शिव-सुख भूञ्जिये ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिद्ध बीच मध्यमभोगभूमिगत चारणर्द्धि मुनिभ्यो अर्घं।

महाहिम महापद्म सु जानिये,
निकसी सरिता युग्म प्रमानिये ।
नाम भाष्यौ हरित सुरोहिता,
यजौ जिनग्रह तट मन–मोहिता ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनमैं निकसी हरित रोहिता नदी पूरब पश्चिम समुद्रगामिनी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ्यं ।

महाहिम महापद्म सु द्रह विषैं,
कमल मध्य ह्रिीग्रह सुत लिखे ।
तहां जिनालय जिन पूजा करौ,
जन्म जन्म सकल पातिक हरौ ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतपद्मद्रहगत ह्रीदेवी ग्रह तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ्य ।

हिमाचल सु कुलाचल जिन कहा,
कूट नव युत जिनमंदिर तहां ।
यजौ चरन जिनेश्वर सार जू,
जल फलादिक लै भरि थार जू ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं हिमाचल कुलाचल नवकूट संयुक्ताय तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

हिमवतोपरि पद्य द्रह परौ,
पद्म मध्य श्री ग्रह है खरौ ।
तह जिनालय जिन प्रतिमा भजौ,
और भव कारज सब ही तजौ ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं हिमवत परि पद्म द्रह पद्ममध्य श्रीग्रह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महा हैम हिमाचल मध्यवर,
भोगभूमि जघन्य वसै सुघर।
जह सु चारण मुनि जिनराज पद,
यजै छूटत है संसार गद ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोबीच जघन्य भोगभूमि तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

पद्म द्रहसे निकसी सरिता त्रय सही,
गंगासिंधु सु रोहित श्री जिनवर कही।
तासु पुलिन गत सुर ग्रह जिन मंदिर परे,
पूजत पद जिनदेव सकल पातिक हरैं ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं हिमवत पद्मद्रहसे निकसी गंगासिंधुरोहित नदी तटवासी देव जिनभक्ति तत्पर तिसग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

मेर उत्तर नील कुलाचलो, पूर्ववत रचना करि युत भलो।
तहां जिनालय कूट नव पूजतैं, छूटते वसु कर्म सु मेटते ॥६०॥

ॐ ह्रीं मेरुतर नीलाचल पूर्ववत रचना संयुक्त जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

निषिद्ध नील सु बीचमें जानिये, भोगभूमि उत्तम परमानिये।
चारणर्द्धि महामुनि पूजिये, चरण युग तन मन शुद्ध हूजिये ॥६१

ॐ ह्रीं नील निषिद्ध बिच उत्तम भोगभूमि तत्र चारणर्द्धि-
धारी मुनिजिनेभ्यो अर्घं ।

नील पर्वत केशरी द्रह विषैं, पुण्डरीक सहस्र दल श्रुत लिखैं ।
कीर्ति दैवी ग्रह तहां राजही, तहां जिनालय जिन पूजौ सही ॥६२

ॐ ह्रीं नीलाचलोपरि केशरी द्रह मध्य सहस्रदल कमल
तत्र कीर्तिदेवी ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

केशरी द्रहसे निकसी कदी, नाम सीता सीतोदा नदी ।
पूर्व अपर समुद्र सुगामिनी, जिन यजो तिन तट सुरभामिनी ॥६४

ॐ ह्रीं केशरीद्रहसै निकसी सीतासीतोदानदी पूर्वापर
समुद्रगामिनी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

धातुकी सुअचल गिर मेरतैं, दिसि उदीची विच द्रग हेरते ।
नाम रुक्म कुलाचल है खरौ, कूट वसुयुत जिन पूजा करौ ॥६४॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीप षटखंडमंडित पश्चिममेरु रुक्मीकुला-
चलोपरि वसुकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

अडिल्ल छंद ।

रुक्म नील विच भोगभूमि शुभ जानियै,
　　मध्यम जासु विचार हियेमें आनियै ।
चारण मुनि जुग सार विहार करे जहां,
　　तिन चरणांबुज पूजि सरम लहिये महा ॥६५॥

ॐ ह्रीं नील रुक्म गिर बीच भव्य भोगभूमि तत्र चारण
मुनिभ्यो अर्घं ।

रुक्माचल पर पुंडरीक द्रह सार है,
मध्य बुद्धिदेवी ग्रह बहु सुखकार है।
तह जिनमंदिर बीच चरण जिनवर भजौ,
जल गंधाक्षत लाय अरघ बहुविध सजौ ॥६६॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि पुंडरीकद्रहगत बुद्धिदेवीग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुंडरीकसे निकासि दोय सरिता चली,
पूरव पश्चिम जाय महासागर मिली।
नरकांता हिमकूला नाम सु जानियै,
तिनतट जिनग्रह यजौ हरष उर आनियै ॥६७॥

ॐ ह्रीं पुंडरीक द्रहसे निकसी नरकांता रूपकूला नदी–तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अचलमेरतैं उत्तर शिखिरि कुलाचलो,
जानि तीसरो पर्वत राजत है भलौ।
कूट सु एकादश चैत्यालै जानियै,
तह जिन पूजा करत कर्मगिरि भानियं। ६८॥

ॐ ह्रीं शिखिरिपर्वतोपरि एकादशकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

शिखिरि गिरी महा पुंडरीक द्रह और है,
तहां लक्ष्मीग्रह पुंडरीक बिच जोर है।
तहां जिनमंदिर प्रतिमा अर्चन कीजिये,
वसु विधि द्रव्य बनाय अरघ पुनि दीजिये ॥६९॥

ॐ ह्रीं महापुण्डरीक द्रह बीच पुंडरीक मध्य लक्ष्मीग्रह तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

पुंडरीक द्रहसे निकसी सरीता चली,
जाय मिली कालोदधि बीच महा भली ।
रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा नाम हैं,
तिन तट सुर ग्रह यजौ जहां जिनधाम हैं ॥७०॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक महाद्रहसे निकसी सुवर्णकूला रक्ता रक्तोदा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

रुक्म शिखिरपर भोगभूमि शुभ जानिये,
नाम जघन्य बखानि पूज तह ठानियै ।
चारण मुनि महाराज और जिनराजके,
चरण कमलकी जानि सुधर्म जिहाजके ॥७१॥

ॐ ह्रीं रुक्म शिखिर मध्य जघन्य भोगभूमि तत्र चारन मुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

पश्चिम धातुकी मेरु अचल मन भावनौ,
ताके दक्षिण दिश विजयारध पावनौ ।
भरतक्षेत्र गत जानिय जो जिनवर सही,
नवकूट नूपुर सार जिनालय जिन कही ॥७२॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पश्चिम मेरु दक्षिण भरतक्षेत्र गत विजयारधोपरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

वैताड शिखिर बिच युगम श्रेणि राजै खरी,
दक्षिण उत्तर जानि खगन कर जो भरी ।

नगर दशोत्तर शत जिनमंदिर जहं परे,
वसु विध अरघ बनाय तहां पूजा करे ॥ ७३ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी दक्षिण विजयारधोपरि दशोत्तरशत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

धातुकी मेरु अचलगिरतें उत्तर तथा,
नाम तारगिरि जान सार पूजो जथा ।
नवकूटनपर जिनग्रह प्रतिमा जिन यजों,
अर्घ बनाय गाय गुण जिनचरणन भजौ ॥७४॥

ॐ ह्रीं धातुकी अचलमेरु उत्तर ऐरावतगत विजयार्धोपरि कूटनवजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

तार हारगिरि श्रेणीयुग परमानिये,
नगर दशोत्तर शत जिन पूजन ठानिये ।
नाचो गाय बजाय हर्ष उर आनिये,
यातैं पूरव कर्म कुलाचल भानिये ॥ ७५ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी उत्तर ऐरावत विजयारध दशोत्तर शत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

दोहा ।

धातुकी पश्चिम मेरुके, दक्षिण उत्तर जानि ।
नदी शैल द्रहके विषैं, पूजौ जिन गुण खानि ॥७६॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकीखंड अचलमेरु संबंधी नदी शैल द्रहगत दक्षिण उत्तर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकासन जग धरं ।
चिन्मय सुंदर विनत पुरंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द ।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमों पदकमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमो हिय धरो ध्यान ।गि०॥
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षन वसु मत तनु सहित एव ।गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गि०॥
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ।गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगन भविजन मन करत पाद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
गिरि दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महाशर्म वीर्य जिनको न अंत ॥गि०
वसुगुण रतननुके है भंडार, जैवंते वरतो जग मझार ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह ॥

घत्ता–दोहा ।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि नदी तटादिक जानि ।
तिन विच जिन प्रतिमाचरण, नमो जोरि युग पानि ॥

दक्षिण उत्तर धातुकी, मेरु अचल गिरि केर।
जिनग्रह जिनवर पद जजो, होय पुण्यको ढेर॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिन बिंब पूजो, मन वचन तन चावसो।
नर सुरगके सुख भोग करि, फिरि मुकतपुर मर जावसो॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सु जिन गुण गाइये॥८४॥

इत्याशीर्वादः।

इति धातुकी अचलमेरु उत्तर दक्षिण कुलाचल विजयार्द्ध पूजा सम्पूर्ण।

---

## अथ पश्चिम धातुकी खण्ड अचलमेरु सम्बन्धी पूर्व विदेह पूजा।

अडिल्ल छन्द।

धातुकी द्वीप अपर दिशि मेरु सुहावनो,
अचल नाम सुखधाम सुजन मन भावनो।
पूरब तासु विदेहक्षेत्र षोड़श परे,
तह जिनमंदिर जिन आह्वानन हम करे॥८५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकी खण्ड अचलमेरु सम्बन्धी पूरब विदेह जिन अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टक ।

कवित्त ।

कंचनकी झारी अति भारी रतन जड़ाय ।
क्षीरोदधि नीर ल्याय, तामें अति भरिये ॥
शीतल सुगंध डारि मिश्रित, करो सम्हारी ।
जिन अग्र दीजे धार, त्रिधा रोग हरिये ॥
धातुकी ऊपर जानि, पूरब विदेह है थान ।
तहां भगवानके, चरन पूज करिये ॥
सुर प्रभ औ विशालकी, रति सुनाम गाय ।
जुग जिनराय, अब मेरी आश भरिये ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पश्चिममेरु पूरब विदेह विहरमान सूर प्रभ विशालकीरति जिनेभ्यो जल ।

दाहको निकंदन जा मलयागिर चंदन लै ।
तामै केलि नंदन मिलाय गारि धारिये ॥
केशरि सुगंध और कंचन कटोरी जोखी ।
सम घोर पद पूजै शिव वरिये ॥
धातुकी ऊपर जान पूरब, विदेह थान ।
तह भगवानके, चरन पूजा करिये ॥
सुर औ प्रभु विशाल कीरति, सुनाम पाय ।
जुग जिनराय, अब मेरी आश भरिये ॥ ८७ ॥

धातुकी० ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ।

कूटि ताजे तंदुल अखंड सालि मंजुल ले भरि।
करि अंजुल सुथुति उचारिये॥
पूजा जिनकी रचावे जब प्रभू गुन गावे।
जिन नाम ना विसारिये॥
धातुकी० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं

केतुकी गुलाब और चमेली मौरसिरी ल्याव हिये।
धर चाव काहू सों ननैक डरिये॥
शुद्ध होय व गजाय धौत वस्त्र पहिरि धाय।
अंतरीक्ष च्युत ल्याय पूज काज सरियै॥
धातुकी० ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥

गूझा फेनी और घृत पूरन खंड मिलैनी खंड।
सब सुख देनी श्रेणी बंध थार धरिये॥
क्षुधाके हरनहारे गो घृत के सरमौर।
द्रग सुख करन वौर ल्याय चरु वरिये॥
धातुकी॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं चरुं॥

दीपक अमोल हेम रत्नके सु जोग बालि।
बाती चहुं ओर घालि थारि धारी तम हरिये॥
मंदिर ले जाय जिन जूके गुन गाय करि।
आरति सुभाय मिथ्या मोह तम टारिये॥
धातुकी० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं दीपं॥

अगर कपूर और चंदनको चूर जामे।
है सुगंध भूरि लोंग देवदारु दरिये॥

१४

खेवौ बीच धूपदान उठै धूप वान मान ।
　　माननीको हरै मान कर्म काठ जरिये ॥
　　　　धातुकी० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
श्रीफल बादाम लौंग पिस्ता जायफल जोग ।
　　कारन सजोग औरहू सुवेलि फरिये ॥
किसमिस दाख केर नारंगी बिजौरे ढेर ।
　　ल्याइये दमन हेरि आछे आछे धरिये ॥
　　　　धातुकी० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
आदि लीनै शुद्र वारि गंध अक्षतैं सुधारि ।
　　पुष्प चरु दीप जारि धूप फल धरिये ॥
अर्घ वसु विधि करि जिन गुणको उचारि ।
　　नमि पद वार वार भवसिंधु तरिये ॥
धातुकी अपर जानि पूरव विदेह थान ।
　　तहां भगवान्के चरन पूजा करिये ॥
सूरप्रभ औ विशाल कीरति सु नाम गाय ।
　　जुग जिनराय अब मेरी आस भरिये ॥९४॥

इति अष्टकं ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

धातुकी पश्चिमदिश जानियै, मेरु पूरव विदेह वखानियै ।
पद्म आदिक षोडश क्षेत्र जहं, यजौ जिन मुनिराज चरण तहं ॥९५॥
ॐ ह्रीं धातुकीखंड पश्चितमेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडसक्षेत्र

षट्खंड मंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि विहरमान श्रीजिनेभ्यो अर्घं।

तहं सु विजयारध षोडश परे, क्षेत्र षोडश बिच जानों खरे।
कूटपुर बिच जिनग्रह जिन यजौ, अर्घ वसुविधि करि शिवसुख भजौ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र संबन्धी विजयारधगिर सतैक चत्वारिंश-तिकूटेकपद्म सप्तशत षष्ठोपरिनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

है सुवक्षारागिरि वसु जहां, कूट नवयुत सोहत है महा।
तहां जिनालय नितप्रति पूजिये, मन वचन तन शुद्ध सु हूजिये ९७

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि द्विसप्ततिकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विभंगा द्वादश सरिता जहां, क्षेत्र सीम विभाग करन महा।
अकृत्रिम जिनमंदिर राजही, यजौ जिनपद सब दुख भाजही॥९८

ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदी तत् तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर, मोह तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन, भासन जगधरं॥
चिन्मय सुन्दर विनत, पुरंदर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत, नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धडी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरन नमो हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनरमुनि नित हैं करत सेव, लक्षण वसु शत तनु सहित एव॥गि०

जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गि०॥
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०॥
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०॥
जय पुण्य क्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु शील । गि०॥
जय सुरग मुकति पद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष । गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्म्य वीर्य जिनको न अन्त ॥गि०॥
वसु गुण रतननुके हैं भण्डार, जैवंते वरतौ जग मझार ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥

घत्ता-दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि नदी तटादिक जानि ।
तिन विच जिन प्रतिमा चरण नमो जोरि जुग पानि ॥
यह जयमाल विशाल वर, वरनी बुद्धि अनुसार ।
धातुकी अपर विदेहके, हुजे जिन सु दयाल ॥ ५ ॥

गीता छंद ।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसों ।
नर सुरगके सुख भोगि करि फिरि, मुकतिपुर घर जा वसो ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये ।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति धातुकी पश्चिममेरु पूरव विदेह जिनपूजा सम्पूर्ण ।

# अथ पश्चिम धातुकी अचलमेरु संबंधी पश्चिम विदेह पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

धातुकी पश्चिम मेरु अचलगिरि जानिये,
तिम पश्चिमदिश क्षेत्र विदेह प्रमानिये ।
षोडश मित जिनमंदिर जिनप्रतिमा जजौं,
आह्वानन तिन करों त्रिविध जिनपद जजौं ॥६॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु सम्बंधी पश्चिम विदेह षोडश क्षेत्र स्थिति जिनालय अत्रावतरावतर अत्रागच्छागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

छन्द चालि ।

कंचनमय भृंगार सु लै करि, सुची नीर महा प्रासुक भरि ।
अपर विदेह यजौं पद जिनवर, चंद्राननश्री और वज्रधर ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिमविदेह षोडशक्षेत्र सम्बंधी चंद्रानन वज्रधर जुग जिनेन्द्रेभ्यो जलं ।

चंदन घिसि मलियागिरि ल्यावो, केसर सरस कपूर मिलावो ।
अपर० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥

सालि प्रक्षालि सरस शशि हर सम, पुंज धरो जिनचरण सुतजि भ्रम ।
अपर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥

कुसुम मनोहर सुरतरुकेरे, शुभ सुगंधमय ल्याय घनेरे ।
अपर० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥
घेवर बावर मोदक खाजे, फेनी गुजा लै बहु ताजे ।
अपर० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥
दीपक जगमग ज्योति सुहाती, हेम थार विच धरि तमघाती ।
अपर० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।
अगर कपूर सुगंध दसों धरि, खेवत ही वसु कर्म जाहि जरि ।
अपर० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।
लौंग लायची श्रीफल भारी, पिस्ता किसमिस लै भरि थारी ।
अपर० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।

जल चन्दन अक्षत सु पुष्पवर, दीप धूप फल अर्घ सुभग कर ।
अपर विदेह यजों पद जिनवर, चंद्रानन श्री अवर वज्र धर ॥
॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

दोहा ।

पद्मादिक षोडश परे, क्षेत्र विदेह सु सार ।
सीतोदा तट उभय दिशि, पूजों जिन सुखकार ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु पश्चिम विदेह षोडश क्षेत्र षट्-खंडमंडित तीर्थंकरचक्रवर्त्यादिसहित तत्र वर्तमानजिनेभ्यो अर्घं ।

तारागिरि षोडश तहां, षोडश क्षेत्र जु मध्य ।
कूटनगर जिनवर यजों, द्रव्य ल्याय वसु सद्य ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र षोडश विजयार्ध शतैक चत्वारिंशत्कूटैक सहस्र सप्तशतषष्ठोपरिनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वसु वक्षार सुगिरि जहां, क्षेत्र भाग कृत सानु।
नवनवयुत जिनग्रह यजौ, अकृत्रितम जिन प्रतिमानु ॥१९॥

ॐ ह्रीं वसुवक्षारगिर द्विशप्तति कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

द्वादश नदी विभाग कर, नाम विभंगा जानि।
तासु पुलिन जिनग्रह यजौ, वसुविधि जिन सुखखानि ॥२०

ॐ ह्रीं विभंगा नदी द्वादश जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

## अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं।
चिन्मय सुंदर विनत पुरंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धडी छंद।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरन नमो हिय धरो ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगणि नित करत सेव, लक्षन वसु शततनु सहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गि०
जय सदा कोटि रवि धुति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदिपाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०

जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष । गि०
दरशन अनंत पुनि ज्ञानवंत, महशर्म वीर्य जिनको न अंत ॥ गि०
वसु गुण रतननुके है भण्डार, जैवंते वरतौ जगमझार ॥गि०

घत्ता—दोहा ।

जे जिन ग्रह द्रह क्षेत्र, गिरि नदी तटादिक जानि ।
तिन बिच जिनप्रतिमा, चरन नमो जोरियुग पानि ॥
वरनी श्री जिनग्रेहकी, यह जयमाल विशाल ।
धातुकी अपर विदेहकी, नमो चरण तिहु काल ॥

गीता छंद ।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसो ।
नर सुरगके सुख भोगि करि फिरि, मुकति पुर घर जावसों ॥
जाके सुफल कर तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये ।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सु जिन गुण गाइये ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्री धातुकी अपर मेरु अपर विदेह पूजा सम्पूर्णम् ।

---

# अथ धातुकी पश्चिममेरु भरतक्षेत्र पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

धातुकी भारत क्षेत्र अपर दिशि जानिये ।
अचलमेरके दक्षिण भाग बखानिये ॥
तीतानागत वर्तमान जिनवर मही ।
तिन आह्वानन करो त्रिविधि करि जिन कहीं ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु सम्बन्धी भरतक्षेत्रगत तीतानागत वर्तमान जिन अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टक।

ढाल मांगल की-स्यामल सांभल रे, जीव जिनवरके वचन सुइ वने इस चालमे।

पूजै जिनवर केर, चरण सु प्राशुक जल भरि ल्यायकै जी।
धातुकी पश्चिममेर, भारत तीता नागत गत भले जी॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु भारतक्षेत्र गत तीता नागत जिनेभ्यो जलं।

पूजो जिनवरके चरण, सु बावनं चंदन ल्यायके जी।
धातुकी पश्चिम मेर, भारत तीता नागत भले जी॥

ॐ ह्रीं चंदनं।

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु तंदुल विमल पखारिकै जी।
धातुकी० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

पूजो जिनवरकेर चर्न, कुसुम मनोहर ल्यायकेजी।
धातुकी० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु चरुवर थार भरायके।
धातुकी० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु दीपक रतन जगायके।
धातुकी० ॥ ६ । ॐ ह्रीं दीपं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु गंध मगायकेजी।
धातुकी० ॥ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥

पूजौ जिनवरकेर चर्न, सुफास्तु फल मल ल्यायकेजी ।
धातुकी० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
पूजौ जिनवरकेर चर्न, सु जल अर्घ बनायकेजी ।
धातुकी० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सोरठा ।

जल फल ल्याय, वृषभ जिनेश्वर पद यजौ ।
पश्चिम धातुकी सार, भारत तीत जिनेशजी ॥
ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घं ॥ १ ॥
जल फल ल्याय अपार, प्रिय सुमित्र जिन नाम है ।
पश्चिम० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, शांतिप्रभू जिनपद यजौ ।
पश्चिम० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं शांतिजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, सुमति जिनेश्वर पूजिये ।
पश्चिम० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सुमतिजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, आदिनाथ पद पूजिये ।
पश्चिम० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, अतिव्यक्तक जिन नाम है ।
पश्चिम० ॥६॥ ॐ ह्रीं अतिव्यक्तिजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, कालसैन जिनवर जजौ ।
पश्चिम० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं कालसैनजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, कर्म जिनेश्वर नाम है ।
पश्चिम० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं कर्मजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, जिनप्रबुद्ध युगपद जजों ।
पश्चिम० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं प्रबुद्धजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, वप्र जिनेश्वर पूजिये ।
पश्चिम० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं वप्रजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, जिन सौधर्म सु गाइयो ।
पश्चिम० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं धर्मजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, तमोदीप जिन नाम है ।
पश्चिम० ॥१२॥ ॐ ह्रीं तमोदीपजिनाय अर्घं ॥
जल फल ल्याय अपार, वज्र स्वामि जिनवर यजौं ।
पश्चिम० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रस्वामिने अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, जिन प्रबुद्ध जुगपद यजौं ।
पश्चिम० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं प्रबुद्धजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, श्री प्रबंध जिनवर यजौं ।
पश्चिम० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं प्रबन्धस्वामिने अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, जिन अतीत युगपद यजौं ।
पश्चिम० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अतीतजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, सुमुख नाम जिनवर यजौं ।
पश्चिम० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं सुमुखजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, जिन पल्योपम पूजिये ।
पश्चिम० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं पल्योपमजिनाय अर्घं ।

जल फल ल्याय अपार, पद अकोप जिनके यजौ ।
पश्चिम० । १९ ॥ ॐ ह्रीं अकोपजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, निरत नाम जिन पूजिये ।
पश्चिम० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं निरतजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, मृग द्रग पद पूजौ मही ।
पश्चिम० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं मृगनयनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, श्रीपदस्थ जिनवर यजौ ।
पश्चिम० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं पदस्थजिनाय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, देव देवेन्द्र चरण यजौ ।
पश्चिम० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं देवदेवेंद्राय अर्घं ।
जल फल ल्याय अपार, श्रीशिवनाथ सु पूजिये ।
पश्चिम० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं शिवनाथाय अर्घं ।

दोहा ।

पश्चिम धातुकी भरतके, भूत जिनेश्वर जानि ।
तिन चरणांबुज पूजते, होत परम कल्याण ॥
ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ।

इति भूत जिन पूजा संपूर्णम् ।

## अथ जयमाला ।

छन्द त्रिभङ्गी ।

ये भूत जिनेश्वर पूजत सुरनर मन वच तन करि तिन पाऊं ।
भारतगन स्वामी तिहु जगनामी, पश्चिम धातुकी गुण गाऊं ॥
अचलमहीधर दक्षिण दिशपर, है सु क्षेत्र वर तिम माहीं ।
शिव-सुखके कारण भवदधि तारण, जिनसम देव अवर नाहीं ॥

ढाल—बडा राजुल पच स की।

जय जय जिनजी, वृषभ जिनेश्वर, चरण सेव सुरपति करैं।
जय जय जिनजी, मित्र प्रिय वर नाम, तुमी हिये धरैं॥
जय २ जिनजी शांतिकरन जग शांति करन,
जग शांतिचरन मन ध्याइये, जिन गुनतुकोजी।
सुरनर मुनिगण गावत पार न पाइये॥
जय जय जिनजी सुमति जिनेश्वर,
सुमति जिनेश्वर सुमति देत भव जन भले।
जय२ जिनजी आदि प्रभंकर, करम नाशि शिवपुर चले॥
जय२ प्रभूजी सुवर व्यक्त अति नाम तुम्हारो गाइये।
जय२ प्रभूजी कालसैनि जिन काल नाशि शिव पाइये॥
जय२ प्रभूजी करम जिनेश्वर करम काटि भवि थिति तजी।
जय२ प्रभूजी प्रबुधक जग दुख तजि जिन शिवरमनी भजी॥
जय२ प्रभूजी सिरी वस जिनराज चरण सेवन करौ।
जय२ जिनजी श्री सौधर्म जिनेश नाम हियरे धरौ॥
जय२ जिनजी तमोदीप जिनवर पद युगतिन ध्याइये।
जय२ जिनजी वज्रप्रभूके नित गुण भवि गाइये॥
जय जय प्रभजी नाथ प्रबुद्ध, जिनेश्वर शरण लई हमी।
जय२ जिनजी तीर्थ प्रबन्ध नव सुविधि तोरियो।
जय२ जिनजी, नाथ अतीत सु शिवतिय संग हित जोरियो॥
जय जय जिनजी, सुमुख जिनेश्वर विमुख भये।
जग जालतैं जय २ प्रभूजी, पल्योपम शरणागत जनप्रतिपालते॥

जय२ प्रभूजी तीर्थ अकोपक नाम, जगत सुखकार है।
जय२ प्रभूजी नाम जिनेश्वर, नृपित गुण अविकार है॥
जय२ जिनजी, नाम नाम, नाभिमृग दैन सर्व सुख जगतको।
जय२ जिनजी, नाथ पदस्थित थुति क्यों मैं करि सकों॥
जय जय जिनजी, देव देव देवेन्द्र नाम धारक कहै।
जय जय प्रभूजी, जगतनाथ शिवनाथ भये विधि वसु दहे॥

घत्ता—दोहा।

यह जयमाल विशाल वर, उर पहिरो मन ल्याय।
धातुकी भारत भूत जिन, अपर दिशा सुखदाय॥

---

# अथ धातुकी दीप पश्चिम भरतक्षेत्र वर्तमान जिन पूजा।

सोरठा।

जल फल अर्घ बनाय, विश्व चन्द जिन पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी जानिये॥
ॐ ह्रीं विश्वचन्द्राय अर्घ ॥ १ ॥
जल फल अर्घ बनाय, कपिल जिनेश्वर पद यजौं।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी दीपके॥ २६॥
ॐ ह्रीं कपिलजिनाय अर्घ ॥ २ ॥
जल फल अर्घ बनाय, वृषभ जिनेश्वर पूजियै।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीपके॥ २७॥
ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

जल फल अर्घ बनाय, प्रियतेज सु जिन पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥२८॥
ॐ ह्रीं प्रीयतेजसाय अर्घं ॥ ४ ॥
जल फल अर्घ बनाय, प्रशमनाथ जिनवर यजो।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥२९॥
ॐ ह्रीं प्रशमजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥
जल फल अर्घ बनाय, विषम अंग जिनपद यजों।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३०॥
ॐ ह्रीं विषमांगाय अर्घं ॥ ६ ॥
जल फल अर्घ बनाय, श्री चारित्र यजों सही।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३१॥
ॐ ह्रीं चारित्रजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥
जल फल अर्घ बनाय, प्रभादित्य जिनवर यजों।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३२॥
ॐ ह्रीं प्रभादित्याय अर्घं ॥ ८ ॥
जल फल अर्घ बनाय, मुंजकेश पद पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३३॥
ॐ ह्रीं मुंजकेसाय अर्घं ॥ ९ ॥
जल फल अर्घ बनाय, वीतत्रास जिनवर यजौ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३४॥
ॐ ह्रीं वीतत्रासाय अर्घं ॥ १० ॥
जल फल अर्घ बनाय, चरण सुराधिपके यजौ।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे । ३५ ।
ॐ ह्रीं मृगाधिपाय अर्घं ॥ ११ ॥
जल फल अर्घ बनाय, दयानाथ पद पूजिये ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे । ३६॥
ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं ॥ १२ ॥
जल फल अर्घ बनाय, सहस्रभुज जिनवर यजों ।
भारत गत जिनराय. अपर धातुकी द्वीप जे । ३७॥
ॐ ह्रीं सहस्रभुजाय अर्घं ॥ १३ ॥
जल फल अर्घ बनाय, जिन सिंहप्रभ पद यजों ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३८॥
ॐ ह्रीं जिन सिंहाय अर्घं ॥ १४ ॥
जल फल अर्घ बनाय, ऐरावत जिन पूजिये ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३८।
ॐ ह्रीं ऐरावतजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
जल फल अर्घ बनाय, बाहु जिनेश्वर पूजिये ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३९॥
ॐ ह्रीं बाहुजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥
जल फल अर्घ बनाय, श्रीमाली जिन पूजिये ।
भारत गत जिनराय, अपर धातकी द्वीप जे ॥४०॥
ॐ ह्रीं श्रीमालीजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥
जल फल अर्घ बनाय, पद अजोग जिन के यजौं ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥४१॥
ॐ ह्रीं अजोगजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल अर्घ बनाय, कामसतु जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं कामसतुजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥
जल फल अर्घ बनाय, आरंभक जिनपद यजों ।
भारथ० ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं आरंभकजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
जल फल अर्घ बनाय, नेमिनाथ जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
जल फल अर्घ बनाय, गर्भ ज्ञान जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं गर्भज्ञानजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
जल फल अर्घ बनाय, एकार्जितपद युग यजौं ।
भारथ० ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं एकार्जितजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल अर्घ बनाय, श्रीसुकेश जिनपद यजों ।
भारथ० ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं सुकेशजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

अडिल्ल छन्द ।

धातुकी भारथक्षेत्र, अपर गत जानिये ।
ये चौवीस जिनेश्वर, परम प्रमानिये ॥
पूरण अर्घ बनाय, गाय गुण सारजू ।
पूजों चरणकमल, द्रग सब सुखकारजू ॥ पूर्णार्घं ॥

## जयमाला ।

दोहा ।

विश्वचन्द्रको आदि दे, एकार्जित पर्यन्त ।
भारथगत चौवीस जिन, अपर धातुकी अंत ॥ ४९ ॥

पद्धडी छन्द।

जय विश्वाधिप नामा जिनेश, जय कपिल जिनेश्वर नुत महेश।
जय वृषभदेव सुर करत सेव, प्रिय तेज जिनेश्वर नाम एक॥
जय प्रशमनाथ जिन शांतिरूप, विन माग नमें तिहुँ जगत भूप।
चारित्र धरन चारित्र नाथ, श्री प्रभादित्य नमौं जोरि हाथ॥
जय मंजुरूप जिन मंजु केश, जय वीत पास दिय वृष निदेश।
जय जयहि सुराधिप नाम गाय, जय दया अंगयुग नमें पाय॥
जय सहस्रार जिन मार मार, जिन सिंह भवोदधि भए पार।
रैवत जिन नाम सु जगविख्यात, श्रीबाहुस्वामि जग करन शांत॥
जय श्रीमाली साली सुगन, जिन श्री अजोगपद करो नमन।
जय जय श्रीजिन सु अजोगनाथ, जय जयहि सकाम तु नमौ माथ॥
जय आरंभक जिन नाम गाय, जय नेमिनाथ सुखकरि सुभाय।
जय गर्भ ज्ञान शुभ चरनध्यान, नमौं एकजित जुग जोरि पान॥५०

घत्ता-त्रिभंगी छन्द।

चौवीस जिनेश्वर जग परमेश्वर अघ हरनं।
धातुकी गत भारथ अपर अनारत भविजन तारत सुखकरणं॥
ते पूजै ध्यावै भक्ति बढ़ावै, वांछित पावै भौभौमें।
सुर नर मुनि वंदित पूजित पंडित काम विहंडित पद नौमें॥५१॥

इति धातुकी द्वीप पश्चिम भरत वर्तमान पूजा संपूर्णम्।

---

# अथ धातुकी द्वीप पश्चिम भरत भावी पूजा।

जल फल ल्याय अपार, रक्त केश जिनवर भजौ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५२ ॥
ॐ ह्रीं रक्तकेशजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

जल फल ल्याय अपार, चक्र हस्त जिनराजजी।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५३ ॥
ॐ ह्रीं चक्रहस्तजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री कृतनाथ जिनेशजी।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकृतनाथाय अर्घं ॥ ३ ॥

जल फल ल्याय अपार, परमेश्वर जिन नाम है।
पश्चिम धातु.ी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५५ ॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥

जल फल ल्याय अपार, सौ मूर्तिक जिनवर भजौं।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं सौमूर्तिकजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

जल फल ल्याय अपार, सौहूर्तिक जिनवर भजौ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ५७ ॥
ॐ ह्रीं सौहुर्तिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्रीमिकेश जिनवर भजौं ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ५८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमिकेशाय अर्घ ॥ ७ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्वेतांगद जिन नाम है ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ५९ ॥
ॐ ह्रीं श्वेतांगदजिनाय अर्घ ॥ ८ ॥

जल फल ल्याय अपार, अरुज चरण कुज जुग भजौं ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६० ॥
ॐ ह्रीं अरुजिनाय ॥ ९ ॥

जल फल ल्याय अपार, देवनाथ जिनवर भजौं ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६१ ॥
ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घ ॥ १० ॥

जल फल ल्याय अपार, नाम दयाधिक जिनवगै ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६२ ॥
ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घ ॥ ११ ॥

जल फल ल्याय अपार, पुष्पनाथ महाराज है ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६३ ॥
ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घ ॥ १२ ॥

जल फल अर्घ सु ल्याय, श्रीप्रशांति जिन है सही ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६४ ॥
ॐ ह्रीं प्रशान्तजिनाय अर्घ ॥ १३ ॥

जल फल ल्याय अपार, निराहार जिनराज है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६५ ॥
ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घ ॥ १४ ॥

जल फल ल्याय अपार, जिन अमूर्तिवर नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६६ ॥
ॐ ह्रीं अमूर्तिजिनाय अर्घ ॥ १५ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्रीद्विजनाथ सु नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६७ ॥
ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घ ॥ १६ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री नरनाथ महेश है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६८ ॥
ॐ ह्रीं नरनाथाय अर्घ ॥ १७ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री प्रतिच्युत जिन नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ६९ ॥
ॐ ह्री प्रतिच्युतजिनाय अर्घ ॥ १८ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री नागेन्द्र जिनेश है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ७० ॥
ॐ ह्रीं नागेंद्रजिनाय अर्घ ॥ १९ ॥

जल फल ल्याय अपार, तीर्थ तपोधिक जिन कहै।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौं ॥ ७१ ॥
ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घ ॥ २० ॥

जल फल ल्याय अपार, दशानीक जिन है भले ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ७२ ॥
ॐ ह्रीं दशानिकाय अर्घ ॥ २१ ॥

जल फल ल्याय अपार, आरण्यक जिन जानिये ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ७३ ॥
ॐ ह्रीं आरण्यकाय अर्घ ॥ २२ ॥

जल फल ल्याय अपार, नाम दशानिक जिन कहै ।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ७४ ॥
ॐ ह्रीं दशानिकजिनाय अर्घ ॥ २३ ॥

जल फल ल्याय अपार, सात्वक तीर्थंकर भजौ ।
पश्चिम धातुकी मार, भारथ भावी जिन यजौ ॥ ७५ ॥
ॐ ह्रीं सात्वकजिनाय अर्घ ॥ २४ ॥

दोहा ।

ये भावी चौबीस जिन, पश्चिम धातुकी द्वीप ।
सुरनर करि पूजत सदा, राखौ चरण समीप ॥ ७६ ॥

## अथ जयमाला ।

पद्धडी छद ।

सुरपूजित रक्त सु केस पाय, फुनि चक्र हस्त वंदौ सु भाय ।
कृत नाथ मुनीश्वर नमो चरन, संसार महार्णव तारन तरन ॥
परमेश्वर जिनको नाम गाय, तिनके पद प्रनमो सीस नाय ।
जय जय सुमृति जिन परम देव, इन्द्रादिक सुरनर करत सेव ॥

जय मुक्तिकांत जगमें महंत, जिन श्री निकेशके गुन अनंत ।
जय जय प्रशस्त जिन नाम धार, जय जय श्री जिनवर निराहार ॥
जय नाम अमूर्तिक चित्तसरूप, द्विजनाथ सुगुन सोहै अनूप ।
अंयोगत जिनके नमौ पाय, श्री अरुज जिनेश्वर मुक्तिदाय ॥
जय देवनाथ देशाधिदेव, जय जयहि दयानिधि नमो एह ।
प्रतिभूति नमौ जिनगुण अपार, नागेंद्र देव सब सुक्खकार ॥
जय जय सु तपोनिधि सुतप कीन, जय नाम दशानन जिन प्रवीन ।
आरन्यक जिनको नाम गाय, प्रभ दशानीक भवि सुक्खदाय ॥
सात्विक जिनवर महिमा निधान, नमो गर्भज्ञान जुग जोरि पानि ।
सोहूंति जिनेश्वर गुण विशाल, प्रासांतिक जिनवर धरम धार ॥
कृत नाथ नमो पद नाय सीस, जे जाय वसे शिवपुर महीस ।।७७॥

घत्ता—सोरठा ।

जहां जयमाल विशाल, वरणो भावि जिनेशकी ।
नमौ चरन तिहुंकाल, धातुकी भारथ अपरकी ॥ ७८ ॥

---

# अथ उत्तर ऐरावत जिन पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

दीप धातुकी पश्चिम जानिये, क्षेत्र ऐरावत परमानिये ।
भूतगत भावी जिनराज है, करौ आह्वानन दुख भाजि है ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु उत्तरऐरावतक्षेत्र तत्र भावीभूतवर्तमान-जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि पठनीयं वारत्रयं ।

## अथाष्टकं ।

छन्द चाल ।

सुर सुरीय नीर प्रासुक सीयरो, लै रतन जटित भृंगार भरो ।
धातुकी अपर ऐरावतमें, गत तीत अनागत यजौ तिनों ॥८०॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिम मेरु उत्तर ऐरावत क्षेत्र भूतभावी जिनेभ्यो अर्घ ।

मलियागिर चंदन लै गारो, सो रतन कटोरीमें धारो ।
धातुकी ऊपर ऐरावतमें, गत तीत अनागत यजौ तिनो ॥८१॥

ॐ ह्रीं चंदनं ।

तंदुल जल सरस पखारी भले, जिन पुंज देत वसु कर्म गले ।
धातुकी० ॥ ८२ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥

लै कुसुम कनकमय सुर तरुके, दोनों कर अंजुल भर करके ।
धातुकी० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥

घेवर बावर सूत्रा फेनी, जिनपद आगे धर कर श्रेनी ।
धातुकी० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥

मनिमय दीपक थारी धरिये, जिन चरनकमल आरति करिये ।
धातुकी० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

कृष्णागर अर करपूर मिलै, खेवो जिनग्रह वसु कर्म जलै ।
धातुकी० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥

फल भल फाह्न लै अति सुथरे, बादाम छुहारे नारियरे ।
धातुकी० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

जल चंदन अक्षत कुसुम चरौ, वर दीप धूप फल अर्घ करौ ।
धातुकी अपर ऐरावतमें, अतीत अनागत यजौ जिनै ॥ ८८ ॥
ॐ ह्रीं अर्घं ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

### धातुकी पश्चिम ऐरावत अतीत जिन पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

नाम शुभ सुर मेरु सु है खरौ, मेर गिरि जिन सुर न्हवन करौ ।
अपर धातुकी ऐरावत भलै, तीत जिन पूजत वसुविधि गलै ॥
ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकी ऐरावत अतीत जिन सुरमेरवे अर्घं ॥ १ ॥
श्री जिनेश्वर जिन कृत जानिये, कन कनारथ हू अपर आनिये ।
अपर० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं जिनकृताय अर्घं ॥ २ ॥
नाम जिनको कैटभ सार है, भविजु भवदधि तारनहार है ।
अपर० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं कैटभाय अर्घं ॥ ३ ॥
जिन प्रशस्त समस्त हरे करम, जाय शिवपुर वास कियो परम ।
अपर० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं प्रशस्तजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥
निर्दयांग सु नाम कह्यौ तथा, कुमति रति वैधव्य करन यथा ।
अपर० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं निर्दयांगाय अर्घं ॥ ५ ॥
कुलंकर जिन नाम सु पाइयौ, कृपासिंधु जगत जसु गाइयौ ।
अपर० ॥ ९४ ॥ ॐ ह्रीं कुलंकरजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥
वर्द्धमान जिनेश्वर जानिये, वचन जिन हिरदेमें आनिये ।
अपर० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं वर्द्धमानजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम जिन अमृतेन्द्र सुगुरु कही, धर्म अमृत वर्षत है सही।

अपर० ॥ ९६ ॥ ॐ ह्रीं अमृतेंद्रजिनाय अर्घ ॥८॥

नाम संख्यानंद जिनेशवर, भव्य आनंददायक पापहर।

अपर० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं संख्यानंदाय अर्घ ॥ ९॥

तीर्थंकर कल्पाकृत नाम है, कल्पद्रुमसम पूरण काम है।

अपर० ॥ ९८ ॥ ॐ ह्रीं कल्पाकृताय अर्घ ॥१०॥

नाम जिनेश हरिनाथ किय, भव्यजन बहुतें शिवधाम लिय।

अपर० ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्घ ॥११॥

बाहु जिनवर जगविख्यात है, प्रगट गुण जिनके अवदात है।

अपर० ॥१००॥ ॐ ह्रीं बाहुजिनाय अर्घ ॥ १२॥

नाम भार्गव जिन गुणगण भरे, विगत सोक भवोदधिको तरे।

अपर० ॥ १०१॥ ॐ ह्रीं भार्गवाय अर्घ ॥ १३ ॥

भद्र करता भद्र जिनेश हैं, भद्र गुण प्रापित सु महेश हैं।

अपर० ॥ १०२॥ ॐ ह्रीं भद्रस्वामिने अर्घ ॥१४॥

नाम विपातन जिन जानिये, कर्म गिरि तोरन परमानिये।

अपर० ॥ १०३॥ ॐ ह्रीं विपातनाय अर्घ ॥१५॥

त्रिपोषित जिन नाम कह्यो तदा, भव्यजन निसंखित किय सदा।

अपर० ॥ १०४॥ ॐ ह्रीं त्रिपोषिताय अर्घ ॥१६॥

ब्रह्मचारी जिन गुण करि बडे, ब्रह्म शैल शिखिरि ऊपर चढे।

अपर० ॥ १०५॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मचारिने अर्घ ॥१७॥

असाक्षिक जिन नाम सु जानिये, असाक्षिक जिन वचन प्रमानियै।

अपर० ॥ १०६॥ ॐ ह्रीं असाक्षिकाय-अर्घ ॥१८॥

नाम चारित्रेश जिनेश हैं, त्रिदश चारित्र धरन महेश हैं।
अपर० ॥ १०७॥ ॐ ह्रीं चारित्रेशाय अर्घं। १९॥
पारनामक जिन जग सार है, पारिनामक भाव सु धार है।
अपर० ॥ १०८॥ ॐ ह्रीं पारनामकजिनाय अर्घं ॥२०
नाम शाश्वत जिन जग गाइयौ, शाश्वतो सुख शिवपुर पाइयौ।
अपर० ॥१०९॥ ॐ ह्रीं शाश्वतजिनाय अर्घं ॥२१॥
सुनिधिनाथ निधीश्वर है सही, भविनुको दीनी सुखनिधि मही।
अपर० ॥ ११०॥ ॐ ह्रीं निधीनाथाय अर्घं ॥२२॥
कौसिकाख्य जिनेश महान है, विष्णु सेवितपद श्रीमान है।
अपर० ॥ १११॥ ॐ ह्रीं कोसिकाय अर्घं ॥२३॥
सु धर्मेश महेश जिनेश हैं, भविनु दिय वरवृषमुपदेश है।
अपर० ॥ ११२॥ ॐ ह्रीं स्वधर्मेशस्वामिने अर्घं ॥२४

अथ ऐरावत धातुकी जिन अतीत ये गाय।
जिन चरणांबुज पूजिये, पूरण अर्घ बनाय ॥ पूर्णार्घं ॥

## अथ जयमाला।

पद्धडी छन्द।

जय सुर मेरु जिनेश्वर हैं, जिन कृतपद पूज्य सुरेसुर हैं।
धातुकी अपर ऐरावतके, जिन तीत नमो पदमदहतके ॥
कैटभ जिनवर पद नमत हमी, सु प्रशस्त नमौ यन कर्ण दमी ॥धा०
निर्दंय हत मोहमहा भटवर, सु कलंकर चरन नमें हरिहर ॥धा०
श्रीवर्द्धमान पद नमन करौ, अमृतेन्द्र चरनयुग हिये धरौ ॥धा०
संख्या नदी जिननाम कहा, कल्पाकृत पूरन काम सहा ॥धा०॥

हरितनाथ नाथ शिवनाथ मही, श्रीबाहु चरन सुर पूजि सही ।।धा०
भार्गव जिननाम कह्यौ गुरुने, पद भद्र नमो शिवतिय परनो ।।धा०
यविया तन चरण नमौ तुम्हरे, सु विपोषित जिनवर गुण अगरे।।धा०
जय ब्रह्मचारि जिननाम कह्यौ, जय साक्षिक जिन वसु कर्म दह्यो।।धा०
जय जय चारित्र जिन नाम महा, जय परिणाम शिव शर्म लहा ।।धा०
खाश्वत जिन नाम सुगाईयो, निधिनाथ पर्म पद पाईयो ।।धा०।।
जय कौसिक पद युग नमन करौ, धर्मेस सदा समे हो तुमरौ।
धातुकी अपर ऐरावतके, जिन तीत नमौ पद मद हनके ।।१३।।

घत्ता–दोहा ।

यह जयमाल विशाल गुन, वरनी सब सुखदाय ।
धातुकी अपर अतीत ये, ऐरावत जिनराय ।।१४।।

---

# अथ वर्तमान जिन पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

प्रथम साधित नाम सु जिन कहे, साधुताखिल काज सु जगमहे।
अपर धातुकी ऐरावत भजौ, वर्तमान सु जिन वसुविधि यजौ ।।
ॐ ह्रीं साधिताय अर्घं ।। १ ।।
स्वामि जिनवर नाम वखानियै, त्रिजगस्वामी जिन परमानियै।
अपर० ।। ॐ ह्रीं स्वामीजिनाय अर्घं ।। २ ।।
नाम स्तिमितेंद्रक जिनको कह्यौ, नमत सुर सुरपति जिन गुन लह्यौ।
अपर० ।। ॐ ह्रीं स्तमितेंद्राय अर्घं ।। ३ ।।

नाम जिन आनंद जिनेश्वरौ, कनक आनंद जगजन दुख हरौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं आनंदजिनाय अर्घ ॥ ४ ॥

पुष्पकोत्फुलक जिन नाम है, सदा प्रफुल्लित मुख सुखधाम है।

अपर० ॥ ॐ ह्री प्रोत्फुलजिनाय अर्घ ॥ ५ ॥

मुंडिकाख्य सुजिन जगमंडनं, सत्यत्रिक मुंडित अघ खंडनं।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुंडिकाय अर्घ ॥ ६ ॥

प्रहत जिन जग नाम सु गाइयो, तह मदन गज दर्प सु ध्याइयो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रहतजिनाय अर्घ ॥ ७ ॥

मदनसिंह सुनाम जिनेश है, यथारथ गुण सहित सु देश है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मदनसिहाय अर्घ ॥ ८ ॥

नाम जिन दशइंद्रिय रोखरौ, प्रहसितानन जिन जन मन हरौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं दशइंद्रियाय अर्घ ॥ ९ ॥

चंद्र पार्श्व जिनेश्वर सार है, पूर्ण चंद्रवदन द्युति धार है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रपार्श्वाय अर्घ ॥ १० ॥

अब्जबोध सुजिन जयवंत है, भव्य बोधकरन सु महंत है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घ ॥ ११ ॥

नाम जिनवल्लभ अघ हरन है, भव्य वल्लभ शिव-सुखकरन है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जिनवल्लभाय अर्घ ॥ १२ ॥

जिन विभूतिक नाम सुहावनो, सदा जो हिरदेमें ध्यावनो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं विभूतिजिनाय अर्घ ॥ १३ ॥

नाम हेमवरन जिन गाइयौ, तन सुवर्ण समान सुहाइयौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुवर्णजिनाय अर्घ ॥ १४ ॥

नाम जासुको कुसुम बखानियौ, दसों दिश जश जग परमानियौ ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं कुकुप्सजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
श्रीनिवास सु श्रीहरिवास है, त्रिजगपति जिनके सब दास है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं हरिवासाय अर्घं ॥ १६ ॥
नाम जिनप्रिय मित्र सु सार है, जगत जीवनु मैत्रीकार है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घं ॥ १७ ॥
है स्वधर्म जिनेश्वर नाम जिन, सकल सुरनर पूजत चर्ण तिन ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुधर्मजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
नाम रत्नप्रिय जग प्रगट है, पद यजों जिन जे भव निकट है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं रत्नप्रियाय अर्घं ॥ १९ ॥
नंदिनाथ जिनेश्वर जानियौ, सदा नंदित गुण परमानियौ ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नंदिनाथाय अर्घं ॥ २० ॥
नाम अश्वानीक सु ठीक है, लसत तन जिनको रमनीक है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अश्वानीकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
पर्वनाथ जिनेश्वर जोर है, देवदास भविनु दिवसोर है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं ॥ २२ ॥
पार्श्वनाथ सही जिन नाम है, जप तजन मन पूरन काम है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥
चित्र हृदय विचित्र गुनाकर, पूज्यपद नर खगपति सुर असुर ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं चित्रहृदयाय अर्घं ॥ २४ ॥
सोरठा–धातुकी गत जिन जानि, अपर ऐरावतके विषैं ।
पूजों जिन गुण खानि, पूरन अर्घ बनायकें ॥ पूर्णार्घं ॥

दोहा—अपर ऐरावत धातुकी, गत जिनवर चौवीस ।
तिन पद वन्दौं भावसों, पाप हरन जगदीश ॥

## अथ जयमाला ।

पद्धडी छन्द ।

जय साधित भव भयहरण पीर, जिन स्वामि भवोदधि लह्यौ तीर ।
धातुकी अपर ऐरावत जानि, गत नमो चरन युग जोरि पानि ॥
स्तमितेंद्र खरेंद्र सु पूज्य पाय, जिन शिवमारग भवि दिय बताय धा०
जय पुष्पोत्पुलक जिननाम पाय, आनंद नाम जिन स्वपद दाय॥धा०
जय मुंडित खंडित कामनीर, जय प्रहत जिनेश्वर धरन धीर ।।धा०॥
जय मदनाशक जिन नाम सार, दशदिंद्र सुगुन सोहे उदार । धा०॥
जय चंद्र पार्श्व जिन नाम जानि, जय उज्वल बोध गिरि कर्म भांनि ॥
जय जिनवल्लभ वल्लभ सु सर्व, विभूतिक जिनवर विगत गर्व ॥धा०॥
जय जय कुकुष्स जिन नमो तोहि, सुवरन प्रभ भवदधि तारि मोहि ॥
हरिवाम जिनेश्वर नाम धार, प्रियमित्र सु शिवपुर किय विहार ॥धा०
सौधर्म धर्म दशभेद भापि, प्रियरत्न हमें निज शरन राषि ।।धा०
जय नंदित नंदित गुन जिनेस, जय अस्वानीक सु जगमहेश ॥धा०
जय पत्र जिनेश्वर नमो पाउं, जिन चित्र हृदय बलि२ सुजाउं ॥धा०॥
जय पार्श्वनाथ जिन पार्श्व दैन, तिन नमें सदा पदकमल नैन ।
धातुकी ऐरावत अपर जानि, गत नमो चरु जुग जोरि पानि ॥

घत्ता—सोरठा ।

यह जयमाल विशाल, वरनी जिन चौवीसकी ।
नमौ चरन तिहुं काल, अपरैरावत धातुकी ॥

# अथ भावी जिन पूजा ।

श्री जिनेन्द्र रविंदु सु नाम है, भव्य तन मन पूज्न काम है ।
अपर धातुकी ऐरावत सदा, भावि जिन वसुविध पूजो मुदा ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रविंदु अर्घ ॥ १ ॥

सौकुमालिक नाम वखानियै, सु कोमल तन धग्न प्रमानियै ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सौकुमालजिनाय अर्घ ॥ २ ॥

नाम पृथ्वीपत जिन सार है, क्षीरवर्ण रुधिर तन धार है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीपतजिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

नाम श्री कुलरत्न जिनेश है, समचतुरसंस्थान महेश हैं ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं कुलरत्नाय अर्घ ॥ ४ ॥

तीर्थ श्रीधर नाम सु जानियै, तीर्थपद करतार प्रमानियैं ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घ ॥ ५ ॥

वरुण नाम जिनेश्वर सोमही, विविधि लक्षण लक्षित तन सही ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं वरुणजिनाय अर्घ ॥ ६ ॥

नाम अभिनंदन जग सार है, तन सुगंध महा सुखकार है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अभिनंदनाय अर्घ ॥ ७ ॥

सर्वनाथ नमत जग माथ है, जिन वचन शिवमाग्ग साथ है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्घ ॥ ८ ॥

नाम सु दृष्टिक जिन जानिये, शुद्ध दृष्टि धरन परमानिय ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदृष्टिजिनाय अर्घ ॥ ९ ॥

सिष्टि जिन जिन महाराज बताइयौ, सिष्टि करत जगन जमु गाइयौ ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सृष्टिजिनाय अर्घ ॥ १० ॥

सुधान्यक जिन नाम कह्यौ महा, परम आनंद कारन पद लहा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुधान्यकजिनाय अर्घं ॥११॥

मरूत् सुरभि करा दश दिशि भलै, सोमचंद्र यजत पद अघ गलै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमचन्द्राय अर्घं ॥ १२ ॥

धूलि कंटक विगतमई धरा, क्षेत्रनाथ सु नाम परो खरा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रनाथाय अर्घं ॥ १३ ॥

वृष्टि गंधोदक युत सुर करी, सुदंतिक जिन नाम कह्यौ हरी।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदंतिकजिनाय अर्घं ॥१४॥

हेमपद्म चरण तल सुर रचै, वज्र जगत जिनेस्वर गुन रचे।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जगतिजिनेश्वराय अर्घं ॥१५॥

सालि क्षेत्र फलित जिन गति समै, यजो जिनहि सुरासुर पद नमैं।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं नमो रिपवेगाय अर्घं ॥ १६ ॥

गति समै जिन नभ निर्मल भयौ, नाम निर्मल इस विधि हरि कह्यौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं निर्मलजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

सुत अनेक सु अतिशय करि सदा, नाम कृत पारस सुरपति वदा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं कृतपारस्वराय अर्घं ॥ १८ ॥

अतुल बोध निदान सु जानिये, बोध लाभ सु जिन परमानिये।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं बोधलाभाय अर्घं ॥ १९ ॥

बाहुनंद महा आनंदकर, जगत जन संतोषित ज्ञानधर।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं बाहुनंदीजिनाय अर्घं ॥२०॥

दिष्ट निष्ट सुभेदक जिनवरो, दृष्टि स्वामि सु नाम महा परो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं दृष्टस्वामिने अर्घं ॥ २१ ॥

कुंकुमाभ जिनेश्वर सार है, कुंकुमादिकके भरतार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं कुंकुमाभजिनाय अर्घं ॥२२॥
नाम जिन विवेश प्रमाण है, वंक्षिताखिल तत्व प्रधान है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं विबेशाय अर्घ ॥ २३ ॥

दोहा ।

ए भावी चउवीस जिन, धातुकी अपर वखानि ।
अचल मेरु उत्तर दिशा, ऐरावत परमांनि ॥ पूर्णार्घं ॥

## अथ जयमाला ।

पद्धडी छन्द ।

जय जिन रवींदु दुतिधर मुखेंदु, जय सुकुमालिक पूजत सुरेंदु।
धातुकी अपर भावी जिनेश, पद वंदौ ऐरावत सु देश ॥
पृथ्वीपत जिनवर नाम गाय, कुलरत्न विभूषित सदा काय ॥धा०॥
जय२ श्रीधर श्रीधर महान, जय सोमचंद्र द्युति सोमवान ॥धा०॥
जय वरुण जिनेश्वर जगत सूर, जय अभिनंदन जिन सुगुन पूरि ॥धा०
जग सर्वनाथ जिन सर्व नाथ, जय दक्ष सुजिन जग नमत माथ ॥धा०
जय सृष्टि जिनेश्वर गुण गंभीर, जिन सुद्ध न्याय गुणगृह सुधीर॥धा०
जय सामचंद्र करुणानिधान, क्षेत्राधिनाथ जगमें प्रधान ॥धा०॥
सुदंतिक जिनवर जगविख्यात, जय जगत जिनेश्वर जगत तात ॥धा०
जय जपत मारि जग दयाकार, जय निर्मल जिन गुण करि उदार॥धा०
जिन पार्श्व चरन सेवत जगीश, जय बोध लाभ जिनवर महीश ॥धा०
जय बाहु नाम जग कृपासिंधु, जय दृष्टि सुकाटन कर्म फंदु ॥धा०

जय कुमकुमाभ तन कुमकुमाभ, वक्षेश नमत शिव होत लाभ ॥
धातुकी अपर भावी जिनेश, पद वंदौ एरावत महेश ॥

घत्ता–दोहा।

अपर धातुकी द्वीपके, ऐरावत जिन सार।
भावी पद वंदन करों, नमि नमि वारंवार ॥

इति भावी जिन पूजा।

इति धातुकी द्वीप अचलमेरु पूजा संपूर्ण।

---

# अथ इक्ष्वाकार पूजा।

दोहा।

इक्ष्वाकार सु नामवर, भूधर भूपर सार।
धातुकी खंड विषै युगम, युगम खंड करतार ॥
दक्षिण उत्तर जानिये, जिन चैत्यालय दोय।
तिन प्रति आह्वानन करो, पूजौ वसुविध सोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण उत्तरदिशि इक्ष्वाकार जिनालयजिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि पठनीयं।

## अथाष्टकं।

चालि–राजा भरथरीकी।

एजी नीर क्षीरोदधि ल्यायके, भरि कंचन झारी भराय हो।
चरण युगल जिनराजके, परक्षालत त्रसा नसाय हो ॥
गिर इक्ष्वाकार सुहावनों, धातुकी खंड सुमेरके दक्षिणउत्तर जानि हो।
गिर इक्ष्वाकार सुहावनो ॥ टेक ॥

युग जिनमंदिर जहं परे, जिन पूजों सब सुखदानि हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड दक्षिण उत्तर जिनयुगालयजिनेभ्यो जलं।

बावन चंदन पावना, तामें कदली नंदन गारि हो।
दाह निकंदन कारने, जिन पूजौ गुण निरधारि हो ॥गिरि०धातु०

ॐ ह्रीं चंदनं ।

तंदुल धवल सुगंध ले, बहु उज्जल नीर पखारि हो ।
चंद किरण सम सोहनै, लय पूजहु जिन जयकार हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कनक रजतमय लै कुसुम, कर संपुट करि सार हो ।
चरण निकट जिनराज भवि, भक्ति सहित अवधार हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं पुष्पं ।

पायस सरस बनायके, जाकै देखत हिय हुलसाय हो ।
घृत पूरित पकवान लै, जिन पूजत क्षुधा नसाय हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

दीप रतनमय ल्यायके, करि कंचन थार भराय हो।
आरति जिनपदपंकजकी करि, मोह तिमिर नसाय हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं दीपं ।

अगर सुगंध इलायची, लै चंदन चूरन चारु हो ।
चरण निकट महाराजके, भवि खेवहु अगनि मझार हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं धूपं ।

आम निंबू नारिंग लै, बादाम सदा फल सेव हो ।

चरण कमल जिन पूजतैं, तुम तुरत मुकतफल लेव हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं फलं।

चारि आदि वसु द्रव्य ले, हिम थाल बीच अववार हो।

चरु चरणन जिनराजके, भवि पूजै अघ क्षयकार हो ॥

गिरि इक्ष्वाकार सुहावनो० ॥

अडिल्ल छन्द।

शुभ पंचकल्याणक विभूषित, इंद्र पूजित चरण ये।

अस्फुरित पंचम बोध लोकि त्रय उद्धरन ये ॥

पंच मुकति गति करन स्वामी, पंच पद प्रापति भये।

ते होहु भवि जीवन सदा, दुखहरन जिन चरणन नये ॥

इत्यार्शीर्वाद।

इति धातुकी खंड द्वितीय मेरु पूजा।

---

# अथ पुष्करद्वीप पूजा।

छन्द अडिल्ल।

पुष्करार्द्ध वर दीप मेरु युग जहं परे।

योजन सहस चौरासीके उन्नत खरे ॥

नागदत्त वसु कुलगिरि द्वादश जानियै।

वसु युग सरिता पूर्व अपर परमानियै ॥

तह जिनचारण मुनिवर विहरत है सदा।

तिन आह्वानन करो त्रिविध करिके मुदा ॥६२॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप सर्व शोभा सहित तत्र जिनालय जिन-
मुनिराज सर्वात्रागच्छागच्छ संवौषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

( चाल—शांतिनाथजूके पाय, सुकारण पूजत हो इस चालिमे )

कंचन झारी सुरगंगाको शीतल जल भरि धारौ ।
श्री जिन चरण प्रक्षालो प्रानी, रोग त्रिषा निरवारौ ॥
सुकारण पूजत हो ॥
श्री पुष्करार्द्ध वर द्वीप सु तारण तरण यजौ ।
जह मेरु युगम गत आदि सकल जिन चरण यजौ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपगत सर्व जिनालयजिनमुनिभ्यो
॥ जलं ॥ ६३ ॥

बावन चंदन दाह निकंदन, शीतल जल सम गारौ ।
सो लेकै जिनपद युग पूजो, दाह दुरित सब टारौ ॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध० ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं चंदनं ॥

बहु गुण मंडित सालि अखंडित, निरमल नीर पखारौ ।
सो लेकै जिन चरण यजौ, भवि अक्ष मग पग धारौ ॥
सुकारण० ॥ ६५ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।
कनक कुसुम सुरतरुके नीके, पंच वरन फुनि ल्यावौ ।
अलिगन गुंजित द्रग मन रंजित लै जिन चरन चढ़ावौ ॥
सुकारण० ॥ ६६ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

गूजा फेनी पुरी सुहारी, वावर भारी नीकौ ।
वहु विध अरु पकवान बनावौ, तुरत गऊके घीकौ ॥
सुकारण पूजत हो० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

कनक थार भरी दीप रतनमय, जगमग जोति उजारी ।
आरति करूं जिन चरण कमलकी, मोह महातम टारी ॥
सुकारण पूजत हो, श्रीपुष्करार्द्ध० ॥६८॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

कृष्णागर वर धूप दशांगी, पावक संगी खेवो ।
श्री जिनजीके चरणनु आगै, कर्म जरै स्वयमेवो ॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध० ॥ ६९ ॥
ॐ ह्रीं धूपं ।

फल फासू उत्कृष्ट सरस लै, जिनपद आगै धारौ ।
तोरि सकल संसार जालकौ, शिवपुर वाट निहारो ॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध० ॥ ७० ॥
ॐ ह्रीं फलं ।

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल ल्यावौ ।
अर्घ बनाय श्री जिन पूजै, शिवपुरमें चिरु जीवै ॥
सुकारण पूजत हो, श्रीपुष्करार्द्ध वर दीप सुतारणतरण भजौ ।
जह मेरु जुगमगत आदि, सकल जिनचरण भजौ ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीप जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

---

# अथ पुष्करार्द्ध द्वीप पर्वत मेरु पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

द्वय विदेह परापर जानियै, भरत ऐरावत परमानियै ।
तुरीय मेरु चतुरदिशि जिन भजौ, थापनहुप पांडुकवन जिन यजौ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु पांडुक चतुः शिलोपरि जित-वन सहित पूरव अपरविदेह भरत ऐरावत जिनेभ्यो अर्घ्यं ।

तुरी मेरु सु पांडुक वन विषैं, जिन जिनालय चहु दिशि श्रुत लिखैं ॥
तिन चरण पूजो तन मन ल्याकै, जल फलादिक अर्घ्य बनायकै ।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध चतुर्थ मेरु पांडुक वन चतुर्दिशि चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७३ ॥

तुरीय मेरु सु वन सोमनस है, तहं जिनालय चहु शोभा लसै ।
पर अपर दक्षिण उत्तर भले, जजत जिनपद वसुविधि अघ दले ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ मंदर मेरु सोमनस वन चतुर्दिश चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

तुरीय मेरु विपन घर वर मही, नाम नंदन वन जाको सही ।
तहां जिनालय चहुं दिश राजते, यजत जिनपद सब दुख भाजते ॥

ॐ ह्रीं नंदनवन चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घ्यं ॥ ७५ ॥

भद्रसाल सु भूपर सार है, वन चतुरदिशि जिन ग्रह चार हैं ।
जल फलादि लई पूजा करौ, जिन चरणयुग निज हियमें धरौ ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनचतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घ्यं ॥७६॥

तुरिय मेरु मतंग रदन विषै, चारिचैत्यालै जिनश्रुत लिखे।
शुद्ध मन वचन त्रिय हूजियै, लै जलादिक वसुविध पूजिये॥

ॐ ह्रीं तुरीयमेरु गजदंत चारि विदिशनविषैं तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं॥ ७७॥

---

# अथ कुरुवृक्ष पूजा।

अडिल्ल।

जंबू-धातुकीवत तरवर युग राजही,
दक्षिण उत्तर गत सो भाव हु छाजही।
पुष्कर नाम जिनालय युग जह सोहए,
यजो चरण जिनराज दर्श मनमोहए॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप चतुर्थमेरु कुरुवृक्ष युग जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ७८॥

तुरीय मेरु मंदिर निषधाचल जानिये,
कूट सुनव जिन ग्रेह तहां प्रमानियै।
पूजत जिनपद सुर विद्याधर आपकै,
हम हूं तिन पूजै वसु द्रव्य चढ़ायकै॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप मंदिरमेरु सम्बन्धी निषिधाचल नवकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ७९॥

निषध नील बिच भोगभूम उत्कृष्ट है,
भोग करत जहां आरज जनमन इच्छहै।

तह चारण मुनि क्रम जुग पूजन कीजिये,
जलफलादि करि वसुविध अर्घ सु दीजियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप मंदिरमेरु सम्बन्धी निषध नील बीच उत्तम भोगभूमि तत्र चारण मुनिभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

तुरीय मेरु निपधाचल ऊपर सार है,
नाम तिगंछ द्रह बिच कमल सु ठार है ।
तह धृतिदेवी गृह जिनमंदिर राजई,
पूजै चरण सु जिन प्रतिमा अघ भाजही ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचलोपरि तिगंछ द्रह बीच कमल मध्य धृतिदेवी ग्रह जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

तासु तिगंछ द्रह सैंयुग सरिता वही,
कृष्णकांता सीता नाम सु है सही ।
तिनतटवासी देवसेव जिनकी करै,
तिन ग्रह जिन प्रतिमा बिंब पूज पद शिव वरै ॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रह गत सु सीता कृष्णकांतातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

तुरीय मेरु दक्षिण हिमवान महान हैं,
कुलगिरि जाको नामसु सब सुखथान है ।
कूट सुवसु जिस ऊपर सुंदर देखिये,
तह जिन भवन यजै जिन पुण्य विशेखिये ॥

ॐ ह्रीं तुरीयमेरु दक्षिण महाहिमवनोपरि अष्टकूट जिनालजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८३ ॥

निषध महाहिमवन विच मध्यम भोग भू,

तह चारण मुनि यजो चरन युग फुनिस्वभू।

जल फल अर्घ बनाय ल्याय द्रवि सारजू,

नाचौ गाय बजाय सु दै दै तारजू॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु दक्षिण दिशि निशिद्ध महा-हिमवत बीच भोगभूमि गतचारण मुनिभ्यो अर्घ॥ ८४॥

महाहिमवान् शिखरि महापद्म द्रह भलौ,

तासौं युग सरिता निकसी जल निरमलौ।

नाम हरित रोहित सागर विच जे मिली,

तिन तट पूजौं जिनग्रह जिन प्रतिमा भली॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् शिखिरगत महापद्मद्रहसौ निकसी-नदी दोय नामहरितरोहित तट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं॥८५॥

महाहिमवन महापद्म द्रह विच सार है,

वारिज मध्य ही ग्रह जह सुखकार है।

तहां जिन मंदिर जिन प्रतिमा पद पूजियै,

जल फल अर्घ बनाय सु हर्षित हूजियै॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान् महापद्मद्रह मध्यकमलबीच ह्रीं देवी ग्रह तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घ॥ ८६॥

हिमवत परवत कूट सु नव युत जानियै।

तह जिनमंदिर एक एक परमानियै॥

सुर ग्रह वसुकूटनु सिद्धायतन एक है।

तिनहूमें जिन पूजो धरि सु विवेक है॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरिनवकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८७ ॥

पर हिमवत पर्वत पद्म द्रह है सही ।
मध्य पद्मश्री देवी ग्रह जानौं तही ॥
तह जिन मंदिर जिन प्रतिमापद पूजते ।
जल फल अर्घ बनाय सु सुरपति हूजते ॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरवतपरि पद्मद्रहमध्य पद्म बीच श्रीदेवीग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८८ ॥

महाहिमवन हिमवत विच क्षेत्र सु जानियै,
नाम जासु हरिवर्ष सदा परमानियै ।
भोगभूमि सु जघन्य तहां चारण मुनी,
पूजौं पद विहरत जिनवर वसुविध करि गुनी ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवत बीच हरिवर्षक्षेत्र जघन्य भोगभूमि तत्र विहरमान चारणमुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८९ ॥

हिमवत पर्वत पद्म द्रहतैं जो चली ।
गंगा सिंधु रोहित त्रय सरिता भली ॥
तिन तटवासी देव सेव जिनवर करैं ।
तिन ग्रह जिन प्रति पूजत सब पातिक हरै ॥

ॐ ह्रीं हिमवतपरवतोपरि पद्मद्रहसे निकसी गंगासिंधु रोहिततट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९० ॥

दोहा ।

पुष्कर मंदिर मेरुके, दक्षिणगत जिन ग्रेह ।
तिन पद पूजौ भावसौं, उर धर परम सनेह ॥ पूर्णार्घं ॥

# अथ उत्तर दिशि पूजा।

सुन्दरी छन्द।

पुष्करारध पूरव मेरु जिस, नील पर्वत उत्तर है सु दिश।
धातुकी तैं दुगुन परौ सही, थूल उच्च सुयोजन जिन कही॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध चतुर्थमेरु नीलगिरि धातुकी नीलतैं द्विगुणथूलोच्च व्यासवलयनवकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥९२॥

निषिद्ध नील सु बिच जानौं सही, भोगभूमि उत्कृष्ट सुगुरु कही।
निषिद्ध क्षेत्र सु मुनि चारण तहां, पूजिये पद करि उत्सव महा॥

ॐ ह्रीं निषिध नील बिच उत्तम भोगभूमि तत्र–चारण मुनिभ्यो अर्घं ॥ ९३ ॥

नील पर्वत ऊपरि केसरि द्रह विषैं, कुंज बीच वसे सुरी।
नाम कीरतिदेवीके सु ग्रह, जिन जिनालय पूजौं चरण मह॥

ॐ ह्रीं नीलपर्वतोपरि केशरि द्रह कमल बीच कीरतदेवी ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९४ ॥

केशरी द्रहसेती युग सरिता निकसी, आपुसमें करिके सु हित मिली।
सागर बिच दोउ सुहृद, तसु पुलिन गत जिन यजौं सुखद॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकेशरीद्रह निर्गत नारी सीतोदा नदी पूर्वापर समुद्र गामिनीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९५ ॥

रुक्मगिरि वसु कूट सुहावनौं, मेरु मंदिर उत्तर पावनौं।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा यजौं, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौं॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि अष्टकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥९६॥

नील रुक्म सु बीच प्रमानिये, भोगभूमि सु मध्यम जानिये ।
तहां सु चारण मुनिपद पूजिये, अर्घ कर भूर शिवसुख भूजिये ॥

ॐ ह्रीं नीलरुक्म मध्यम भोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ९७ ॥

रुक्म पर्वत ऊपर मध्य द्रह, पुंडरीक कमल बिच जानि ग्रह ।
बुद्धिदेवीको तहं जिन भवन, पूजिये वसुविधि करि गुण स्तवन ॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि पुंडरिकद्रहमध्य बुद्धदेवीग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९८ ॥

पुंडरीक सुद्रह सरिता युगमनिकरि, चाली चल जिनको अगम ।
स्वर्णकूला नरकांता तथा, तहां जिनालय जिन पूजौं जथा ॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि पुंडरिक द्रह निर्गत सुवर्णकूला नरकान्ता नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९९ ॥

तुरीय मेरु उत्तर दिशमें परो, नाम शिखर कुलाचल भूधरो ।
कूट एकादश युत सोलसे, तहां सु जिन प्रति पूजत अघ नसै ॥

ॐ ह्रीं तुरीय मेरु उत्तर शिखिर कुलाचल एकादश कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १०० ॥

शिखिर पर्वत ऊपर है मही, पुंडरीक महाद्रह जिन कही ।
कमल बीच लक्ष्मीदेवी सुग्रह, अर्घ लै जिनप्रति पूजौं सु तह ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु उत्तर शिखिर कुलाचलोपरि महापद्मद्रह मध्य कमलबीच लक्ष्मीदेवीग्रह तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१॥

अडिल्ल छन्द ।

पुंडरीक महद्रहसे निकसी, त्रय नदी जाय मिली,

सागरमें न आई फिर कदी, रूप्य कूल रक्तारक्तोदा नाम है ॥
तासु कूल जिन प्रति पूजौं सुखधाम है ॥

ॐ ह्री शिखिरपर्वतोपरि महापद्म द्रहसे निकसी रूप्यकूला रक्त रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

रूक्म शिखर बिच, भोगभूमि सु जघन्य है।
दान देय नर भोगत भोग, सु धन्य हैं ॥
चारण मुनि तह विहरत, जिनपद अरचिये।
अर्घ बनाए गाय गुण, तन मन परचिये ॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखर मध्य जघन्य भोगभूमिगत चारण मुनिभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

पुष्करार्द्ध परमेरु दक्षिण दिश राजही।
भारतक्षेत्र सु नाम अधिक छवि छाजही ॥
मध्य जानु विजयारध परवत सार है।
कूट सु नव जिन करम वसु नार-है ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वमेर दक्षिण भारतगत विजयार्ध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।।४।।

विजयार्ध युग श्रेणि दशोत्तर शतपुरी।
वसै जहां विद्याधर क्रीडति सुरसुरी ॥
तह जिनमन्दिर सार, सु जिन पूजों सही।
अर्घ बनाय गाय गुण गुरु गौतम कही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूरवमेरु दक्षिणविजयार्द्ध युगश्रेणी दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥

पुष्करार्द्ध पूरब मंदिर मनमोहए ।
दक्षिण ऐरावत विजयार्द्ध सोहए ॥
कूट सु नव जिनगेह यजो जिन आकृती ।
जिस फल पावो स्वर्ग मुकति सुख शाश्वती ॥
ॐ ह्रीं तुरीयमेरु उत्तर ऐरावत विजयार्द्ध नवकूट जिनालय जिन दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥
तुरीयमेरु ऐरावत विजयारध विषें ।
नगर दशोत्तर शत जिनमंदिर मृत लिषें ॥
तह जिनराज चरनयुग पूजौं भावसौं ।
वसुविध अर्घ बनाय शुद्ध मन चावसौं ॥
ॐ ह्रीं तुरीयमेरु उत्तर ऐरावत विजयार्द्ध दशोत्तरशत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

घत्ता–दोहा ।

पुष्करार्ध पर मेरुके, दक्षिण उत्तर भाग ।
नदी शैल द्रह जिन यजो, लै वसु द्रव्य अपार ॥
ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ॥ ८ ॥

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जै केवल दिनकर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं ।
चिन्मय सुन्दर त्रिनत पुरंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृतनमें भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकलपद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिम्ब नमों पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरन नमो हिय धरो ध्यान ॥गि०
सुर नर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु शततनु सहित एव॥गि०
जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरभंग अंग शोभे सुहाय ॥गिरि०॥
जय सदा कोटि रवि थुति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत। गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत पाद ॥गिरि०
जय पुण्य क्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको न अन्त ॥गिरि०
वसु गुन रतननुके हैं भण्डार, जैवन्ते वरतो जगमझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह जिनबिम्ब नमों पद कमल तेह ॥

घत्ता–दोहा।

वसु द्रव्य कर जिनबिम्ब पूजों, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोगिकरि, फिरि मुकतिपुर घर जा वसौं ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते, सु जिन गुण गाइयै ॥

इत्याशीर्वादः।

इति पुष्करार्द्ध मंदिरमेरु उत्तर दक्षिण पूजा संपूर्णम।

# अथ पूर्व पश्चिम विदेह पूजा,
# तत्र प्रथम पूर्व विदेहं पूजा ।

सोरठा ।

पुष्करार्द्ध परमेरु मंदर, पूर्व विदेहके ।
षोडश क्षेतरकेर तिन, जिन थापन हम करै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्ध पूर्व मंदरमेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खण्ड मंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक विहरमान जिनात्रावतरचतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चाल–पूजौ चरण सु पारसनाथके ।

सुर गंगाजल निर्मल ल्याय, रत्न जडित भृङ्गार भराय ।
जोरि जुगपानि पूजौं चरण, जिनेश्वर जानि ॥
पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह, चन्द्रबाहु भुजंगम जेह ।
जोरि जुगपानि चरण जिनेश्वर जानि ॥
चन्द्रबाहु भुजंगम येह, पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह ।
चंद्रबाहु भुजंगम जेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु चंद्रबाहु भुजंगम जुग तीर्थंकर विहरमान जिनेभ्यो जलं ॥ ११ ॥

चंदन घिसि करपूर मिलाय, केशर अवर सुगंध धर ल्याय।
जोरि जुग० ॥ पुष्करा० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु युग जिनेभ्यो सुगन्धं ॥१२॥

अगर सुगंध कूट करि शालि, लै भवि निर्मल जल परछालि।
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

केतुकि चंपक अर सुगंध, कूट करि साल।
लै भवि निर्मल जल परछाल ॥
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

मोदक गूझा सरस बनाय, अमृत पिंडसम थार भराय।
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

कंचन दीप रतनमय सार, गौ घृत चौमुख वाती वारि।
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

कृश्नागर कर्पूर मिलाय, चंदन दशविधि धूप बनाय।
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

दाख छुहारे और बादाम, लौंग सुपारी फल अभिराम।
जोरि, पुष्करार्द्ध० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल फल आदि दरवि वसु धारि, अर्घ अग्र जिनचरण उतारि।
जोरि जुग पानि, पूजो चरण जिनेश्वर जानि ॥
पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह, चन्द्रबाहु भुजंगम जेह ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं अर्घं।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

पुष्करार्द्ध पूरव जानियै, तुरीय मंदर बखानियै ।
तापुपर दिशि जानि विदेहवर, है सो षोडश जिन पूजौं सु धर ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु पूरवविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खण्डमण्डित तीर्थ चक्रवर्त्यादिक विहरमान श्री जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ।

तहसु विजयारध षोडश लसै, कूट नगरी युत सुरपुर हसै ।
तह जिनालय जिन पूजा करौ, अर्घ वसु विधि कर भवदुख हरौ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु पूरवविदेह षोडश विजयारध कूट ॥ २४४–१७६० ॥ तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

तहसु वसु राजत वक्षारागिरि, लसत जिन ऊपर नव नव शिखर ।
तहं जिनालय जिनप्रतिमा यजौ, अर्घ वसुविधि थार विषें सजौ ॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारागिरि नव नव कूट द्विसप्तति जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ ॥ २२ ॥

तहं विभंगा नदी सु जानियै, षट् द्विगुण संख्या परमानियै ।
तिन पुलिनगत जिनग्रह पूजियै, शुद्ध मनवचतन त्रय हूजियै ॥

ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ २३ ॥

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं ।
भव्य कमल परकाशन भासन जग धरं ॥

चिन्मय सुन्दर विनत पुरंधर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छंद।

जै महाघाति विधि विघ्न चक्र, कृत नाश सकलपर पूज्य शक्र।
गि र सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमों पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमौं हिय धरो ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षणवसु शततनुसहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय। गि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरन शील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दानदक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत. महशर्म वीर्य जिनको न अंत ॥गि०
वसु गुण रतनजुके हैं भण्डार, जैवन्ते वरतो जगमझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥

घत्ता-दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जांनि।
तिन विच जिन प्रतिमा चरन, नमो जोरि जुगपांनि ॥

अडिल्ल छन्द।

पुष्करार्द्ध पूरव विदेह पूरव विषैं,
षोडश क्षेत्र विदेह जैन शास्तर विषैं।
तहां जिनकी जयमाल सुभाषी गायके,
सुनै भव्य दै कान सु मन हरषायकै ॥

गीता छन्द ।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजों, मन वचन तन चावसों ।
नर सुरगके सुख भोग करि, फिरि मुकतिपुर घर जावसो ॥
जाके सुफल करि तीर्थ कर हरि, प्रमुख पदवी पाइये ।
वे होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिन गुन गाइये ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति पुष्करार्द्ध पूरव मेरु विदेह पूजा ।

---

# अथ पश्चिम विदेह पूजा ।

अडिल्ल छंद ।

पुष्करार्द्ध पर मेरु अपर दिशिमें महा,
पोडश क्षेत्र विदेह जानि जिनवर तहां ।
इश्वर नेमीश्वर जिन नाम बखानिये,
तिन आह्वानन करौ पूज जिन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चालि वीर जिनदकी ।

क्षीरोदधि जल ल्यायकैजी, कंचन झारी भराय ।
श्री जिनचरण प्रक्षालियैजी, रोग त्रपा न रहाय ॥
भविकजन श्री जिनवर सुखदाय, पुष्करार्द्ध पर मेरकेजी ।
अपर विदेह सु जानि, नेमी ईश्वर युग जिनचरनजी ॥

सेवौ परम सुजानि भविक जन, श्रीजिनवर गुण खानि॥
भविकजन० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धपर मेरु पश्चिमविदेह सुर नेमीश्वरजिनेभ्यो जलं।

वामन चंदन यामनों जी, अर धनसार मिलाय।
श्री जिनपद युग पूजतें जी; दाह दुरित मिट जाय॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं।

कुंद कुसुम शशि किरण सम जी, तंदुल विमल पखारि।
जिन आगे वर पूजते जी, अक्षय मग पग धार॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

कुसुम कल्पतरुके भले जी, हेम रजतमय ल्याय।
श्री जिन चरण चढ़ाइये जी, कामबाण सु नसाय॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

मिश्री पायस घी मिले जी, कंचन थार भराय।
बहु पकवान बनायके जी, श्री जिन चरण चढ़ाय॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

तिमिर हरण जगमग तजे जी, जिनकी जोति अमंद।
दीप रतनमय ल्यायके जी, पूजौ चरण जिनन्द॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

अगर कपूर सुगन्ध दशों विधि, धूप दहन विच खेय।
पाप धूम सब उड चलै जी, श्री जिन पूजा करेय॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

श्रीफल भारी लायची, बादाम छुहारे खेउ ।
पिस्ता किममिस दाख ले जी, श्री जिन पूज करेय ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।
जल फल अर्घ बनायकै जी, नाचो गाय बजाय ।
मन वच काय लगायके जी, पूजो श्री जिनराय ॥भविक०॥
पुष्करार्द्ध पर मेरुके जी, ऊपर विदेह सु जानि ।
नेमीश्वर युग जिन चरण जी, सेवो परम सुजानि ॥
भविकजन श्री जिनवर गुण खानी ॥ ॐ ह्रीं अर्घ ।
सीतोदा दक्षिण उत्तर तट जानिये,
पद्मादिक षोडश विदेह परमानिये ।
तीर्थंकर चक्रादिक करि भोगत सदा,
जिन पद पूजो जिन लै जिन पूजौं मुदा ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरब मेरु पश्चिमविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्संप मंडित वर्त्तमान तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग विहरमान जिनेभ्यो अर्घं ।

वसु वक्षार महीधर श्रीधर राजही ।
जिनके ऊपर हैं नवकूट विराजही ॥
द्वादश सप्तति जिनमंदिर जिन प्रति पूजिय ।
जल फल अर्घ बनाय सु हरषत हूजिये ॥३७॥
ॐ ह्रीं वसुवक्षारगिरि सप्तनिकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।
द्वादश तहा विभंगा नदी सु जिन कही ।
तासु पुलिन गत चैत्यालय है सही ॥

तह वासी सुर विचते फुनि जानियै ।
जल फल अर्घ बनाय सुपूजन ठानियै ॥३८॥
ॐ ह्रीं द्वादश विभंगानदी जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

षोडश विजयारधगिरि तिनहू पर परै ।
कूट सु नव युत नगर दशोत्तर शत खरे ।
तिन विच जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजतै ।
जल फल अर्घ बनाय सु भव दुख छूटते ॥३८॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध चतुर्थमेरु पश्चिमविदेह षोडश विजयार्द्ध एकसैचवालीस कूट ॥१४४॥ एकहजारसातसैसाठ ॥१७६०॥ जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जै केवल दिनकर वर मोहि तिमिर हरं ।
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं ॥
चिन्मय सुंदर विनत पुरंदर पद सदा ।
जै जै जै कृत सुकृत नमै भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द ।

जै महाघाति विधि विघनचक्र, कृत नाश सकल पद पूज्यशक्र ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौं पद कमल तेह ॥
जय चिदानदमय सुधापान, कियचरण नमो हिय धरो ध्यान ॥गि०
सुरनर-मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव ॥गि०

जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥गिरि०॥
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातहार्य शोभा लसंत ॥गि०॥
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृप गण भविजन मन करत याद ॥गि०॥
जय पुण्य क्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान शील नाशाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुन ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको न अंत ॥गि०
वसु गुण रतननुके है भंडार, जयवंते वरतो जग मझार ।
गिरि सिद्धिकूट द्रह चैत्य गेह, जिन बिंब नमो पद कमल तेह ।

घत्ता–दोहा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, अपर विदेह मझार ।
जिनवर जिन प्रतिमा चरण, वंदो सब सुखकार ॥

गीता छन्द ।

वसु द्रव्य कर जिन बिंब पूजो, मन वचन तन चावसों ।
नर सुरगके सुख भोगकर, फिर मुकति पुर घर जा वसों ॥
जाके सुफल करि तीर्थकर, हरि प्रमुख पदवी पाइये ।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्यार्घ वाद ।

इति पश्चिम विदह पूजा ।

# अथ पुष्करार्द्ध चतुर्थ मेरु भरतक्षेत्र जिन पूजा।

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, दक्षिण भारथ तीत।
गत नागत जिनको करौ, आह्वानन सुनि मीत॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध तुरीय मेरु भारतक्षेत्र तीत जिनालय अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टकं।

ढाल कातिकाकी।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारथ दक्षिण जानि।
प्राणी तीत सु गत नागत, यजो होय पापकी हानि॥
प्रासुक जल ले सीयरो, सुर गंगाको सार।
प्राणी तीत सु गत नागत यजो, होय पापकी हानि॥
श्री जिन चरण प्रक्षालिये, रोग त्रिषा निरवार।
प्राणी० पुष्करार्द्ध०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध तुरीयमेरु भारततीत जिनेभ्यो जल।

दाहकनंदन चन्दना, अर घनसार मिलाय।
प्राणी जिन पद अरचन कीजियै, भव आताप मिटाय॥
प्राणी० ती०, पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं चंदनं॥

तार हार, शशिकिरण सम, तंदुल विमल पखारि ।
प्राणी जिनपद अग्र सु पुंज दैउ, तन मन करि निउक्षारि ॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥

जाती सेउती मालती, कुसुम मनोहर ल्याय ।
प्रानी भरकर अंजुल लीजियै, श्री जिन चरन चढ़ाय ॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥

व्यंजन नाना भांतिके, वहु पकवान बनाय ।
प्राणी श्री जिन चरण चढ़ावते, रोग क्षुधा मिटि जाय ॥
प्राणी० तीत० पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥

रत्न जटित दीपक भले, गो घृत वातीनालि ।
आरत करि जिन चरणकी, मोह तिमिर सब टालि ॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥

कृष्णागर करपूर लै, एला लौंग मिलाय ।
प्राणी पूजि चरन युग जिन तनै, मोक्ष सु फल दातारि ।
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

जीवन चन्दन आदि दै, वसु विध अर्घ संजोय ।
प्राणी जिनपद युग पूजा करौ, नाश कर्म वसु होय ॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध ॥

पुष्करार्द्धपर मेरुके, भारत दक्षिण जानि ।
प्राणी तीत जिनेश्वर पूजियै, जन्म जरा मृत हांनि ॥५०॥
ॐ ह्रीं अर्घ ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

मदन इन्द्र सु जिनको नाम है, कोटिमदन सु सम दुति धाम है।
पुष्करार्द्ध भारत भूत जिन, तुरीयमेरु यजों पद कमल तिन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरवमेरु भारतक्षेत्रगत मदनेंद्रजिनाय अर्घ ॥१॥

सु भूरति जिन नाम महेश्वरं, कोटि सूरज समतन द्युति धरं ।
पुष्करार्द्ध भारत भूत जिन तुरिय, मेरु यजों पद कमल तिन ॥

ॐ ह्रीं सुभूरति जिनाय अर्घ ॥ २ ॥

जिन निराग सु राग द्वेष शत, नाम सारथ धारक है गुकत ।
पुष्करार्धे ॥ ॐ ह्रीं निरागजिनाय अर्घ ॥ ३ ॥

प्रलंबित जिन नाम बखानियो, प्रलंबित तिहु जग जश जानियो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रलम्बजिनाय अर्घ ॥ ४ ॥

नाम पृथ्वीपत जिनको कह्यो, त्रिजगपति करि जिन पूजन लह्यो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीपतये नमः अर्घ ॥ ५ ॥

चारु चारित पालित जिन कह्यो, नाम चारितनिधि जिनको परयो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं चारित्रनिधये अर्घ ॥ ६ ॥

नाम अपराजित जिनराज हैं, पुर अजीत सुधारण काज है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अपराजिताय अर्घ ॥ ७ ॥

बोध निज करि बोधित भव्य जित, सुबोधक जिन नाम कह्यो सुतिन ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुबोधजिनाय अर्घ ॥ ८ ॥

नाम वैतालिक जग सार हैं, ताल दम उन्नतवर धार है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं वैतालिकजिनाय अर्घ ॥ ९ ॥

बुद्धिसागर जिन बुद्धेश प्रभ, वीतराग निराकुल करन भग ।
पुष्करार्द्ध भारत भूत जिन, तुमि मेरु यजों पदकमल तिन ॥
ॐ ह्रीं बुद्धिसागराय अर्घं ॥ १० ॥

त्रिमुष्टिक जिन नाम कर्यो सुगुरु, जिन चरण पूजन नर सुर अग्र ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं त्रिमुष्टिजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

नाम मुनि बोधक जिन जग प्रगट, बोधकरन गुणनि मुनि आदि पट ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मुनिबोधकजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

महातीरथ स्वामि सु नाम है, तीर्थस्वामि महा गुण धाम है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं तीर्थस्वामिने अर्घं ॥ १३ ॥

धर्म अधिपत धर्म अधीश जिन, धर्म धारक नर पूजत सु तिन ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं धर्माधीशजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

धरावनको गोधननिधन, नाम जिन धरनेश कर्यो सुगन ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं धरनेशजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

प्रभव जिनको नाम सु भाख्यो, प्रभावीश जगजनि भाख्यो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रभवजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

## अथ जयमाला ।

छन्द पद्धडी ।

श्री मदन मदन जित कुमर कालं, सुरभूति जिनेश्वर गुण विशाल।
श्री पुष्करार्द्ध भारत अतीत, पर मेर नमौं कर धरि प्रतीत ॥
नीराग सु जिन नीराग धार, प्रलंवित लंवित बाहु सार ॥श्रीपु०॥
पृथ्वीपति नाम कह्यो सुरेश, चारित्र सु निधि नामा जिनेश ॥श्रीपु०॥
अपराजित नाम जिनेश जानि, सुबोध जिनेश्वर गुण निधान ।श्रीपु०
वैताल मोह वैतल हरन, बुद्धेश जिनेश्वर भव्य सरण ॥श्री पुष्क०
त्रिसुष्टिक जिनको नामगाय, मुनिबोधक जिन जुग नमो पाय।।श्री०
जय तीर्थस्वामि पद तीर्थकार, जय धर्माधीश सु धर्म धार ॥श्रीपु०
धरणेश जिनेश्वर त्रिजग ईश, जय प्रभव नाम भाष्यो गतीश ॥श्रीपु०
जय जय अनादि देवाधिदेव, जय सर्व तीर्थ सुर करत सेव ॥श्रीपु०
जय निरुपम निरुपम रूपवान, कामारिकाय किय काम हान श्रीपु०
जय जय सुविकासनतीर्थ नाथ, नमै कमलनयन जुग जोरि हाथ।७६

दोहा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरुको, भारत तीत सुजानि ।
जिन चौवीस नमौ सदा, तीर्थकर गुण खानि ॥ ७७ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धमेरु भारत तीत चौवीस जिनालयेभ्यो अर्घं ।

# अथ वर्तमान पूजा।

सोरठा।

जल फल वसु द्रवि आनि, जगन्नाथ जिनवर भले।
पुष्करार्द्ध पर जानि, भारत गत जिनवर यजो॥
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घ॥ १॥

जल फल वसु द्रवि आनि, नाथ प्रभास जिनेशजी।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं प्रभासनाथाय अर्घ॥ २॥
जल फल वसुद्रवि आनि, सूर्यस्वामि जिनवर यजो।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं सूर्यस्वामिने अर्घ॥ ३॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्री भरतेश महेशजी।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घ॥ ४॥
जल फल वसु द्रवि आनि, दीर्घानन जिनराज हैं।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं दीर्घाननाय अर्घ॥ ५॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्रीविख्यात सुजस प्रभू।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं विख्यातजिनाय अर्घ॥६॥
जल फल वसु द्रवि आनि, अवसानन जिनराज हैं।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं अवसाननसाय अर्घ॥ ७॥
जल फल वसु द्रवि आनि, जिनप्रबोध जिन नाम है।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं जिनप्रबोधाय अर्घ॥८॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाथ तपोधन हैं भले।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घ॥ ९॥

जल फल वसु द्रवि आनि, पावकनाथ जिनेश हैं ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं पावकनाथाय अर्घं ॥१०॥
जल फल वसु द्रवि आनि, त्रिपुरेश्वर जिननाथ हैं ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घं ॥ ११ ॥
जल फल वसु द्रवि आनि, सौगत जिनवर नाम है ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं सौगतजिनाय अर्घं ॥१२॥
जल फल वसु द्रवि आनि, वासव नाम जिनेश है ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं वासवनाथाय अर्घं ॥१३॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाम मनोहर जिन कह्यौ ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं मनोहराय अर्घं ॥१४॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्री शुभ कर्म सु जिन भले ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं शुभ कर्म जिनाय अर्घं ॥१५॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्री अमलेन्द्र जिनेश्वरो ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं अमलेंद्रजिनाय अर्घं ॥१६॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाम इष्ट सेवत प्रभू ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं इष्टसेविताय अर्घं ॥१७॥
जल फल वसु द्रवि आनि, धर्मवास जिनराज है ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं धर्मवासाय अर्घं ॥१८॥
जल फल वसु द्रवि आनि, प्रासादक जिनराज है ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं प्रासादजिनाय अर्घं ॥१९॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्री मृगांक जिनराज हैं ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं मृगांकाय अर्घं ॥२०॥

जल फल वसु द्रवि आनि, श्री अकलंक जिनेशजी।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घ ॥२१॥
जल फल वसु द्रवि आनि, स्फाटिक प्रभ जिन जानियै।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं स्फाटिकप्रभाय अर्घ ॥२२॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाम गजेंद्र सु गाइयौ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं गजेंद्राय अर्घ ॥२३॥
जल फल वसु द्रवि आनि, ध्यान जिनेश्वर नाम है।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घ ॥२४॥

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारतगत चौवीस।
वर्तमान जिन पूजिये, पूर्णार्घ करि ईश ॥

## अथ वर्तमान पूजा, जयमाल।

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारतगत जिनराय।
जिनकी अब जयमाल वर, वरनौ सब सुखदाय ॥

पद्धरी छन्द।

जय जगनाथ जिनेश्वर स्वामी, श्री प्रभासनामा शिवगामी।
सूर्यस्वामी रविकोट प्रभाधर, श्री भरतेश्वर नाम सुखाकर ॥
दीर्घानन जिन तिहु जगनायक, श्री विख्यातकीर्ति शिवदायक।
अवसानन जिन जग उद्धारण, श्री प्रबोध जिन भविदधि तारण ॥
तपोनाथ विख्यात जगत जसु, पावकाख्य जिन दहन कर्म वसु।
त्रिपुरेश्वर स्वामी जगनामी, सोगतनाथ सदा सुखधामी ॥

वासव शत वासव पूजित पद, मनोहरण पूरण सुमनोगत ।
शुभ कर्मेश देह शुभ दाता, श्री अमलेन्द्र सकल गुण ज्ञाता ॥
नाम इष्ट सेवित जगनामी, धर्मवास मन आपुन ज्ञामी ।
श्रीप्रसाद शिवत्रिय सम किय सुख, श्रीमृगांक शशिकांत धरण मुख॥
जिन कलंक छत्रयय धारण, स्फाटिक सम जशको विस्तारण ।
श्रीगजेन्द्र गजकरसम बाहु, ध्यान जिनेश्वर त्रिय जग नाहु ॥४॥

घत्ता-दोहा ।

वर्तमान चौवीस जिन, पुष्करार्द्ध पर मेरु ।
भारत क्षेत्रनमें चरण कमल नैन तिन केर ॥ ५ ॥

---

# अथ भावी पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

क्षमा भारत रण गुणधीर है, श्री वसंतध्वज महावीर है ।
पुष्करार्द्ध भरत भावि जिन, तुरीय मेरु यजो युग चरण तिन ॥
ॐ ह्रीं वसंतध्वजाय अर्घं ॥ १ ॥
जपत जिनवर नाम बखानियै, मार्दवादिक गुण परजानियै ।
पुष्करार्द्ध भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजो युग चरण तिन ॥
ॐ ह्रीं वसन्तध्वजाय अर्घं ॥ १ ॥
जयति जिनवर नाम बखानियै, मार्दवादिक गुण परजानियै ।
पुष्करार्द्ध भारत भावि जिन, तुरीयमेरु यजो युग चरण तिन ॥
ॐ ह्रीं जपतजिनवराय अर्घं ॥ २ ॥

तीर्थंकर त्रिस्थंभ सु सार है, विघन सकल विनाशन हार है।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं त्रिस्थंभनजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

परब्रह्म जिनेश्वर जानियै, परमपद प्राप्ति परमानियै।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं परंब्रह्मजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

अवालिस प्रभ जिनको नाम है, रोग सोग हरण शुभ धाम है।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अवालिसजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

श्री अवादिक नाम जिनेश हैं, वादिगज मद दलन मृगेश हैं।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अवादिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

भूमि आनंदन जिन नाम वर, त्यागि तन शिवसुख आनंद धर।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं भूमिआनंदनाय अर्घं ॥ ७ ॥

श्री त्रिनयन जिनेश्वर त्रिजगपति, त्रितीयदृगवर ज्ञानधरण सुमति।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं त्रितीयनयनाय अर्घं ॥ ८ ॥

श्री विद्वांस जिनेश्वर जानियै, विदुष जन्मन प्रिय परमानियै।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं विद्वांसाय अर्घं ॥ ९ ॥

तीर्थंकर परमात्म प्रसंगवर, ब्रह्मचर्य महाव्रत धरन पर।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मप्रसंगाय अर्घं ॥ १० ॥

इन्द्र सुर नागेन्द्र सु पूज्य पद, भूमि हरण संसार शरीर गद।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं भूमेन्द्राय अर्घं ॥ ११ ॥

चक्रबल गोपाल सु सेविक्रम, नाम गोस्वामी जिनको सुगम।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं गोस्वामिने अर्घं ॥ १२ ॥

पंचकल्याणक पूजित चरण, करि कल्याण प्रवासित नाम जिन।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं कल्याणप्रवासिताय अर्घं ॥१३॥

सु मंडल जिननाम कह्यौ प्रगट,भविनु धारण भव्यसागर निकट ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुमण्डलाय अर्घ ॥ १४ ॥

नाम वासव जिनवर सुखकरण, गर्भवास सु वसुधारा धरण ।
पुष्करार्द्ध सु भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजों युग चरण तिन ॥
ॐ ह्रीं महावासवजिनाय अर्घ ॥ १५ ॥

उदयदत्त जिनेश्वर नामवर, उदय कारण तीनों लोक धर ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं उदयदत्तजिनाय अर्घ ॥ १६ ॥

दिव्य जोतिष नाम सु जिन कह्यौ, योतिषेंद्रन करि पूजन लह्यौ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं जोतिषेन्द्राय अर्घ ॥ १७ ॥

घोति घाति प्रबोध सु पाइयौ, प्रबोधित जिन नाम सु गाइयौ ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं प्रबोधिताय अर्घ ॥ १८ ॥

नाम प्रशमित जिनको जानियै, प्रशमभाव धरण परमाणियै ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं प्रशमजिनाय अर्घ ॥ १९ ॥

नाम अभयंकर जिनको परौ, अभयकारण जगकारण परमेश्वरौ ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं अभयंकराय अर्घ ॥ २० ॥

प्रमत्त जिनको नाम सुश्रुत लिखौ, मुकतिरमण कटाक्ष सु जिन दिखौ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं प्रमत्तजिनाय अर्घ ॥ २१ ॥

स्फार सार समाचरण करौ, नाम दास्फास्कि यातै परौ ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं दास्फा'रकाय अर्घ ॥ २२ ॥

व्रत सु स्वामि जिनेश्वर नाम है, व्रतनिधीश महागुण धाम हैं ।
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं व्रतस्वामिजिनाय अर्घ ॥२३॥

नाम जिन निधिनाथ सु गाइयौ, धर्मनिधि स्वामी सु बताइयौ।
पुष्कराद्धं भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजौ भवि वरण तिन ॥
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं ॥ २४ ॥

## अथ जयमाला।

दोहा-मदन दलन गुण धाम धर, पूरण परमानंद।
पुष्कराद्धं पर मेरुके, भारत भावि जिनन्द ॥

पद्धडो छन्द।

जय जय वसँतध्वज नाम सार, जय जय जयंत जयवंत चारु।
जय त्रिस्थंभक त्रय रतन स्वामि, परब्रह्म पगपति परम धाम ॥
जय आबालिश जिन नाम गाय, जय परवादक परवाद हाय।
जय भूम्यानंद आनंदकार, जय त्रिनयन जग त्रिय किय उदार॥
जय जय विद्वांश महा सुमान, जय परमात्म पद धरण ध्यान।
भूमीन्द्र नाम त्रय जगत ईश, गोस्वामि महाव्रत धर महीश ॥
कल्याण प्रवासित नाम जासु, हौं नमौ चरण कर जोर तासु।
जय जय जगमंडल प्रगट नाम, जय महावास वसु गुणन धाम ॥
जय दिव्य सु जोतिष जिन वरिष्ट, जय नाम प्रवोधित जगत इष्ट।
जय अभयंकर भय हरण जानि, जय अप्रमत्त सव गुणनुखानि ॥
जय जय दास्फारिक नाम गाय, जय व्रतः स्वामि जिन नमौ पाय।
जय२ निधिनाथ सुसाधि सिद्धि, जयजय हिनिकर्म जिन प्रगट सिद्धि

घत्ता-सोरठा।

यह जयमाल विशाल पुष्कराद्धं पर मेरुकी।
भारत भावी काल, जिन चौवीस नमौ जिनै ॥

# ऐरावत भावि भूत वर्तमान जिन पूजा।

अडिल्ल छद ।

पुष्करार्द्ध पर मेर सु ऐरावत विषैं,
तीतानागत वर्तमान जिन ये अखै ।
सुरनर मुनिगणि जपै नाम नित जासुकौं,
हम आह्वानन करैं त्रिविध कर तासकौं ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पर मेरु ऐरावतक्षेत्र भावि भूत वर्तमान जिनागच्छागच्छ संवौषट् । ॐ ह्री अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चाल–विमलनाथकी पूजाकी गसठ ठानैके पाटमे ।

लै रतन जटित हिम झारी,
भरि, क्षीरोदधि वर वारी ।
भवि न्हाय धोय शुद्ध हुई करि,
जिन चरण कमल हियैर धरि ॥
पर पुष्करार्द्ध ऐरावत,
जिन भावी भूत अनागत ।
जिन चरण यजो भवि प्राणी,
यातै हूजे केवल–ज्ञानी ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध ऐरावत भावीभूतवर्तमान जिनेभ्यो जलं ।

मलयागिर चंदन गारो, जलसेती सरस सम्हारो ।

हिम केशर मिश्रित करिकै, सो रतन कटोरी धरिकै ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ।
मुक्ताफल सरस लगावो, तासौं जिन पूज रचावो ।
द्युति चंद किरण सम धारी, तंदुल फुनि लै भरि थारी ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।
प्रभु काम विनाशन हारे, जस तीन लोक विस्तारे ।
तिन चरणनु आगे खासी, धरियै बहु फूल सुवासी ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।
जिन दोष अठारह हारे, भय रोग क्षुधादिक सारे ।
तिन पद आगै चरु सोहै, यातै अचिरजु अर को है ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।
दीपककी जोत उजारी, जगमग अति तम क्षयकारी ।
हिम थार धारि करूं आरति, जोतिहु जग आरत पाति ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।
कृष्णागर और कपूरं, लै लौंग सु चंदन चूरं ।
जा खेवत पावक मांही, जातै कर्म सबै जरि जाही ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।
है फलकी जाति अपारा, कहा कहियै बहु विस्तारा ।
यातै फल फासू नीके, ढिग धरि चरणन जिनजीके ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।
जल चंदन अक्षत पुष्पसु, चरु दीप धूप फल लै वसु ।
द्रंगि देह थार महि धारो करि आरति सुगुण उचारो ॥
पर पुष्करार्द्ध० ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ।

# अथ प्रत्येक पूजा ।

सोरठा ।

ऐरावत परमानि, कतिन सु जिनको नाम है ।
भूत जिनेश्वर जान, चरण यजौ वसु द्रव्य लै ॥

ॐ ह्रीं कतिनजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

ऐरावत परमानि, श्री विशिष्ट जिनवर भले ।
भूत जिनेश्वर जांनि, चरण यजौ वसु द्रव्यसौं ॥

ॐ ह्रीं विशिष्टजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

ऐरावत परमानि, देवादित्य जिनेश हैं ।
भूत जिनेश्वर जांनि, चरण यजौ वसु द्रव्यसौं ॥

ॐ ह्रीं देवादित्याय अर्घं ॥ ३ ॥

ऐरावत परमानि, फुनि उदिष्ट जिनवर कहे ।
भूत जिनेश्वर जांनि, चरण यजै वसु द्रव्य लै ॥

ॐ ह्रीं दिष्ट जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

ऐरावत परमानि, अस्थानिक जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय ॥ अर्घं ॥ ५ ॥

ऐरावत परमानि, प्रभाचन्द्र जिनदेव है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं प्रभाचन्द्राय ॥ अर्घं ॥ ६ ॥

ऐरावत परमानि तीर्थ वेनु जिनवर भलै ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वेनुजिनेश्वराय ॥ अर्घं ॥ ७ ॥

ऐरावत परमानि, श्री त्रिभानु जिनदेवजी ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं त्रिभानुजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

ऐरावत परमानि, श्री वज्रांग जिनेश हैं ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वज्रांगाय अर्घ ॥ ९ ॥

ऐरावत परमानि, अविरोधन जिन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अविरोधनजिनाय अर्घ ॥ १० ॥

ऐरावत परमानि, श्री अपाय जिनवर भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अपायजिनाय अर्घ ॥ ११ ॥

ऐरावत परमानि, लोकोत्तर जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तरजिनाय अर्घ ॥ १२ ॥

ऐरावत परमानि, जलधि शिखर जिनवर भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं जलधिशिखराय अर्घ ॥ १३ ॥

ऐरावत परमानि, श्रीविद्यानतन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं विद्यानतनजिनाय अर्घ ॥ १४ ॥

ऐरावत परमानि, श्री सुमेरु जिनराज हैं ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं सुमेरुजिनाय अर्घ ॥ १५ ॥

ऐरावत परमानि, भावित जिन पहचानिये ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं भवितार अर्घ ॥ १६ ॥

ऐरावत परमानि, वत्सल श्री जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वत्सलजिनाय अर्घ ॥ १७ ॥

ऐरावत परमानि, नाम जिनालय जिन भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं जिनालयाय अर्घ ॥ १८ ॥

ऐरावत परमानि, तोखारिक जिन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं तोखारिकाय अर्घ ॥ १९ ॥

ऐरावत परमानि, भवनस्वामिजिनवर महा ॥ भूत० ॥
ॐ ह्रीं भवनस्वामिजिनाय ॥ २० ॥
ऐरावत परमानि, नामसुकामुक जिन भले ॥ भूत० ॥
ॐ ह्रीं सुकामुकजिनाय अर्घ ॥ २१ ॥
ऐरावत परमानि, देव देवाधिप नाम है ॥ भूत० ॥
ॐ ह्रीं देवाधिपदेवाय अर्घं ॥ २२ ॥
ऐरावत परमानि, नाम अकायक जानियै ॥ भूत० ॥
ॐ ह्रीं अकायकाय अर्घ ॥ २३ ॥
ऐरावत परमानि, विवित जिनवर अन्तमें ।
भूत जिनेश्वर जानि, चरन यजौ वसु द्रव्य लै ॥
ॐ ह्रीं विवितजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा ।

भूत जिनेश्वर है सही, ऐरावत पर मेरु ।
पुष्करार्द्ध पर दीपमें, पूजों पद तिन केर ॥ पूर्णार्घं ॥

## अथ जयमाला ।

दोहा ।

सुर सुरेन्द्र पूजत चरण, मोह तिमिर किय नाश ॥
भव्य कमल प्रतिबोध कर, गुण गावै हम तास ॥

पद्धडी छंद ।

श्री वेनु जिनेश्वर नाम जासु, पद नमत सुरासुर निकर तासु ।
ऐरावत जिनवर वर्तमान, पर पुष्करार्द्ध वंदों सुजान ॥

जयजय कृतनाथ सुकृति कृतार्थ, जयजय वशिष्ट जिनकरण स्वार्थ।
ऐरावत जिनवर वर्तमान, पर पुष्करार्द्ध वंदो सु जान ॥
जय देवादित्य तमोपहरण, जय स्थानिक शिवथान करण ।।ऐ०॥
जय प्रभाचंद्र द्युति चंद्र धार, जयजय त्रिभानु जग उदयकार॥ऐ०॥
जय जय वज्रांग सुनाम गाय, अवरोधन वैर हरण सु भाय ॥ऐ०॥
जय जयसु अपापनि पापजानि, जय लोकोतर महिमाविधान ।।ऐ०॥
जय जलधि शिखिरि कलिमलि विमुक्त, जय द्योतन २ त्रिजग युक्त।
जय२ सुमेरु जग क्षोभकार, जय भवित जिनेश्वर दयाधार ॥ऐ०॥
जय वत्सल भवि वत्सल सुजानि, जय नाम जिनालय सुगुणवान ॥
जयजय तुषार जिननाम सार, जय त्रिभुवन जन सुखकरण हार।ऐ०
जय मनस्वामि भवनेश जानि, जयजय सुकामिकृत काम हानि॥ऐ०
देवाधिदेव जिन नमो पाय, जय जिन आकारिक नाम गाय ॥ऐ०
जय जय विवित जग विव पूज्य, ब्रह्मादि नाम जिन है अदूज्य ॥

घत्ता—सोरठा।

जह जयमाल रसाल, भावी तीत जिनेशकी।
ऐरावत दर हाल, पुष्करार्द्ध पर मेरुकी ॥

---

# अथ वर्त्तमान पूजा ।

चौपाई ।

शंकर जिन जग शंकर स्वामी, लै जलादि वसु द्रवि अभिरामी ।
पुष्कर पर ऐरावत जानौ, वर्त्तमान जिन पूजन ठानो ॥
ॐ ह्रीं शंकराय अर्घं ॥ १ ॥

अक्ष वास वसु कीन अक्षपन, लै जलादि वसु द्रव मन वच तन ।
पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं अक्षवसाय अर्घं ॥ २ ॥

नगर स्वामि जिन सर्व व्याधि हर, लै जलादि वसु द्रव्य थार भरि ।
पुष्करार्द्ध० ॐ ह्रीं नग्रस्वामिजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

नग्राधिप जिन नगन लसै, तन दर्शन ज्ञान चरण पूरण जिन ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नग्राधिपजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

पाखण्ड नष्ट जिन धारा, अष्ट कर्म जिन दये निकारा ॥
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नष्टपाखण्ड काय अर्घं ॥ ५ ॥

सु प्रबोध जिन तिन जग नायक, षोडश स्वप्न मात दरसायक ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुप्रबोधजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

नाम तपोधन जिन गुण पूरे, द्वादश विधि तप करण सु सूरे ।
पुष्करपर ऐरावत जानौं, वर्तमान जिन पूजन ठानौं ॥
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं तपोनिधजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

पुष्पकेतु जिन नाम सुखकर, मार्यो जिन जग सूर कुसुम सुर ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पकेतवे अर्घं ॥ ८ ॥

धर्मिक नाम धरम दश भाष्यौं, ध्यान लीन आतम रस चाख्यो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं ॥ ९ ॥

चन्द्रकेतु शशि मुख जिनराजै, नाम जपत जिन पातक भाजै।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रकेतु जिनाय अर्घं ॥१०॥
महाजोति धारी धीरज धर, मनु रक्तादि जोति नामापर।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मनु रक्त जोतिषे अर्घं ॥११॥
वीतराग जिन नाम महा है, वीतराग पद पर्म लहा है।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं ॥ १२ ॥
उद्योतन जिन उदय करण जग, वसुविधि रिपुहरि धर शिव मर्ग पग।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं उद्योतनजिनाय अर्घं ॥१३॥
भवितास सवन समन समीरं, तमोपेक्ष जिन नाम सु धीरं।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घं ॥ १४ ॥
श्री मधुनाथ जिनेश्वर जगपति, जिनपद नमत सुरासुर सुरपति।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मधुनाथाय अर्घं ॥ १५ ॥
देव देव मरुदेव नाम भल, जिन पद यजत चक्र नरहरि वल।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घं ॥ १६ ॥
दमम नाम शिव धाम काम हर, केवलज्ञान भानु सु उदित कर।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं दममाय अर्घं ॥ १७ ॥
वृषभस्वामि वृषदायक भविजन, चरण भजै जिन सुरनर मुनिगण।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं वृषभस्वामिने अर्घं ॥ १८ ॥
नाम शिलातन जिन मुनि गायौ, शैलशिलासम तन जिन पायौ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं शिलातनजिनाय अर्घं ॥१९॥
विश्वनाथ सुरूभा मंडित है, द्वादश विध तप करि शिवपुर लिय।
पुष्कर पर ऐरावत जानो, वर्तमान जिन पूजन ठानौ ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं माहेन्द्रनाथाय अर्घं ॥ २१ ॥

नंद नाम आनंद करण जग, मंडित गुण वरनै कवि कहंलग।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं ॥ २२ ॥

तन भामण्डल सहित लसत जिन, ब्रह्मव्रत वरनाम कह्यो तिन।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मव्रताय अर्घं ॥ २३ ॥

नाम तमांतक सार्थक जानो, मोह महातम हरण प्रमाणो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं तमांतकाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा-सोरठा।

वर्तमान जिन जानि, ऐरावत पर मेरुके।
पुष्करार्द्ध परमानि, यजों चरण वसुविध भले ॥ ८२ ॥

पूर्णार्घं।

## अथ जयमाला।

दोहा।

केवल रवि परकाश कर, मोह तिमिर हर जानि।
ऐरावत पर मेरुके, वंदों शिर धरि पांनि ॥ ८३ ॥

छन्द पद्धडी।

जय शंकर शंकर जगमझार, जय अक्षयास प्रभु दया धार।
जय नगन नगन तन धरण धीर, जय नगनाधिप पर हरण पीर ॥

पाखण्ड नष्ट जिन नामसार, जय सु प्रबोधपन बोध धार।
जय नाम तपोधन है जिनेश, जय पुष्पकेतु दायक सु देश ॥

जय धार्मिक धरम धारण महान, जय चन्द्रकेतु महिमा निधान।
प्रभु रक्त सु ज्योतिष नामपाय, जय वीतराग जिन सिद्ध दाय ॥

उद्योतन उद्योतित त्रिलोक, नित देहु तपोधन चरन थोक ।
मधुनाथ सु जग जिन किय सनाथ, मरुदेव नमौं युग जोरि हाथ ॥
जय दम मद मन मन पंचकरण, जय वृषभ स्वामि सब शोक हरण ।
जय जयहि शिलातन नाम सार, जय विश्वनाथ गुण करि उदार ॥
जय जय महेन्द्र जिन नमौं पाय, जय नंदानंद करे सुभाय ।
जय ब्रह्मव्रत धृत ब्रह्मचर्य, पद नमैं नयन तिहु लोक वर्य ॥८४॥

घत्ता-दोहा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, ऐरावत गत जानि ।
नमो चरण युग जोरिकर, जय जय जय भगवान् ॥८५॥

इति वर्तमान पूजा ।

---

# अथ अनागत जिन पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

जशोधर जशराजि सु जानियै, इन्द्र शत सेवित परमानियै ।
सुपर पुष्कर ऐरावत विषै, भावि जिन पूजौं जिन श्रुत लिखैं ॥
ॐ ह्रीं जशोधराय अर्घं ॥ १ ॥

अभयघोष सु नाम प्रमाण है, अभय करण सु पग परधान है ।
सुपर० ॐ ह्रीं अभयघोषाय अर्घं ॥ २ ॥

सुकृत पूरण सुकृत जिन भले, सुकृत कृत्य सु हुई शिवको चलै ।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घं ॥ ३ ॥

नाम निर्वाणक जिन जानियै, पारगत शिव मारग मानियै ।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

जिन कृतवास सुवास है, व्रताकर गुण पूरण आश है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घ्यं ॥ ५ ॥
नाम जिन अति राज बखानिये, कारज सारण सब जग जानिये।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घ्यं ॥ ६ ॥
अजित नाम जिनेश्वर जगपती, अजित वसुविधि रै पुहु शुभमती।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अजितजिनाय अर्घ्यं ॥ ७ ॥
नाम वर्जन जिन जानों सही, लही शिवपुर जिन शिवसुख मही।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं वर्जनजिनाय अर्घ्यं ॥ ८ ॥
शरीरक जिन नाम सु सार है, पंचविधि संसार निवार है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं शरीरकाय अर्घ्यं ॥ ९ ॥
नाम जिन तपचंद्र सु जानिये, शुद्ध चेतनरूप प्रमानिये।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घ्यं ॥ १० ॥
श्री महेश जिनेश महान है, महातम प्रभु कीरतिवान है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं श्री महेशाय अर्घ्यं ॥ ११ ॥
नाम जिन सुग्रीव सु गाइयो, गर्वहर्ता जग जसु क्षाइयो।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घ्यं ॥ १२ ॥
दृढ़ प्रहार सु जिनको नाम है, कर्म काटन पूरण काम है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दृढ़प्रहाराय अर्घ्यं ॥ १३ ॥
अंबरीक सु ठीक दयाल है, जगत जंतु करण प्रतिपाल है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अंबरीकाय अर्घ्यं ॥ १४ ॥
नाम जिन दयतात विख्यात जग, कर्म वसु रिपु हनि लिय मोक्षमग।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दयताताय अर्घ्यं ॥ १५ ॥

तुंगराख्य जिनेश्वर जानियै, सुगुनगन पूरण परमानियैं।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तुंगराख्यजिनाय अर्घं ॥१६॥
सर्वशील सु नाम जिनेश्वरो, सहस ढारह शील धरन परो।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घं ॥ १७ ॥
दयाकृत जिनवर जगमें प्रगट, जिन चरण धारत भविजन स्वघट।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दयाकृतजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
जितेन्द्रिय जाते जिनकर नयन, वस कियो फुनि सबके राजमन।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं जितेन्द्राय अर्घं ॥ १९ ॥
तपादित्य सु नाम वखानियै, सु तप कर सूरज सम जानियै।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घं ॥ २० ॥
नाम रत्नाकर जिन सार है, दरशनादिक रतन भंडार है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं रत्नाकरजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
नाम श्री देवेश जिनेश है, देवपति पूजत सु गणेश है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं देवेशजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
श्री सुलक्षणदेव प्रमानियै, वसु सहस तन लक्षण जानियै।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं लक्षणजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥
सु प्रदेश निदेश करण प्रभू, धर्मधुर धौरेय महाविभू।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रदेशाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, ऐरावत जिनराय।
पूरण अर्घ बनायकर, पूजौं मन वच काय॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व मेरु ऐरावत भावी जिनेभ्यो अर्घं॥

## अथ जयमाला ।

सोरठा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरु, भावी जिनवर ये कहै ।
क्षेत्रैरावत केर, तिन जयमाल वखानियै ॥

छन्द चाल ।

जय जय सु जशोधर स्वामी, जय अभयघोष जिननामी ।
पर पुष्कर ऐरावत भावी, जिन चरण नमैं नम तावी ॥
जय सुकृत सुकृतके करता, जय निर्वाणक दुख हरता ।
हृतवासदेव जग नायक, जयवंते जग सुखदायक ॥पर पुष्कर०॥
जय जय अतिराज जिनेश्वर, जय अजित जगत परमेश्वर ॥ पर०॥
जय वर्जुनाम शिवधामी, शारीरिक जय जिननामी ॥ पर०॥
जय जय तपचन्द्र जगत गुरु, जय नाम महेश जजत सुर ॥पर०॥
जय जय सुग्रीव गुण धारी, जय दृढ़ प्रहार अवहारी ॥पर०॥
जय अम्बर नाम सु गायौ, जप दाया तात शिव पायौ ॥पर०॥
जय तुम्बरीक गुण पूरे, जय सर्व सीम विधि चूरे ॥पर०॥
जय जय कृत जिन नामा, जय जित इन्द्रिय गुण धामा । पर०॥
जय तपसादित्य जगतपति, रत्नाकर देत मुकति गति । पर०॥
देवेश नाम जग सारा, जय लांक्षन जग भतारा ॥पर०॥
जय जय प्रदेश जिन देवा, सुर नर पशु कृत पद सेवा ॥पर०॥

घत्ता–अडिल्ल छन्द ।

यह जयमाल सुभाषी गायकें,
पुष्कर पर ऐरावत पद शिरनायके ।

जो भविजन मनवचनकाय जिन उर धरै,
नर सुरके सुख भोग बहुरि शिवत्रिय वरै ॥ १२॥

गीता छन्द।

गजंति लहंति बाजीगण, सुरथ पापक घनैं।
सुत दार बांधव सार बहु, परिवार आदिकको गनैं॥
धनधान्य संपति भृत्य कृत नति, त्रय जगति जसु गाइयै।
जिनराज चरण सु पूजते भवि, सुरग मुकतिपद पाइयै ॥ १३॥

इति चतुर्थ मेरु पूजा सम्पूर्णम्।

---

# अथ पुष्कर द्वीप पश्चिम मेरु पूजा!

सुन्दरी छन्द।

अपर पुष्कर पांडुक मेरु वन, पांडुक दिशला चारों दिखन।
भरत ऐरावत सु विदेह युग, पर अपर दक्षिण उत्तर सुभग॥
तहां सु जिनवर न्हवन भयौ भलै, तिन चरण पूजौ वसु द्रव्य लै।
जल सु चंदन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फलादिक अर्घ धरू॥

ॐ ह्रीं अपर पुष्कर मंदिर मेरु पांडुकवन चतुः शिलोपरि पुरव अपर दक्षिण उत्तर जन्मोत्सव जिनेभ्यो अर्घं ॥ १४ ॥

कनकवर्ण सु पांडुक वन विषै, मेरु पंचम ऊपर श्रुत लिखै।
चहु जिनालय चहु दिशि राज ही, यजै चरण सुजिन दुखभाजही॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचमेरु पांडुकवन चतुरदिशि चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

सौमनस वन सुवरनमय जहां, चहुं दिश चैत्यालय चहुं तहां ।
अमरपति पद पूजत आपके, हम यजे जिन अर्घ बनायकै ॥

ॐ ह्रीं पंचममेरु सौमनसवन चतुरदिशि चतुश्चैत्यालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

वन सुनंदन पांच मेरु पर, तहां जिनालै चहुदिशमें सु घर ।
अकृतिम प्रतिमा जह सोहये, चरण पूजत हम तिनकौं नये ॥

ॐ ह्रीं पंचम मेरु नंदन वन चतुर्दिशि चतुश्चैत्यालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

भद्रशाल कनकमय जानियै, मेरु पंचम भू परमानियै ।
जहां जिनालय जिन पूजा करौ, चहूंदिशि जिनपद ही परै धरौ ॥

ॐ ह्रीं भद्रशाल वन चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

अडिल्ल छद ।

मेरु सु पंचम नागदंत चदु सोहए ।
त्रिदशामै ये परै सुजन मन मोहये ॥
जिन मंदिर तिन ऊपर चारि लसै ।
खरे जिनप्रतिमा पद पूज सकल पातिक हरे ॥

ॐ ह्रीं पंचममेरु गजदंत चारिचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥१९॥

मेरु पंचम दक्षिण निषिधिगिरि ।
जानि कुल भूधर ताके शिखिर ॥
कूट नव भाषै मुनिराय जू ।
यजो जिनपद अर्घं बनाय जू ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचम मेरु सम्बंधी निषिधोपरि नवकूट-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २० ॥

निषिधि नील विच जानौ सही ।
भोग भू जिस उत्तम जिन कही ॥
तहं सु चारण मुनिपद पूजिये ।
ले जलादिक हरखित हूजिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु निषिध नील बिच उत्तम भोग-भूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

निषिधाचल ऊपर द्रह जानियै ।
तिगंछ द्रह नाम बखानियै ॥
तहां धृति देवी जिन ग्रह यजौ ।
अर्घ वसुविधि करि जिनपद भजौ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचलोपरि मध्य तिगंछ द्रह तत्र धृतिदेवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

तिगंछ द्रहसैं युग सरिता सु वर ।
कृष्ण कान्ता सीता नाम धर ॥
परापर सागर बिच जो मिली ।
पुलिन गत जिन ग्रह पूजो शुभ थली ॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि तिगंछद्रहसे निकसी सीता कृष्ण-कांतातट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

महा हिमवत सैल सुहावनो, कूट वसुयुत जन मन भावनो ।
जहां जिनालय जिनपद पूजि भवि, मिलै मुकति कमलदग कहै कवि॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि अष्टकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥२४॥

निषिध मह हिमवत बिच जो परी, भोगभूमध्यम सोहे खरी ।
चारणार्द्धि मुनि विहरत भले, तिन चरण पूजत वसुविधि गलै ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतनिषिद्धयोमध्य हेमवतक्षेत्र मध्यमभोग-भूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ २५ ॥

महा हिम महा पद्मद्रहसु तैं, निकसी जो रुकतीकाक कैवुतै ।
नाम हरित सु रोहित जानिये, पुलिन गत जिन पूजन ठानियै ॥

ॐ ह्रीं महाहिमोपरि महापद्मद्रह निर्ग्रतहरित रोहिततट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २६ ॥

महाहिम महापद्म द्रह विषैं, महावारिजगत श्री ह्री ग्रह लिखे।
तहां जिनालयजिनपद पूजये,वसुविधि अर्घ चढ़ाय सु हर्षित हूजिये।

ॐ ह्रीं महाहिमवत महापद्म द्रह गत महापुंडरीक मध्य ह्री ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २७ ॥

कूट नवयुत नाम हिमाचलो, अपर पुष्करमैं कुलगिरि भलो ।
तहां जिनालयजिन पूजा करौ, अर्घ करि वसुविधि सब अघ हरौ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरुसंबंधी हिमवत नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २८ ॥

हिमाचल पद्मद्रह जानियै, मध्य वारिज श्री गृह मानियैं ।
तहां जिनालय जिनपद अरचियै, अर्घ करि मन वच तन परखियैं ॥

ॐ ह्रीं हिमवनपर्वतोपरि पद्मद्रह मध्य कमल बीच श्रीग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २९ ॥

हिम हिमाचल गुरु लघु मध्य थल, भोगभूमि जघन्य सु जानि भल।
तह सुचारण जिन मुनि चरणकी, पूज करहु सदा दुखहरणकी ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु सम्बन्धी महा हिमवन बीच जघन्य भोगभूमिगत चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

पद्मद्रह निर्गत सरिता सु त्रय, एक उत्तरगत दक्षिण दुतिय।
नाम गंगा सिंधु सुरोहिता, पुलिन गत जिन पूज करौ मिता ॥

ॐ ह्रीं हिमवत पद्मद्रह निर्गत गंगा सिंधु रोहिता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

मेरु उत्तर नील कुलाचलो, पुष्करार्द्ध अपर दिशमें भलो।
कूट युत जिनमंदिर जानियै, तहां जिनवर सु पूजा ठानियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपरमेरु सम्बन्धी नीलाचलोपरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

नील निषिध सु बीच वखानियै, भोगभू उत्तम परमानियै।
तह सु जिन मुनि चारण युग चरण, पूजिये भविजन तारणतरण ॥

ॐ ह्रीं नीलनिषिध बीच उत्तम भोगभूमिगत चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

नीलगिरि केशर द्रह पर्‌यो, बीच वारिज निर्मल जल भर्‌यो।
मध्य कीरतिदेवीके सु ग्रह, पूजिये वसुविध चरण तह ॥

ॐ ह्रीं नीलाचल परवतोपरि केशरी द्रह मध्य कमल तिस मध्यं कीरतिदेवी ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३४ ॥

नारी सीतोदा सरिता युगम, निकस चली जिनको जल अगम।
मिली सागर बिच दोउ जायकै, तत जजौं जिन अर्घ बनायकै ॥

ॐ ह्रीं नीलाचलोपरि केशरी द्रह निर्गत नारी सीतोदा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

दीप पुष्कर पंचम मेरुगिरि, रुक्म नाम सु उत्तर दिशि शिखर ।
कूट अष्ट बिराजत जासु पुर, तहं जिनालय जिन पूजो सुधर ॥

ॐ ह्रीं रुक्म परवतोपरि अष्टकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥३६॥

रुक्म नीलाचल बिच भोग भू, तहं सु चारणमुनि फुनि जिन स्वयंभू ।
विहरते तिन चरण यजौ भले, जल फलादिक वसुविध अर्घ लै ॥

ॐ ह्रीं नील रुक्म बीच मध्यम भोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ३७ ॥

रुक्म पर्वत नाम सु जिस उपरि, पुण्डरीक सु द्रह जिस नाम धरि ।
तहं कमल बिच देवी बुद्धि ग्रह, यजौ जिनमंदिर जिनचरण मह ॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि बुद्धिदेवी ग्रहजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥३८॥

पुंडरीक सु द्रहसे निकसकै, चली सागरको दो सु धसिकें ।
स्वर्णकूला नरकांता सरित, तसु पुलिनगत जिन पूजौ सुहत ॥

ॐ ह्रीं पुंडरीकद्रहसे निर्गत स्वर्णकूला नरकांता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३९ ॥

पुष्करार्द्ध पश्चिम मेरु गिरि दिशि, सु उत्तर कुलभूधर शिखिरि ।
कूट ग्यारह जिस ऊपर परे, तहां जिनालय जिन पूजन करै ॥

ॐ ह्रीं शिखिरिपर्वतोपरि एकादश कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४० ॥

शिखिरि सैल महा द्रह सार है, पुंडरीक महा सुखकार है ।
सुरी लक्ष्मी ग्रह जांनियै, तहां जिनालय पूजन ठानियै ॥

ॐ ह्रीं शिखिरिपर्वतोपरि महापुंडरीक द्रह बीच पुंडरीक मध्य लक्ष्मीदेवीग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४१ ॥

पुंडरीक महाद्रहसे निकसी, चली सरिता त्रय धरणी सु धसी ।
रूप्य तट रक्ता रक्तोदका, जिन यजौ तट तिन कर मोदका ॥

ॐ ह्रीं शिखिरिपर्वतोपरि महापुंडरीक द्रहसो निकसी रूप्यकूला रक्ता रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

रुक्म शिखरि सु दोनौं बीच परी, भोगभूमि जघन्य लसै खरी ।
तहां जिन मुनि चारण चरण युग, पूजते सुकटैं संसार रुग ॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखरि मध्य जघन्य भोगभूमि तत्र चारण-मुनिभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

अडिल्ल छन्द ।

पुष्कर पश्चिम मेरु रजतगिरि जामकै ।
दक्षिण दिशमें जानि भरतगत तासुके ॥
शिर ऊपर नवकूट लसत अति है सही ।
तहं जिनमंदिर पूजो जिनवर यों कही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु दक्षिण भरतगत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

तार हार विजयारध युग जहां श्रेणी है ।
दक्षिण उत्तर जानि परम सुख दैनि है ॥
तहं जिन मंदिर जिन प्रतिमा पद पूजियै ।
नगर दशोत्तर शत बिच सुरपति हूजियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचम मेरु सम्बन्धी दक्षिण भारत विजयारधयुगश्रेणिगत दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ४५

तार हार विजयारध परवत दूसरो।
दक्षिण दिशमें जानि कूट नवयुत खरो॥
पुष्कर पर ऐरावत जहां जिनवर यजौ।
वसु विध अर्घ बनाय गाय गुण पद जजौं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम मेरु उत्तर ऐरावत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ४६॥

तार हार विजयारध पर फुनि राज ही।
श्रेणी युग जहं नगर दशोत्तर छाज ही॥
तहां जिनमंदिर जिनप्रति पूजौ भावसौ।
वसुविध अर्घ बनाय गाय गुण चावसौं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिम मेरु विजयारध दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ४७॥

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, दक्षिण उत्तर जानि।
शल नदी द्रह क्षेत्र विच, पूजो इति परमाण॥ ४८॥

इति पूर्णार्घं।

## अथ जयमाला।

छन्द गीता—अडिल्ल।

जय केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा।
जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धडी छद ।

जे महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज शक्र ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनविम्ब नमो पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमों हिय धरों ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु शत तनु सहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु लील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महसर्प्प वीर्य जिनकौ न अंत ॥गिरि०
वसु गुण रतननके है भंडार, जयवंते वरतो जग मझार ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौं पदकमल तेह ॥

घत्ता-सोरठा ।

यह जयमाल विशाल, पुष्कर पंचम मेरुकी ।
पूजा करहू त्रिकाल, मध्य सु सांझ सवेरकी ॥ ५० ॥

गोता छद ।

वसु द्रव्य कर जिन बिंब पूजौ, मन वचन तन चावसौं ।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिर मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाईये ।
ते होहु तुमकौं सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति पुष्कर पंचममेरु कुलाचल भरतऐरावत विजयारध पूजा सम्पूर्णम् ।

---

# अथ पूरव विदेह पूजा ।

चाल पद्धड़ीकी-सोरठा ।

पुष्कर पंचम मेरु, पूर्व विदेह सु जानिये ।
चरण यजौ तिन केर, षोडश क्षेत्र ये जिन भए ॥५१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पचममेरु पूर्वविदेह षोडशक्षेत्र षट्खंड-मंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग तत्र जिन वीरसैन महाभद्र अत्रावतरावतर इत्यादि ।

## अथाष्टकं ।

चाल पद्धड़ीकी ।

नीर सु है क्षीर समुद्रको ल्याय, या मन परम पुनीत जो ।
पूजो हो भवि युग जिनराय, भव आताप वितीत जो ॥
पुष्कर हे पंचम मेरु विदेह, पूरव दिशिमें जानियै ।
वीर सु हेम महाभद्र जिन एह, चरणकमल उर आनियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु पूरव विदेह षोडशक्षेत्र वीर महाभद्रजिनेभ्यो जलं ॥ ५२ ॥

चंदन हेम मलियागिरि गारि, रतन कटोरीमें धरो ।
चरण सु हे युग जिनवर सुखकार, दाह दुरित यातै मिटै ॥
पुष्कर० ॥ ५३ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ।

तंदुल हे प्रासुक नीर पखारी, सुवरणमय थारी भरौं ।
पूज सुहे श्रीजिनवर ढिग धार, तुरतै शिव रमणी वरौं ॥
पुष्कर० ॥ ५४ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कुसुम सुहे सुरतरुके सार, कनक रजतमय लीजियै ।
भरि भरि हे अंजुल करि मझार, चरन समर्चन कीजियै ॥
पुष्कर० ॥ ५५ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

नेवज हेत जि विविध प्रकार, मोदक खाजे अति भले ।
लै करि हे सुवरण थारी धारि, जिन मंदिर पूजन चले ।
पुष्कर० ॥ ५६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

दीपक हे जगमग जोति उद्योत, रतन रकाबी धारिकै ।
यातै हे मिथ्यातम क्षय होति, आरत चरण उतारिकै ॥
पुष्कर० ॥ ५७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

लीजे हे धूप दशांग सम्हारि, चरण निकट जिन खेईयै ।
दीजै हो वसु कर्मनु जारि, परमातम पद वेइयै ॥
पुष्कर० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

श्रीफल हे बादाम मगाय, दाख छुहारे लायची ।
पिस्ता सेउ सदा फल ल्याय, लौंग सुपारी चीकनी ॥
पुष्कर० ॥ ५९ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।

जल फल हे अर्घ सजोय सु, थाल मांहि धारि कर आरती ।
गावों हे भवि जन जिन गुण माल, जनम जगम अघ टारती ॥
पुष्कर है पंचम मेरु विदेह, पूरव दिशमैं जानियै ।
गोर सु हे महाभद्र जिन येह, तिन पद पूजन ठानियै ॥६०॥

# अथ प्रत्येक पूजा ।

अडिल्ल छंद ।

पुष्कर पंचम मेरु विदेह जहां परे ।
पूरव दिशमें जानि सु षोडश है खरे ॥
तहं जिनवर मुनिराज चरण गुण पूजिये ।
अरघ बनाय गाय गुण हरषित हूजिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु पूरव विदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खंड मंडित तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६१ ॥

रुपाचल सु धवल अति षोडस जह परे ।
कूट सु नवयुत नगर दशोत्तर शत खरे ॥
तह जिनमंदिर जिन प्रतिमा अकृतम सही ।
तिन पद अर्घ बनाय जो जिनवर कही ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र सम्बन्धी विजयार्द्ध एकसौ चवालीश १४४ कूट एक हजार सातसै साठिनगर १७६० जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६२ ॥

वसु वक्षार शिखिर नवयुत गिरिराज ही ।
तह जिनमंदिर जिन प्रतिमा जही ॥
वसुविधि अर्घ बनाय सु मन वच कायकै ।
पूजौ चरण त्रिकाल सु मन हरषायकै ॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि द्वादश सप्तति ७२ कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ ६३ ॥

द्वादश नदी विभंगा तिनमै जानिये ।
तह वासी सुर ग्रह जिनमंदिर मानियै ॥

पूज नर सुर विद्याधर जहं आयकै।
भक्ति सहित गुण गाय सु मन हरषायकै ॥
ॐ ह्रीं पट्टयुग विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ॥ ६४ ॥

## अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिरहरं।
भव्य कमल परकाशन भासन जग धरं ॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुंदर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धरी छन्द।

जय महाघाति विधि विघ्न चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौ पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमौ हीय धरो ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु शत तनु सहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत पाद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु लील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत गुण ज्ञानवंत, मह शर्म्मवीर्य जिनको न अन्त ॥गि०
वसु गुण रतननुके है भंडार, जैवंते वरतो जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥

घत्ता–दोहा ।

यह जयमाल विशाल वर, भाखी पंचम मेरु ।
पुष्कर पूरव जानि जिन, नमों चरण तिन केर ॥

गीता छन्द ।

वसु द्रव्य करि जिनविंब पूजों, मन वचन तन चावसों ।
नर सुरगके सुख भोग करि, फिरि मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइयै ।
ते होहु तुमकों सदा, जयवंते सु जिन गुन गाइये ॥

इत्याशीर्वादः ।

---

# अथ पुष्करार्द्ध पश्चिम मेरु पश्चिम विदेह पूजा ।

सोरठा ।

पुष्कर पंचम मेरु, अपर विदेह सु जानियै ।
षोड़श गत जिन केर, आह्वानन अवठानियै ॥६७॥

ॐ ह्रीं पुष्कर पंचम मेरु अपर विदेहगत देव जशोधर अजितवीर्य, अत्रावतरावतर तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् संनिधीकरणं ।

## अथाष्टकं ।

चाल–परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो, इस चालमे ।

रोग त्रिखा अति दहै शरीर, नाशन कारण ल्यावौ नीर ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ॥

पुष्कर मेरु अपरगिरि जानि, अपर विदेह परम सुख थानि।
देव जशोधर अजित सु वीर्य, पूजै चरण महा घर धीर ॥जगत०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु अपरविदेहगत देव जशोधर अजितवीर्यजिनेभ्यो जलं ॥ ६८ ॥

भव आताप सहे बहुवार, नाशन चन्दन ल्यायो गार।
जगत० ॥ पुष्क० अपर मेरुगिरि ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ॥ ६९ ॥

कर्म वेदनी सो दुखदाय, नाशन अक्षत ल्यायौ ध्याय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ ७० ॥

कुसुमवान भरमो दुख देत, ल्यायौ कुसुम सो नाशन हेत।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ ७१ ॥

क्षुधा वेदनी मो दुखदाय, ल्यायौ चरु तिस नाशन भाय।
जगत० ॥ पुष्क ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥ ७२ ॥

अबल मोहतम दृग रह्यौ छाय, नाशन दीपक ल्यायौ ध्याय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ ७३ ॥

अष्ट करम रिपु मो दुख देय, नाशन धूप सुगंधी खेय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ ७४ ॥

फल फासू उत्तम धरि थार, ल्यावौ शिवफल हेत अपार।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ ७५ ॥

जल फलादि ले अर्घ बनाय, 'कमलनयन' जिन पूज कराय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपरमेरु अपरविदेह देव जशोधरजिनेभ्यो अर्घं।

---

# अथ षोडश क्षेत्र पूजा ।

दोहा–सीतोदा तट उभय दिशि, दक्षिण उत्तर जानि ।
तहं विदेह वसु वसु लसैं, पूजौं तिन गुण खानि ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमविदेह पद्मादि षोडश क्षेत्र षट्खण्ड मण्डित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग्य वर्तमानतीर्थंकरेभ्यो अर्घं ।

तार हार वैताड़गिरि, षोडश सार निहार ।
वार आदि वसु धारि द्रवि, पूजौं जिन सुखकार ॥७३॥

ॐ ह्रीं षोडश क्षेत्र सम्बंधी षोडश विजयारध कूट एकसै चवालीस १४४ नगर १७६० एक हजार सातसै साठि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

है वक्षारगिरि कूट सु नव युत जोय ।
तहां जिनमंदिर जिन यजौं, वसुविधि अर्घ संजोय ॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि नवकूटसंयुक्त जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

है विभंग सरिता वरा, षट् षट् परमिति जानि ।
तहां तट जिनमंदिर यजौं, वसुविधि द्रव्य सु आनि ॥

ॐ ह्रीं षट् षट् विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥७६॥

## अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द ।

जै केवल दिनकर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकाशन भासन जग धरं ।
निश्चय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा,
जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छद ।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमौं हिय धरौ ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु शत तनु सहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरभंग अंग शोभे सुहाय ॥गिरि०॥
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदिपाद, नृपगण भविजन मन करत पाद ॥गि०
जय पुण्य क्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु लील ॥गि०
जय सुरग मुक्ति पद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्मवीर्य जिनको न अन्त ॥गि०
वसु गुण रतननुके हैं भंडार, जयवंते वरतौ जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौं पद कमल तेह ॥

घत्ता—दोहा ।

यह जयमाल विशाल, पुष्कर अपर विदेहकी।
वंदौ पद तिहुं काल, पश्चिम पंचम मेरुकी ॥

गीता छद ।

वसु द्रव्य कर जिन बिंब पूजौ, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोग करि फिरि, मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाके सु फल करि तीर्थ करि हरि प्रमुख पदवी पाइयै।
ते होहु तुमकौं सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइयै ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति पंचममेरु पश्चिम विदेह पूजा सम्पूर्णम् ।

# अथ भारत क्षेत्र अतीत अनागत वर्तमान जिन पूजा।

गीता छन्द।

वर पुष्करार्द्ध मेरु पंचम, भरत क्षेत्र सुहावनौ।
दक्षिण दिशा गत जानि भविजन, सुर नरन मन भावनौ॥
जहतीतनागत वर्तमान, यु तीनि चउवीसी भई।
तिन करौ आह्वानन त्रिविध करि, सिद्ध पदवी जिन लई॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु मंदिर भरतक्षेत्र तीत वर्तमान भविष्यति जिन अत्रावत्रावतर संवौषट् इत्याह्वाननं ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

## अथाष्टकं।

ढाल-शील सुरंगी चूनरीकी।

नीर भरौ द्रह पद्मको, कंचन झारी बनाय हो।
प्रासुक परम पुनीत जो, श्री जिन चरण चढ़ाय हो॥
मेरी सीख सुनौ भवि जिय भली॥
पुष्कर भारत यों लसै, अपर दिशामें जानि हो।
तीतानागत जिन यजौ, पंचममेरु बखानि हो॥
मेरी सीख सुनौं भवि जिय भली॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु सम्बन्धी भरत क्षेत्रगत तीतानागत वर्तमानजिनेभ्यो जलं॥ ८१॥

बावन चंदन ल्यायकै, केशर सरस मिलाय हो ।
रतन कटोरी धारिकै, चरण पूजि जिनराय हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८२ ॥ ॐ ह्रीं चंदनं ।

मुक्ताफल तंदुल घनै, प्रासुक नीर पखारि हो ।
भाव सहित जिन पूजिये, तुरत वरौं शिवनारि हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कुसुम रजतमय हेमके, चरण निकट भवि धार हो ।
भरि भरि अंजुल लीजिये, कामबाण निरवार हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

तुरत गौ घृत आनिकै, बहु पकवान बनाय हो ।
श्रीजिनवर पद पूजते, रोग क्षुधा मिटि जाय हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

कंचन दीप सुहावनै, मणिमय वाती बाल हो ।
आरति करि जिन चरणकी, मोह महातम टारि हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

अगर सुगंधी खेइये, धूप दहन बिच सार हो ।
परमातम पद तब मिलै, कर्म होहि जरि क्षार हो ॥
मेरी० ॥ पुष्क० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

फल फासू उत्तम भले, भरि करि कंचन थार हो ।
लै जिन चरण चढाय, मुक्ति सुफल दातार हो ॥
मेरी० ॥ पुष्कर० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।

जल चंदन कुसुमावली, चरु वरु दीपक वाल हो ।
धूप फलादिक अर्घ ले, पूजौ जिन सुखकार हो ॥
मेरी सीख सुनो भवि जिय भली ।
पुष्कर भारत यौं लसे, अपर दिशामें जानि हो ।
तीतानागत जिन यजो, पंचम मेरु वखाणि हो ॥
ॐ ह्रीं अर्घं ।

## अथ प्रत्येक पूजा ।

सुंदरी छन्द ।

पद्मचन्द्र जिनेश्वर जानियै, पद्मपद शशि मुख परमानिगै ।
अपर पुष्कर भारत जिन यजौ, जलफलादि लै द्रवि वसुविधि सजौ ॥
ॐ ह्रीं पद्मचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

नाम रत्नागद जिन सार है, रतन जटिता भूषण धार है ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं रत्नागदजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

योगि योगीश्वर वंदित चरण, नाम जिन जोगेश्वर सुखकरण ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं योगीजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

तीर्थ नग्नाधिप जिन नाम वर, नग्न तन तप मंडित ज्ञान धर ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नग्नाधिपतये अर्घं ॥ ४ ॥

नष्ट कृत पाखंड सु नामवर, जानि पंचम तीर्थंकर सु नर ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नष्टपाखंडाय अर्घं ॥ ५ ॥

सुप्रबोध जिनेश्वर जानियै, बोधकारण भवि परमाणियै ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुप्रबोधाय अर्घं ॥ ६ ॥

श्री गुणाधिक नाम सु गाइये, गुणनिधान महाजसु गाइयै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं गुणाधिकाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम पारित्रिक जिन सार है, पारकरण उदधि संसार है ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं पारित्रिकाय अर्घं ॥ ८ ॥

ब्रह्मनाथ जिनेश्वर जगपति, भविनकौ जिन दीन शिव गति ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं ॥ ९ ॥

श्री मुनींद्र जगत आनंदकर, वंद्यतपद जिन सुर असुर नर ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुनिन्द्रदेवाय अर्घं ॥१०॥

दीप्तकाय सु जिनको नाम है, दीप्तवंत महा द्युति धाम है ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं दीप्तकाय अर्घं ॥ ११ ॥

राजऋषि जिनराज विराज ही, मुनिगण स्वरके शिरताज ही ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं राजऋषये अर्घं ॥ १२ ॥

जिन विसार वसु नाम बताइयौ, धर्म शाखा युत जसु गाइयौ ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं विशाखजिनाय अर्घं ॥१३॥

नाम जासु अनादित जग प्रगट, खोलिदिय भवि अंतरघट सुपट।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं अनादिताय अर्घं ॥१४॥

कोटि रवि द्युति तन धारण प्रभू, नाम रवि स्वामी जिनवर स्वभू।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं रविस्वामिने अर्घं ॥ १५॥

सोमदत्त सु नाम सुगुरु कह्यौ, जगत आल्हादन जिनवर भजौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमदत्तजिनाय अर्घं ॥१६॥

नाम जय स्वामी जग सार है, भव्यजीव करण उद्धार है ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जयस्वामिने अर्घं ॥१७॥

मोक्ष नाथ कियो जगत, मोक्ष वनिता मुखलोकन मुकत।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घ ॥ १८ ॥

अग्रभान जिनेश्वर नाम धर, कर्म भानि लियौ जिन मुकति वर।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अग्रभानये अर्घ ॥ १९ ॥

नाम जिन धनुपाग सु जानियै, धनुर्धर सेवित परमानियै।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं धनुषागाय अर्घ ॥ २० ॥

भव्य रोमांचित किय ज्ञान करि, नमौं रोमांचित यातैं सु धरि।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं रोमांचिताय अर्घ ॥ २१ ॥

मुक्तिनाथ सु मुक्तिकरण महा, भव्यजीवनको शिवसुख लहा।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तिनाथाय अर्घ ॥ २२ ॥

श्री जिनेश महेश सुरेश मुनि, पूजते सु गणेश धनेश फुनि।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं जिनेशाय अर्घ ॥ २३ ॥

जिन प्रसिद्ध सु ऋद्धि समृद्धि करि, वृद्धि बुद्धि स दातारवर।
अपर पुष्कर भारत जिन यजौ, जल फलादिक लै वसुविधि सजौ ॥
ॐ ह्रीं प्रसिद्धाय अर्घ ॥ २४ ॥

पुष्कर अपर सु जानियै, भारत तीत जिनेश।
जिन चरणांबुज पूजिये, पूर्णार्घ करवेश ॥ १० ॥

## अथ जयमाला।

सोरठा।

पुष्कर भारत जानि, अपर दिशामें जो परचौ।
पंचम मेरु प्रमाणि, तीत जिनेश्वर पद नमौं ॥ ११ ॥

पद्धडी छंद।

जय पद्मचंद्र जिनराज देव, फुनि रत्नांगद पद नमौं एव।
पुष्कर भारत जिन नमौ तीत, पंचम मंदिर दिश अपरमीत॥
जय योगिक जिन वन किय विहार, नग्नाधिप पंचाचरण धार॥पु०
पाखंड नष्ट जिन नाम सार, जय सुप्रबोध गुण है अपार॥पुष्कर०
जय जय हि गुणाधिक गुणनिधाम, जय जय चरित्र सुकाय नाम॥पु.
जय ब्रह्मनाथ जिन चित्सरूप, जिन नाम मुनिन्द्र सुगुण कूट॥पु०
जय दीप्तकाय तन दीप्तवंत, जय राजऋषीश्वर हेमवंत।पुष्कर०
जय जय विशाल जिन नमौ पाय, आनंदित आनंदकरण गाय॥पु०
गुरु विश्वस्वामि जिन है महेश, जय सोमदत्त सब गुणन खांन॥पु०
जय स्वामी जिनेश्वर गुण गंभीर, जय मोक्षनाथ पर हरण पीर॥पु०
जय अग्रभानि गिरि कर्म भानि, अनुखंड नमौ जुगजोरि पानि॥पु०
जय जय रोमांचक नाम धार, जय मुक्तिनाथ भवि मुक्तिहार॥पु०
जय जय जिनेश जग है महेश, जय नाम प्रसिद्ध कह्यौ गणेश॥१२॥

घत्ता—दोहा।

भाषी जहां जयमाल वर, तीत जिनेश्वर केर।
पुष्कर भारत अपर दिश, दक्षिण पंचम मेर॥ १३॥

इति तीत जिन पुजा सम्पूर्णम्।

# अथ वर्तमान पूजा ।

सोरठा ।

जल फल ल्याय पवित्र, श्री सर्वांग जिनेश्वरो ।
पुष्कर भारत क्षेत्र, गत जिन अपर दिशा यजो ॥
ॐ ह्रीं सर्वांगजिनाय अर्घं ॥ १ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, पद्माकर जिनवर भजौ ।
पुष्करार्द्ध भारत क्षेत्र गत जिन अपर दिशा यजो ॥
ॐ ह्रीं पद्माकरजिनाय अर्घं ॥ २ ॥
जल फल ल्याय प'वत्र, चरण प्रभा करिके भजौ ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रभाकरजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, योगेश्वर जिनवर भजौ ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं योगेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, सूक्ष्मांग जिनपद भजौ ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सूक्ष्मांगाय अर्घं ॥ ५ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, श्री बलनाथ जिनेश्वरो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्घं ॥ ६ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, बलातीत जिनपद भजौ ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं बलातीताय अर्घं ॥ ७ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, कलम्बकाख्य जिनेश्वरो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं कलंवकाय अर्घं ॥ ८ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, परित्याग जिनवर भजौ ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घं ॥ ९ ॥

जल फल ल्याय अपार, नाम निषेधक जिन भजो।

पुष्क ॥ ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्घं ॥ १० ॥

जल फल ल्याय पवित्र, पापहार जिनवर भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पापहारिनेभ्यो अर्घं ॥ ११ ॥

जल फल ल्याय अपार, मुक्तचन्द जिनवर भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तिचन्द्राय अर्घं ॥ १२ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, अप्रासिक जिनवर भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्री अप्रासिकजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, श्री जयचंद्र जिनेश्वरो।

पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं जयचंद्राय अर्घं ॥ १४ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, माला धार चरण भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मालाधारिणे अर्घं ॥ १५ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, संजत नाम जिनेश्वरो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं संजतजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, मलयसिंधु जिनवर भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं मलयसिंधुजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

जल फल ल्याय प वत्र, अक्ष धराख्य जिनेश्वरो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अक्षधराख्याय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, जिन सुदेव धर नाम है।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं देवधराय अर्घं ॥ १९ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, नाम देवगण जिन भजो।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं देवगणाय अर्घं ॥ २० ॥

जल फल ल्याय पवित्र, आगामिक जिन नाम है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं आगामिकाय अर्घं ॥ २१ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, नाम विनीत जिनेश्वरो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं ॥ २२ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, वीतराग जिन नाम है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, रतानंद जिनवर भजो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं रतानंदजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥
श्री सर्वांग सु आदि दै, रतानंद परजंत ।
चौवीसौं जिनवर य॰ौ, पूर्णार्घ करि संत ॥ ३६ ॥

इति पूर्णार्घं ।

## अथ जयमाला ।

पद्धडी छन्द ।

जय जन हितकर सर्वांग स्वामि, जय पद्माकर पद शरण स्वामि ।
पुष्कर भारत दिशि अपर जानि, जिनवर पद वंदौ वर्तमान ॥
जय जय हि प्रभाकर नाम सार, जय योगेश्वर गुण है अपार ॥पु०
जय जय सूक्ष्मांग सु नाम गाय, जय बलातीत जिन नमों पाय ॥पु०
जिन नाम कलंवक है विराग, जिन नमो परिग्रह परित्याग ॥पु०
जय नाम निषेधक शास्त्र गाय, जय पापहारि जिन है सभाय ॥पु०
जय मुक्ति चन्द्र शिवरमनिकंत, जय अप्रासिक बहु गुण धरंत ॥पु०
जय चंद्र नाम मुख चंद्र जोति, माला धारी जिन कियो उद्योत ॥पु०
जय जय हि सु संजत तीर्थकार, जय मलयसिंधु गुण अति उदार ॥पु०

जय अक्षरण्य जिनेश देव, बलनाथ दयाकर है सु एव॥ पु० ॥
जय देव देव धर देव सेव, जयदेव सु गुण लहि सकल भेव ॥पु०
जय आगामिक करुणानिधान, जय नाम विनीत सु धरण ध्यान पु०
जय वीतराग सु वीतीत राग, जय रतानंद पदकमल लाग ॥पु०

घत्ता—सोरठा।

यह जयमाल सु गाय, पुष्कर भारथ अपरकी।
है जिनवर सुखदाय, जग जीवन भवि जननुके॥

इति वर्तमान पूजा।

---

# अथ भावी जिन पूजा।

त्रोटक छंद।

प्रभावक नाम जिनेश्वर देव, सुरासुर वंदित चर्ण सु एव।
सु पुष्कर भारत पश्चिम जान, यजो जिन भावी जलादिक आनि॥
ॐ ह्रीं प्रभावकजिनाय अर्घं॥ १॥
स्वभाव जिनेश्वर नाम सु गाय, विभाव सुभाव सु दीय बताय।
सु पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं स्वभावाय अर्घं॥ २॥
विभाव जिनेश्वर नाम सु एन, सुखाकर पाप विनाशन वेन।
सु पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं विभावाय अर्घं॥ ३॥
सु नाम दिनेश्वर है जग सार, प्रभारवि कोटिक वारनहार।
सु पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं॥ ४॥
जिनो अघ तेजस नाम वखानि, भए शिव कर्म महारिपु हानि।
सु पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं अघतेजसाय अर्घं॥ ५॥

जिनेश्वर श्री धनदत्त विख्यात, दियो धन निर्धनको जगतात ।
सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं धनदत्तजिनाय अर्घं ॥६॥

,सु पोरव नाम महा गुण धाम, पुरा कृत कर्म विनाशक स्वामि ।
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पोरवाय अर्घं ॥ ७ ॥

सु है जिनदत्त महा गुण राशि, सु ध्यान सु धेय सदा परकाशि ।
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं जिनदत्तजिनाय अर्घं ॥८॥

सु पारसनाथ मिथ्यातम हानि, सु धर्म प्रकाशि कियौ जय ज्ञानि ।
सु पुष्कर भारत पश्चिम जानि, यजौं जिन भावि जलादिक आनि ॥
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ ९ ॥

महामुनि सिंधु जिनेश्वर जानि, सदाशिव पंथ दिशा मन मानि ।
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सिंधुजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

जिनेश्वर अस्तिक नाम सु गाय, सु अस्तिक भाव दियौ जु बताय ।
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अस्तिकजिनाय अर्घं ॥११॥

भवानिक नाम जिनेश्वर देव, भवाब्धि सु तारिक जानि सु एव ।
सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं भवानिकजिनाय नमः अर्घं ॥१२

अथ सुन्दरी छन्द ।

नाम जिन नृपनाथ सु जानियै, तेरमो भावित शुभ मानियै ।
अपर पुष्करार्द्ध भावित जिन यजौं, शुभ जलादिक लै वसुविध भजौं ॥
ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घं ।

नाम नारायण जिन जानियैं, निराधार तिन हि प्रमाणियै ।
अपर० पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नारायणाय अर्घं ॥१४॥

महाशिव ग्रह कीनौ वास जिन, नाम प्रसमोकस जिन जानि तिन।

अपर० पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रसमोकजिनाय अर्घं ॥१५

लोकत्रय भूमीश मुनीश ये, चरण सेवित सुर मुनि ईश ये।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं भूपतये अर्घं ॥ १६ ॥

नाम सुदृष्टिक जिन सार है, शुद्ध दर्शन धारनहार है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदृष्टिजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

तीर्थंकर भवमारक नाम है, भीति भवतारण सुखधाम है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं भववीरये अर्घं ॥ १८ ॥

तीर्थनाथ सु नंदन गाइयौ, नंदिताखिल गुणगण पाइयौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं नंदनाय अर्घं ॥ १९ ॥

नाम जिन गर्भारि सु जिन कह्यौ, शुद्ध बुद्ध निरंजनपद लह्यौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं गर्भारिजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

सुवासव जिनको वरनाम है, वासकरण सु शिवपुर ठाम है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुवासजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

नाम परवासक जिन जानिये, पारयास्पकरण परमानियै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं परवासजिनाय ॥ २२ ॥

नाम जिन वनवास महा लसैं, विगत सर्व उपाधि सु वन वसै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं वनवासाय अर्घं ॥ २३ ॥

मारतेश जिनेश महान हैं, कमल कोमल विग्रहवान हैं।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मारतेशाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

भारत पुष्कर अपर दिशि, भावी जिन चौवीस।
पूर्णार्घं करि पूजियै, नमो स्तु करि धरि शीश ॥६२॥

पूर्णार्घं।

## अथ जयमाला।

छन्द चाल।

परभावक चरण मनाऊं, स्वाभाविक जिन गुण गाऊं।
पुष्कर भारत जिन जानौं, भावी दिश अपर प्रमानौं॥
जय जय विभाव जिन स्वामी, जय जय दिनकर जग नामी ॥पु०
अघ तेज चरण जुग वंदौ, धनदत्त प्रणामि आनंदौ ॥पु०
पौरव जिन गुणगणधारी, जिनदत्त परम सुखकारी ॥पु०
जय जय पारस प्रभ वीरा, जय जय मुनि सिद्ध गभीरा ॥पु०
जय अस्तिकाय जगनायक, जय भवानीक शिवदायक ॥पु०
जय जय नृपनाथ जिनेसुर, नारायण नाम महेसुर ॥पु०
जय प्रसमोकस जग नामी, जय जिन भूपति गुण धामी ॥पु०
जय जय सु दृष्टि जिव स्वामी, भव भीरु महा शिव गामी ॥पु०
जय जय सु नंद जगतारण, जय गर्भ सु गर्भ निवारण ॥पु०
जय जय सुवास शिववासी, परवास वास जगनाशी ॥पु०
वनवासी वासी वनके, भूतेश हरन तन मनके ॥पु० ॥६३॥

दोहा।

ये चौवीस जिनेश्वर, पुष्कर भारत मांहि।
भावी पंचम मेरुके, नैन सदा बलि जाहि ॥ ६४ ॥

# अथ ऐरावत क्षेत्र संबंधी चौवीस पूजा।

दोहा।

उत्तर ऐरावत विषैं, भूत भविष्यत जानि।
वर्तमान जिनवर यजौ, आह्वानन तिन ठानि॥
त्रितिय अर्द्ध विच द्वीपमें, संख्या मिति चउवीस।
चउविस फुनि चउवीस है, पूजौ जिन जगदीश॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध उत्तर मेरु ऐरावत तीतानागत वर्तमान जिनात्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि।

## अथाष्टकं।

ढाल गारी चेतनकी।

पुष्कर अपर ऐरावत, तीतानागत जिन चरण यजौ।
पंचम मेर मंदिरगिरि राजै, तट जिनत्रय चौवीस भजौ॥
सुरसरी सुरीय सलिल पामन, रतन जटित भृङ्गार भरौ।
चंदन मिश्रित अति वासित लै, श्रीजिनवरपद पूज करौ॥पु०॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे अपरमेरु उत्तर ऐरावत भूत वर्तमान भविष्यत् जिनेभ्यो जलं॥ ६५॥

शीतल सलिल सहित घिसि चंदन, रतन कटोरी विच धरिकै।
केशरि सरस कपूर लायची, गंध विमिश्रित लै करकै॥पुष्कर०॥
अपर ऐरावत तीता नागत, जिन चरण यजौ।
पंचम मेरु मंदिरगिरि राजै, तहं जिनत्रय चौवीस यजौ॥६६॥

ॐ ह्रीं चंदनं।

अनबींधे मुक्ताफल लै करि, कनक रकाबी मांहि धरौ ।
वासुमती सुख दास कमोदक, तंदुल धवल सु थार भरौ ॥
पुष्कर० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कुसुम मनोहर सुरतरुके लै कनक रजतमय ल्याय सही ।
जाइ जुही चंपावति सेवित, जुही मालती महकि रही ॥
पुष्क० ॥ ६८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

घेवर बावर कनक थार भरि, ताजे ताजे ले सुथरे ।
तन मन दृग नाशा सुखकारी, क्षुधा निवारी मोद भरे ॥
पुष्क० ॥ ६९ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

दीप कनकमय गोघृत बाती वालि सुहाती चतुरमुखी ।
आरत करि जिन चरणकमलकी, मिथ्यातम हर होहु सुखी ॥
पुष्कर० ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

कृष्णागर कर्पूर लायची, चंदन चूरन मेलि धरैं ।
खेवत जिनपद चरण निकट भवि, कर्म काटि छिन मांहि जरै ॥
पुष्क० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

लौंग दाख बादाम सुपारी, श्रीफल झारी लै आवौ ।
श्री जिन चरनकमलके आगै, धारि तुरत शिव फल पावौ ॥
पुष्क० ॥ ७२ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।

जल चंदन आदिक वसु लै द्रवि, सुवरण थारी मांहि धरौ ।
जिन चरणांबुज पूज करौ भवि, तव निज सकल विघन टारौ ॥
पुष्कर पर ऐरावत तीतागत नागत जिन चरण यजो ।
पंचम मेरु मंदिर गिरि राजै, तह जिन त्रय चौवीस भजो ॥
ॐ ह्रीं अर्घं ।

# अथ प्रत्येक पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

नाम श्री उपशांत जिनेश हैं, शांत करता जगत महेश हैं ।
अपर पुष्कर ऐरावत भजौ, लै जलादि अतीत सु जिन यजौ ॥
ॐ ह्रीं उपशांतजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

तीर्थंकर फागुन जिन जानिये, आदि संस्थानक परमानिये ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं फागुनजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

नाम जिन पूर्वास बताइये, धर्म धारण पद जिन गाइये ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पूर्वासजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

तीर्थ सौरिक नाम कह्यो मुनी, कर्मवीर दलनवीरिय गुनी ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सौरिकजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

त्रिविध क्रम त्रिक्रम धर है महा, मोह मल्ल सु मल्लि शुभ गुण लहा ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घं ॥ ५ ॥

नाम गौरिक वैरि करम हनै, जिन तनै बहु गुण कविको भनै ।
अपर० ॐ ह्रीं गौरिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

जिनेश्वर नरसिंह बखानियै, सिंहवत निर्भय परमानियै ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नरसिंहकाय अर्घं ॥ ७ ॥

षट् सु हास्यादिक जिन परहरे, नाम श्री मृगवास लसै खरे ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं श्री मृगवासाय अर्घं ॥ ८ ॥

नाम सोमेश्वर जिनवर कह्यो, सौम भावाश्रित चित जिन लह्यौ ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमेश्वराय अर्घं ॥ ९ ॥

सुधाकर जिनवर गुण धार हैं, धर्म अमृत वर्षत सार है।
अपर० ॐ ह्रीं सुधाकरजिनाय अर्घं ॥ १० ॥
पंच निंद्रा विगत प्रमाद हर, नाम निर्मल जासु अपाय वर।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अपायजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥
त्रिबुध वंदित नाम विबाध जिन, सर्व बाधा रहित सु जातिन।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अबाधजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥
नाम संधिक श्री जिन सार है, बोधदायक शिव करतार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं संधिजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥
विघन पुज विलाशन है महा, नाम मांधाता जिनको कहा।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मांधाताय अर्घं ॥ १४ ॥
अश्व तेज जिनेश्वर नाम है, तेजवंत महासुख धाम है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अश्वतेजसे अर्घं ॥ १५ ॥
नाम विद्याधर जग सार है, वर्ण गंध स्पर्श निवार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं ॥ १६ ॥
सुलोचन सु विमोचन पापमल, भव्यजन मन आनंदकरण भल।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुलोचनजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥
देव मौन सु नाम निचीत ये, जानि षट संहनन वितीत ये।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मौनदेवाय अर्घं ॥ १८ ॥
पुण्डरीक सु जिन सुखकार है, पुण्डरीक चरण द्युति धार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घं ॥ १९ ॥
चित्रांग जिन नाम सु गाइयौ, गुण विचित्र परमपद पाइयौ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं चित्रांगजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

इन्द्रमणि जिन नाम सु गाइयौ, इन्द्रमणिसम तन द्युति पाइयौ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मणिन्द्राय अर्घ ॥ २१ ॥

सर्व काल महा जम जाल हत, सर्व कर्म कलंक सदा विगत।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वकालाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम भूरीश्वर असमीश्वरे, त्रसादिक गतिनाशक जिनवरे।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं भूरीश्वराय अर्घं ॥ २३ ॥

तीर्थंकर पुण्यांग सु अन्तमें, हम सु दृग युगपद तिनके नमैं।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पुण्यांगाय अर्घं ॥ २४ ॥

पुष्कर ऐरावत विषैं, जिन अतीत सुखदाय।
पूरण अर्घ बनाय करि, यजौ चरण गुण गाय ॥ ९४ ॥

## अथ जयमाला।

दोहा।

पंचम ऐरावत विषैं, ये अतीत जिनराय।
तिन सबकी जयमाल वर, वरनौं भक्ति सहाय ॥

ढाल—गाली एक सुनौ तुम चेतन, सुनत श्रवण सुखदाई, इस चालमे।

जय जय उपशांत जिनेश्वरस्वामीके वंदौ हौ।
जय जय फाल्गुण गुण रतनागर मेटो भव भय फंदोजी ॥

जय जय जय पूर्वांश जिनेश्वर दुरवादी मद खंडनजी।
जय जय सौरिक नाम तुम्हारो जगजन पाप विहंडनजी ॥
जय नरसिंह सिंहवत निर्भय विहरत एक विहारीजी।
जै मृगवास आस भवि पूरण महिमा अगम अपारीजी ॥

जय सोमेश्वर सौम्य भावश्रित दुष्ट करम कृत नाशीजी ।
जय जिन नाम सुधाकर स्वामी नाम न भविभव त्रासीजी ॥
जय अघामल सकल विघातक सुजस सकल विस्तारीजी ।
जय निर्बाध भवबाध सकल हनि शिवपुर कियो है विहाराजी ॥
जय संधिक जिन तिहु जगनायक, मेटो भव दुख केराजी ।
मंधाता जिन नाम तुमारो, धारो हिरदे मांहीजी ॥

जय जिन अश्वतेत तन दुति लख. कोटि भानु छिपि जाहीजी ।
वर्न गंध रस रहित सदा तन, जिन विद्याधर स्वामीजी ॥
जय दुख मोचन तिहु जग रोचन, नाम सुलोचन जानोजी ।
जय जय मौनदेव जिनस्वामी, तुम जस तिहु जग छायोजी ॥
जय जय पुंडरीक जिन देवा, सुर नर करत सु सेवाजी ।
जय जय चित्र गनी तुम गुणको, कोउ न पार लहैवाजी ॥
जय मनि इन्द्र सुरेन्द्र, धनेंद्र नमै तुम चरणाजी ।
जय जय सर्वकाल जिन स्वामी, तुम गुण हिय बिच धरणाजी ॥
जय भूरीश्वर नाम जिनेश्वर, चहुगतिके दुख टारनजी ।
जय पुण्यांग पुण्यांग नाम तुम, भवसागर उतारनजी ॥ ९६ ॥

घत्ता–दोहा ।

यह जयमाल विशाल, वरणी जिन चौवीसकी ।
क्षेत्र ऐरावत काल अतीत सु अपर सुमेरुकी ॥९७॥

---

# अथ वर्तमान जिन पूजा।

दोहा।

वर्तमान जिन पूजियै, सु गांग गेय जिनराय।
पुष्कर अपर सुमेरुगिरि, ऐरावत सुखदाय॥
ॐ ह्रीं गांगोपाय अर्घं॥ १॥

वर्तमान जिन पूजियै, श्री नलवाश सु भाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नलवाशाय अर्घं॥ २॥
वर्तमान जिन पूजियै, भीम जिनेश्वर पाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं भीमजिनाय अर्घं॥ ३॥
वर्तमान जिन पूजियै, नाम दयाधिक गाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घं॥ ४॥
वर्तमान जिन पूजियै, श्री सुभद्रजिनराय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुभद्रजिनाय अर्घं॥ ५॥
वर्तमान जिन पूजियै, स्वामिनाम जिन गाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं॥ ६॥
वर्तमान जिन पूजियै, हनक सुगुण अधिकाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं हनकजिनाय अर्घं॥ ७॥
वर्तमान जिन पूजियै, नंदिघोष युग पाय।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नंदिघोषजिनाय अर्घं॥ ८॥
वर्तमान जिन पूजियै, रूपवीर्य गुण गाय।
पुष्क० ॥ ह्रीं रूपवीर्याय अर्घं॥ ९॥

वर्तमान जिन पूजियै, वज्र नाम सुखदाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं वज्रनामाय अर्घं ॥ १० ॥
वर्तमान जिन पूजियै, सन्तोष नाम सुखदाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं सन्तोषजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, नाम सु धर्म यताय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं ॥ १२ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, जिनफनीश युग पाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं फणीशाय अर्घं ॥ १३ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, वीर चन्द्र जिनराय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं वीरचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, स्वच्छ रूक्ष गुणदाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं स्वच्छमजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, मेघानीक सुभाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं मेघानीकाय अर्घं ॥ १६ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, कोप क्षय जितराय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं कोपक्षयाय अर्घं ॥ १७ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, जिन अकाम सुखदाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं अकामजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, सन्तोषित युग पाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं संतोषिकाय अर्घं ॥ १९ ॥
वर्तमान जिन पूजियै, सत्वसैन सुध भाय ।
पुष्कः० ॥ ॐ ह्रीं सत्यसेनाय अर्घं ॥ २० ॥

वर्तमान जिन पूजिये, दयानाथ सुखदाय ।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं ॥ २१ ॥

वर्तमान जिन पूजिये, श्री क्षमांग जिनाय ।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं क्षमांगाय अर्घं ॥ २२ ॥

वर्तमान जिन पूजिये, कीर्तिनाथ जिन पाय ।

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं कीर्तिनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥

वर्तमान जिन पूजिये, श्री शुभ नाम सु भाय ।

पुष्क० ॐ ह्रीं शुभनाम जिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

पुष्कर अपर सु मेरु, ऐरावत जिनपद य गौ ।

वर्तमान जिन केर, पूर्णार्घ बनवायके ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपर ऐरावत वर्तमानजिनाय पूर्णार्घं ॥२२॥

दोहा—सब सुखकारन दुख हरन, तारणतरण जिहाज ।

पुष्कर ऐरावत अपर, वंदौ गत जिनराय ॥

## अथ जयमाला ।

एक बात सुनी है हो प्रभु, तेरी अकथ कथा, इस चालमे ।

जय जय गांगेय सु हो कि, तुम पद नमन करौ ।

जय जय नवलवास कहो कि, तुम गुन हिये धरौ ॥

जय भीम जिनेश्वर हो कि, सब सुखदायक हो ।

जय नाम दयाधिक हो, कि त्रिभुवन नायक हो ॥

जय जय सुभद्र जिन हो कि, शरण गही तेरी ।

जय स्वामिनाथ जिन हो, कि यी रहीये मेरी ।

जय हानिक जिनवर हो कि, गुण रत्नागर हो ॥

जय नंदिघोष जिन हो कि, करुणासागर हो ।
जय ह्रानिक जिनवर हो, कि गुण रत्नागर हो ॥
जय नंदघोष जिनहो कि, करुणा सागर हो ।
जय रूप वीर्य जिन हो, कि रूप लसैं अति हो ॥
जय वज्रनाभ जिन हो, कि वज्र तन धरण सही ।
जय जय सन्तोष कहो, कि तोषित भवि जियरे ॥
जय नाम सु धार्मिक हो, कि राखौ पद निवरे ।
जय जय फणिन्द्र जिन हो, कि फणप त कृत सेवा ॥
जय वीर चन्द्र जिन हो, कि तुम देवनि देवा ।
जय सुक्ष जिनेश्वर हो, कि सुक्ष गुण धारण हो ॥
जय मेघानीकी हो, सु मेघादायक हो ।
जय जय कोप क्षय हो, करम रिपु घायक हो ॥
जय जय अकाम जिन हो, वाम धन धाम तजो ।
संतोषिक स्वामी हो, तोष करि मोख भजो ॥
सत्वसेन जिनेश्वर हो, सत्व करुणाकर हो ।
जय जय नाम सु धार्मिक हो, धर्म दश भेद धरो ॥
जय सूक्ष्मसेन जिन हो, कुसुम सर वैरि खरे ।
जय जयकीर्ति जिन हो, गणाधिप प्रश्न करे ॥
जय जय सुक्षमा कर हो, क्षमादिक भेद कह्यो ।
जय नाम सुभाकर हो, कमल दृग शरण लह्यो ॥

घत्ता-दोहा ।

यह जयमाल विशाल वर, ऐरावत जिन केर ।
वर्तमान जिन जानियो, पुष्कर अपर सु मेर ॥ २५ ॥

# अथ भावी जिन पूजा।

अदोषिक नाम जिनेश्वर देव, सु आर्जव गुण धारक स्वयमेव।
अपर दिशि पुष्कर भारत जानि, जजौं जिन ऐरावत सुखदाय॥
ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

श्री विनयानंद सु आनंदकंद, सु दिति करि कोटि किये रवि मंद।
अपर- ॥ ॐ ह्रीं विनयानंदाय अर्घं ॥ ३ ॥

सु मुनि भारत जिन नाम सुगाय, चिद्रूप रूप धारण गुरकाय।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुनिभारताय अर्घं ॥ ४ ॥

जगत आल्हादकरण जिन जानि, सु इंद्रक नाम सकल गुणखांनि।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं इंद्रकाजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

सु चन्द्रकेतु जिन चन्द्र समान, सु जिन द्युति लखि लाजत शशि भान।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं चंद्रकेतुजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

सु ध्वजादित्य जिनवर महाराज, प्रकाश धर्म किये आतम काज।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ध्वजादिकाय अर्घं ॥ ७ ॥

वसुबोध सु जिनदायक वसु धार, करण मन वश कारण अविकार।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं वसुबोधाय अर्घं ॥ ८ ॥

सु मार्ग मुक्ति उपदेशक जानि, मुक्ति गत यातै नाम वखानि।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तिगताय अर्घं ॥ ९ ॥

अनंत रंग भेदक जिनराय, सु धर्मबोध गुरु गौतमगाय।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं धर्मबोधाय अर्घं ॥ १० ॥

देवांग नाम जिनराज गणीश, सुरासुर चरण धरत निज शीस।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ देवांगाय अर्घं ॥ ११ ॥

सुजिन मारीच धर्म तरु सीच, लसत केवल गत मुनिगण बीच ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ मारिच जिनाय अर्घं ॥१२॥
सु जीवन जिनवर है जगसार, करण जग जीवन भवदधि पार ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ जीवनाय ॥ अर्घं ॥ १३ ॥
जशोधर नामि महागुण राशि, कियौ शिववास करम सब नाशि ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ जशोधर जिनाय ॥अर्घं॥१४॥
सुगौतम जिनवर नाम बखानि, अमर गण सेवित चरण प्रमानि ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ गौतमाय ॥अर्घं॥१५॥
सु जिन मुनि शुद्ध नाम जसु भाय, स मुनिजन आदि बुद्धिदाय ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ मुनिशुद्धाय ॥अर्घं॥१६॥
प्रबोधक नाम तीर्थ करतार, प्रबुद्ध शुद्ध चिद्रूप निहार ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ प्रबुद्धजिनाय ॥ अर्घं ॥ १७ ॥
सदा निक टेक जिनेश्वर देव, देवदेवाधिप कृत पद सेव ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ सदानिकाय ॥ अर्घं ॥१८।
सदा चारित्रनाथ जिन सार, त्रयोदश विधि चारित्र सु धार ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ चारित्रनाथाय ॥अर्घं॥१९॥
शतानंद नाम महानंदकार, भवि प्रतिबोध करण मनहार ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं ॥ शतनंदाय ॥ अर्घं ॥ २० ॥
सु नाम तीर्थ वेदार्थक जानि, वेद वेदांग प्ररूपक मानि ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं ॥ २१ ॥
सु जिनवर सुधानीक सम नाम, सुधासम वचन प्रकाशन स्वामि ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुधानिकाय अर्घं ॥ २२ ॥

सु जोति मूर्ति जिन नाम सुगाय, सु ज्ञानज्योति करि जगत लखाय।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं जोतिमूर्तये अर्घं ॥ २३ ॥
सु केवल सहित शुद्ध चिद्रूप, सु जिन निकलंक विमल गुण कूप।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं निकलंकजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥
पुष्कर अपर सु जानि, भावी जिनवर पद यजों।
ऐरावत शुभ थान, पूरण अर्घ बनायके ॥२५॥
ॐ ह्रीं भावी अर्घं।

## अथ जयमाला।

दोहा।

पुष्कर ऐरावत विषैं, ये जिन भावी काल।
तिन सबकी जयमाल, वरनौं सुगुण विशाल ॥ ५१ ॥
सुन भविजन है, जय जय जय जिन हो अदोषिक नाम सु गाइये ॥
जय जय जिन हो, वृषभदेव सु वखानिये।
जय जय जिन हो, विनत अमरपति थुति करैं ॥
मुनि भारत हो, तुम जुग चरण हिये धरैं।
जय जय जिन हो, इन्द्रकाय नामा प्रभू ॥
जय जय जिन हो, चन्द्रकेतु गुणधर स्वयभू।
जय जय जिन हो, ध्वजादित्य सुर सार हैं ॥
जय जय जिन हो, वसुबोध सुगुण अविकार हैं।
जय जय जिन हो, सु नामुक्तिगत जानियै ॥
जय जय जिन हो, धर्मवार्द्धि सु प्रमानियै।
जय जय जिन हो, श्री देवांग जिनेश हो ॥

जय जय जिन हो, कुमारिक विगत कलेश हैं ।
जय जय जिन हो, सु जीवन जग आधार है ॥
जय जय जिन हो, जशोधर गुण भण्डार है ।
जय जय जिन हो, सु गौतम नाम विशेखिये ॥
जय जय जिन हो, विशुद्ध मुनी पग पेखिये ।
जय जय जिन हो, प्रबोध बोध कारण सही ॥
जय जय जिन हो, शिवानंद आनंदक यती ।
जय जय जिन हो, सु वादर्थ तनत्रान है ॥
जय जय जिन हो, सुधानीक सु महान हैं ।
जय जय जिन हो, सु जोग तिमूर्ति जिनवर भले ॥
जय जय जिन हो, जोति शुद्ध वसु रिपु दले ।

घत्ता-अडिल्ल ।

जय जय वधु मदहर भवि, कुंज प्रफुल्लित भान हो ।
सिद्ध वधू भरतार सुगुण हि निधान हो ॥
करुणासागर मोह तिमिरहर हो तुम्हीं ।
इयन भवदधिमांहि बांह गहिये हमी ॥
सार्द्ध द्वीप द्वय भरथैरावत जानिये ।
क्षेत्र तीर्थंकर परम पवित्र बखानिये ॥
तीतानागत वर्तमान जिन जहं भए ।
सप्तशतक विंशति, कुंज दगपति नये ॥

दोहा ।

भरतैरावत क्षेत्र सो, तीतानागत सार ।
वर्तमान जिनवर हमें, होहु मुक्ति करतार ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति सार्द्धद्वीपद्वय पूजाः सम्पूर्णम् ।

---

# अथ मनुष्य क्षेत्र समान नरक सीमंत कर ऋजु विमान मुक्ति शिला सिद्धालय पंच पैताला तिनकी पूजा ।

गीता छन्द ।

इस मनुज लोक समान, सीमंतक विमान सु ऋजु सही ।
शिला मुक्ति प्रमाण, सिद्धालय सुगुरु गौतम कही ॥
ये पंच थल पन, चारि लाख, प्रमाण जोजन जानियै ।
हां करो आह्वानन सबनको, मन प्रतीत जु आनियै ॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र समान सीमंतक नरक ऋजु विमान मुक्तिशिला सिद्धालय सर्व संस्थापनं करोमि ।

ॐ ह्रीं अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणं वार त्रयं ।

प्रथम नरक सीमंतक प्रतर सु जानियै ।
तीन शतक सु अठासी बिल परमानियै ॥
दिशा सु विदिशा मांहि एक एक है तहीं ।
तिन गति छेदन कारण जिन पूजौं सही ॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक प्रथम प्रतर सीमंतक तद्गति छेदन-काय अर्घं ।

लवणोद्धि कालोदधि उभय दिशा परी,
कुत्सित मानुष्य भोगभूमि तह है खरी ।
संख्या वसु चत्वारि कही तिनकी भलै,
तिन गति छेदन कारण जिन पूजन चलै ॥

ॐ ह्रीं लवणोदधि कालोदधि तट द्वय कुमानुष द्वीप तहतिछेदनकाय अर्घं ॥ ५६ ॥

मानुषक्षेत्र विषैं ऊपर आकाशमें,
भान चंद्रकी संख्या भाखी जासुमें ।
द्वात्रिंशति ऊपरि सत संख्या जानिये,
तिन गति छेदन काज यजन जिन ठानियै ॥

ॐ ह्रीं मानुष्यक्षेत्र समान जोतिषपटलके सूर्य चंद्र ग्रह नक्षत्र तारकादय भ्रमणशील तहुति छेदकाय जिनाय अर्घं ॥ ५७ ॥

प्रथमस्वर्ग सौधर्म विमान सु ऋजु कह्यौ,
सार्द्ध द्वीप द्वय प्रमित क्षेत्र जाको लह्यौ ।
तहां वासी सुर कल्पोद्भव सुख भूजते,
तहतिछेदन कारण जिन हम पूजते ॥

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्ग ऋजुविमान सार्द्धद्वीपद्वय समान क्षेत्र तत्रवासी सुर सुरतहुति छेदकाय जिनाय अर्घं ॥ ५८ ॥

भूमि अष्टमी सिद्ध शिलाकी है खरी,
ईषत प्राग्र भार संख्या जाकी परी ।

मध्य अष्ट जोजनकी मोटी जो कही,
श्वेत वरण मकराकृति जिन पूजौं तही ॥

ॐ ह्रीं इष्ट प्रागभार संज्ञा सिद्धशिला अष्टमी भूमि सिद्ध-क्षेत्र दर्शनस्पर्शजिनाय अर्घं ॥ ५९ ॥

समय समय प्रति सार सुरुचि दातार जो,
शिवनायक शिवकारण शिव करतार जो।
अइसे गुणके धारक सिद्ध महेश हैं,
तिनपद हम पूजत नित नित अमरेश हैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्गुण युक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६० ॥

सद सद अर्थ सुदर्शन द्वीप समान है,
सकल पदार्थ चराचर लोकन मान हैं।
अइसे गुणके धारक सिद्ध महेश हैं,
तिनके पद हम पूजत नुत अमरेश हैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन गुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६१ ॥

निर्मल वस्तु विबोधन खण्डित अति महा।
सम्यग्ज्ञान संयुक्त शर्ममय पद लहा ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान गुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६२ ॥

सकल वस्तु ज्ञायक सु पराक्रमवंत ये।
लोक शिखिरिके अग्र भाग निवसंत ये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६३ ॥

असम सूक्ष्मता सुखसागर बिच मग्न ये।
जन्म जरा मरणादिक भाव विलय ए ॥ अइसे० ॥

ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६४ ॥

सर्व सिद्ध अवगाहन दान सुदक्ष हैं ।

कूट विकट विहंडन चक्षु अलक्ष हैं ॥ अइसें० ॥

ह्रीं अवगाहनगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६५ ॥

अगुरु अलघु मिथ संगति संगति सहित ये ।

सकल निरंतर संगत कर जु साहित ये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६६ ॥

भव भव बाधा रहित सदा ये जानिये ।

अकल काल थिति भाजन गुण परमानिये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतयें अर्घं ॥ ६७ ॥

निंद्यादिक कारण हारण गुण भाव ये ।

पंच प्रकार अज्ञान भेद दुखदाय ये ॥

त्रिशति सागर उत्तम स्थिति भाषी जिकी ।

अइसे कर्म रहित पूजा कीजै तिकी ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥६८॥

दर्शन भाव विनाशन कारण है जहां ।

होत अदर्शन अष्ट भेद करिकै तहां ॥ त्रिशति० ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६९ ॥

हिंसादिक कारणके भाव निकार सही ।

वेद होत दुखकारी मुख्यपणे तही ॥ त्रिश० ॥

ॐ ह्रीं वेदनीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७० ॥

मिथ्यावादिक त्रिशति भेद सु जानिये।
इनहीके सु ममत्व हेत परमानिये ॥
बधे मोहनी कर्म सदा या जीवके।
भाषी भविजन शास्त्र विषैं जग पीवके ॥
ॐ ह्रीं मोहनीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७१ ॥
शुद्ध भाव करि सुभग आयु थिति बधति है।
अशुभ आयु करि अशुभ आयु थिति सधति है ॥ त्रिश० ॥
ॐ ह्रीं आयुकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७२ ॥
कर्म शुभाशुभ कारण करियो बांधियो।
ताके भेद तिरानैं ताहि विराधियो ॥ त्रिश० ॥
ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय अर्घं ॥ ७३ ॥
उत्तम गुण करि ऊँच गोत्र बांधे जिया।
नीचे गुण करि नीच गोत्र जानौ हिया ॥ त्रिश० ॥
ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७४ ॥
दानादिक कारज विच विघ्न करे सदा।
ता करि अन्तराय षट्विधि होवे तदा ॥ त्रिश० ॥
ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७५ ॥
सकल करम रिपु नाशि सु शिवपद जिन लह्यौ।
भव बाधा हरि सकल सिद्धि प्रापित भयौ ॥ त्रिश० ॥
ॐ ह्रीं सर्वसिद्धि प्राप्तेभ्यो सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७६ ॥
भूत भविष्यति वर्तमान त्रय कालके।
जलगत थलगत रहित सदा जग जालके ॥

ये अशरीरी सिद्ध जीव थिर थानके ।
पूजौं पद तिन तीनलोक भगवानके ॥

ॐ ह्रीं अतीतनागत वर्तमान जल थल आकाशगत सिद्धेभ्यो अर्घ ।

---

# अथ मानुषोत्तर पूजा ।

सोरठा ।

मानुषोत्तर जान, भूधर परिखाकार है ।
पर्‍यौ बेढि इस भांति, द्व्यर्घ दीप परकार ज्यौं ॥
तहं जिनमंदिर चारि, बहु दिशमें राजै सही ।
पूजौं जल फल धारि, वसुविध जिनप्रतिमा तही ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पूर्वदिशि जिनालयजिनेभ्यो अर्घ ।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर दक्षिण०, मानुषोत्तर पश्चिम०, मानुषोत्तर उत्तरदिशिजिनेभ्यो अर्घ ॥ ७७ ॥

गीता छन्द ।

इम भांति सिद्ध समूहकी करि, मन वचन तन पामना ।
संसार बाधा रहित जिन करि, करी शिवसुख वासना ॥
जो द्रव्य भाव सु कर्म वसु विधि, हैं सदा जिनकै नहीं ।
तिनकौं सु पूजन ध्यान करि, भवि होय प्रापति शिव मही ॥

इति पूर्णार्घं ।

# अथ जयमाला ।

दोहा ।

दर्शन आदि अनंत गुण, धारक सिद्ध महान ।
कर्म अनंते नाश करि, मुक्ति महल थिति ठानि ॥७९॥

पद्धडी छन्द ।

जिन अजर अमरपद लह्यौ जोर, जीतौ खिल कर्म समूह घोर ।
शुभ केवल दर्शन पूर्व युक्त, शिव सिद्ध नमौ वसु कर्म मुक्त ॥
ये विमदविगुण फुनि सगुण जानि,
ये विमल निरुज भय रहित मांन ॥ शुभ० ॥
ये विभव सुभव हत दुर्विभाव ।
विफली कृत दुर्जय कर्म भाव ॥ शुभ० ॥
ये विरस सुरस रत विरति जानि ।
ये विमति सुमति गत सुरनि मानि ॥ शुभ० ॥
सु भये मुनिगण चित नित वासकार ।
ये भव्यजीव नुद्धनहार ॥ शुभ० ॥
नरदेव महेश्वर पूज्यपाद, परिहरित दृढ़ मद विगतवाद ॥शुभ०॥
अमितामित सुवरस पानकार, विरजोमल खेद विमुक्त सार ॥शुभ०
शुभरूप अरूप अगंध जानि, परमातमरस जिन कियो पान ॥शुभ०
त्रियलोक शिखर जिनवास कीन, वचनादिक भाव विकार हीन ।
शुभ प्रतिमा कृति आकार धार, तनु बात लीन मस्तक निहार ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरसम्बन्धी जिनालयजिनेभ्यो नमः अर्घं ।

इति मानुषोत्तर पूजा संपूर्णम् ।

# अथ पुष्करार्द्ध द्वीप स्थित इक्ष्वाकार पूजा ।

दोहा ।

पुष्कर इक्ष्वाकारगिरि, दक्षिण उत्तर ठाम ।
जुग जिनै मंदिर जिन यजौ, आह्वानन करि ठाम ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर इक्ष्वाकारगिर दक्षिण उत्तर श्रीजिनालयेभ्यो नमः, अत्रावत्रावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरण ।

## अथाष्टकं ।

चाल-लावनीकी ।

सलिल विमल शीतल अति उज्वल, सुरगंगाको ल्यावो जी ।
प्रासुक परम पवित्र धार जिन, चरण समीप दिवावौ जी ॥
पुष्कर दक्षिण उत्तर गिरिवर, इक्ष्वाकार विराजै जी ।
तहं जिन मंदिर जिन प्रति पूजन, दुरित तुरित जित भाजै जी ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर इक्ष्वाकार दक्षिण उत्तर श्री जिनालयजिनेभ्यो नमः जलं ।

वामन चन्दन दाह निकंदन, कदली नन्दन गारौ जी ।
कनक कटोरी धार नीर सम, जिनपद अरचन कारौ जी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ।

मुक्ताफल अनबींधे सीधे, गोल अमोल मंगावौ जी ।
तंदुल उज्जल चन्द्रकिरण सम, जिनपद पुंज चढ़ावौ जी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

सुमन मनोहर सुरतरुके लय, कनक रजतमय ल्यावो जी ।
पारिजात मन्दार आदि जिन, चरन समीप चढ़ावो जी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।
घृत पूरित पकवान तुरतके, कंचन थारी धारो जी ।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, रोग क्षुधा निरवारो जी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।
मणिमय दीपक ल्याय कनकके, चउमुख वाती वारोजी ।
तिन गुन गान तान बहु लै लै, आरति करि अघ टारोजी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।
अगर कपूर सुगंध दसों विधि, धूप दहन विच घालोजी ।
जिन युग चरन निकट भुवि माहि, कर्म काट सब जालोजी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।
फल फासू उत्तम अति सुंदर, वरन वरनके लीनजी ।
हिय हुलसत प्रिय लागत नैननु, जिनपद पूजन कीनेजी ॥
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं फलं ।
जल फलादि वसु द्रव्यथार विच, अर्घ समारि बनावोजी ।
तन मन वचन हरख युत जिनपद, पूज परम पद पावोजी ॥६
पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ।

पुष्करार्द्ध विच दक्षिण उत्तर दिशि पर्‌यो,
इक्ष्वाकार अचल सु नाम जाको धर्‌यो ।
पंड युगम करतार जानि जिन गेह तह,
इक दुहूं दिशि जिन पूजि लहौं शिवरमणी ग्रह ॥६

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध दक्षिणदिशि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

ॐ ह्रीं इक्ष्वाकार उत्तरदिशि जिनालयजिनेभ्यो नमः अर्घं ।

अडिल्ल छन्द ।

समय समय पूरन भाव महान हैं ।
तिन शिव सुखसागर विच लीन सु थान हैं ॥
ऐसे सिद्ध समूह ध्यान मनमें धरैं ।
'कमलनयन' शिवरमनी तुरतै सो वरैं ॥ ८ ॥

कवित्त-सवैया ।

सार्द्ध द्वय द्वीप मध्य पंच मेरु राजत है ।
स्वरगमई तीर्थ न्होन नीर युत शोभते ॥
तिनहूपै चारिचारि वन बीच शोभे जिन ।
मंदिर पुनीत सुर नर मन मोहते ॥
तिनहीके नीचे गजदंत चारि चारि परे ।
जिन गेह वंदत नर पाप मल धोवते ॥
त्रिशति मिति संख्या हू बिराजै क्षेत्र नाथगिरि ।
तिनके शिर ऊपर द्रह भरे नीर शोभते ॥ १ ॥
पुनः सतर नदी सु जही क्षेत्र पंच त्रिशति है ।
रूपाचल सप्त तिस कूट तिन विशेखिये ॥
पंचपन सैती समिति, संख्या फुनि राजधानी ।
अष्टादश सहस्र और सात शत लेखिये ॥
शत सत्तर ऊपर जहां, क्षीर नीर सु समुद्र ।
है विदेह असो विद्यमान तीर्थ देखियै ॥

साठ मिति संख्या है, विभंगा सरिता महान।
असि वक्षारगिरि परवत परेखिये॥
छ्यानवै दीप नर जलध गत है कुभोग।
भूमि नाम धार, धर्महार यू गाइयौ॥
लवणार्णव कालोदधि, प्रदाय नरलोक मध्य।
पैतालीश लाख परमान, गुरु बताइयौ॥
इतनैं वर क्षेत्रगिरि सागर नदी सु दीप।
बीच अढ़ाईक जिन सजन, ग्रेह थाहयौ॥
तई भव्यजीव पूज कारकनको दहु।
शिव 'कमलनैन' वारवार शिर नाइयौ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर दक्षिण उत्तर इक्ष्वाकार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

मंगल श्री अरहंत वर, मंगल सिद्ध महंत।
तथा सूरि उवझाय वर, साधु सकल गुणवंत॥ १॥
शारद गुरु गौतम चरण, सदा सु मंगलकार।
संघ सकल मंगल करौ, दिनमें सौ सौ वार॥ २॥

इत्याशीर्वादः।

इति अढाई द्वीप पूजा सम्पूर्णम्।



## प्रशस्ति।

श्री संवत्सर वेद रस, रंध्र चंद्र पहचानि।
राज विक्रमादित्य नृप, गत वर्ष भवि जानि॥
कातिक सुदी शुभ पंचमी, कियो ग्रंथ आरंभ।
चैत्र कृष्ण तेरसि तथा, पूरन भयो निदान॥
परमित संख्या श्लोककी, नुष्टुपजाति बखानि।
तीन सहस फुनि सातसै, सत्तर ऊपरि मान॥
शहर इटावा जानियै, तासु परगने मांहि।
मैनपुरी इक ठाम है, पुरी महासुख ठांहि॥
ताकौ नृप चहूवान वर वंश, महा विख्यात।
नाम दलेल सु सिंघ जिस, राज करै बहु भांति॥
जाकै राज प्रजा सुखी, दुखी न कोऊ लोक।
अपनै अपनै घर विषै, करत सदा सुख भोग॥
जात बुंदेले वानियै, वसे महा धनवंत।
नंदगाम आदिक बहुत, साधर्मी गुणवंत॥
तिनहीमैं एक जानियै, नाम राय हरिचंद।
वैद्य कला परवीन अति, मनसुखराय सुनंद॥
तिनके सुत कुटे भरा, नाम छत्रपति सार।
तिन लघु भ्राता जानियै, कमलनैन निरधार॥
एक समैं निज छांडि पुर, गए प्रयाग मझार।
मनमैं इच्छा यह भई, कीजे देश विहार॥

तीरथराज प्रयागवर तह, श्रावक बहु लोय।
अग्गरवाले जातिवर वसै महाजन सोय॥
वीधिचंद्र नामा भले, साधर्मी इक जानि।
तिन सुत हीरामल्लजी, कीरतिवंत महान॥
तिनके सुत है लालजी, परम धर्मकी खानि।
अधिक प्रीत हमसों करैं, पूरव योग प्रमाणि॥
एक समय बैठे हुते, लाल जीत हम दोय।
उन विचार मनमें कियौ, या सुनि अचरज होय॥
सार्ध दीप द्वै पाठकी, भाषा सुगम सु ठार।
जो कीजै तौ है भली, यही शीख उर धार॥
बीच मध्य इस देशमें, सुनी मित्र कहु नाहिं।
तब हमने उनसौ कहीं, सुनौ मित्र हम बात।
इह कारज दुर्द्धर महा, होय सकै क्यों भ्रात॥
फिर उन हमसौं यों कही, जिन श्रुत आज्ञा लेहु।
जो शुभ आवै वचन वर, तौ यह काज करेहु॥
तब चिट्ठी लिखि कै धरी, जिन आगे दी सार।
श्री जिनकी आज्ञा भई, करौ काज सुखकार॥
नमस्कार कर जिनचरण, मनमें आनन्द पाय।
भाषा पाठ बनाइयौ, श्री जिन भक्ति सहाय॥
भूलचूक मात्रा वरण, हीन जानि बुध लोय॥
हांसी मत कीजौ सही, शोधन कीजो सोय॥

इति पाठ बनावनकौ कारण संपूर्णम्।

समाप्त।